

# मैथिली अकादमी, पटना महत्वपूर्ण प्रकाशन

(मूल्य रुपयाने अछि । ऊपर अछि, नीचाँ सञ्चित)

१. कथा संग्रह :	डा० अमरेश पाठक श्री मोहन भारद्वाज	७-५० १०-००
२. कृति राजकमलक :	सम्पादक प्रो० आनन्द मिश्र श्री मोहन भारद्वाज	६-०० ११-५०
३. घर देखिया :	सुभाष चन्द्र यादव	१०-०० १२ ५०
४. अतीत :	प्रो० उमानाथ झा	६-०० ७-५०
५. मैथिली कथा स्रिता :	सं० डा० मदनेश्वर मिश्र योगानन्द झा	८-०० ८-००
६. वस्तु :	श्री जीवकान्त	१०-०० ११-००
७. एकटा तैसर :	श्री राजमोहन झा	१३-०० १३-००
८. चन्द्र बिन्दु :	प्रो० मायानन्द मिश्र	१५-००
९. तोरा संग जयबो रे कुजबा :	राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'	७-००

# एकटा अकास

अकरो अकास



श्रीमती शेफालिका वर्मा

मैथिली अकादमी, पटना



# ए क टा अ का स

(कथा संग्रह)

डॉ० (प्रो०) शेफालिका वर्मा

एम० ए०, पी-एच० डी०





मैथिली अकादमी प्रकाशन सं०—१६२

प्रकाशक :

मैथिली अकादमी,

४/वी. श्रीकृष्णपुरी, पटना ८००००१

प्रथम संस्करण : नवम्बर, १९८८

प्रति : ११००

मूल्य : १०-०० (दस) टाका

मुद्रक :

श्रीजानकी प्रिंटिंग प्रेस,  
भिखनापहाड़ी, पटना-४

## विषय सूची

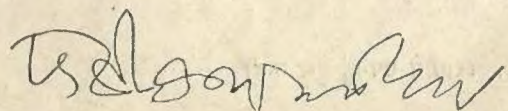
	पृ० संख्या
१. प्रवचक	१
२. करिया मेघ गोरकी बिजुरी	५
३. लहास 'बोल्डनेस' क	१६
४. प्रस्तर प्रतिमा	२३
५. कोन विश्वास	३०
६. रेत आ रेत	३६
७. एकटा आकाश	४४
८. सिसकैत अन्हार	५४
९. इन्द्रधनुष अखण्ड	६५
१०. सपनाक लहास	७१
११. हारल जुआरी	८१
१२. पराधीन सपनेहुं सुख नाही	८४



## प्रस्ताविकी

डॉ० श्रीमती शेफालिका वर्मा लिखित कथा-संग्रह "एकटा अकास" प्रकाशित करैत हम अतिशय हर्षक अनुभव करैत छी। आशा करैत छी जे शर-चन्द्रक परम्परामे नारी समस्या पर आधारित प्रस्तुत कृति मैथिली कथा-यात्रामे एक मीलस्तम्भ सिद्ध होयत। अत्यन्त संवेदनशील ओ सप्राण भाषामे विदुषी लेखिका नारीक चौमुखी समस्याकेँ उद्घाटित करैत समाजक मानसिकताकेँ शिक-क्षोरबाक समर्थ प्रयास कयलनि अछि। लेखिका मे अद्भुत लेखकीय क्षमता छनि जाहिसँ हुनका मैथिलीक महादेवी कहब यथोचित थिक।

महिला लेखनक दिशामे "एकटा अकास" अकादमीक एक ठोस उपलब्धि थिक। नवयुग नारी जागरणक थीक। पुरुष प्रधान समाजमे नारीकेँ ओ सम्मान नहि भेटैत छैक जकर ओ अधिकारिणी थिकी। कथामे जतेक गुण रहबाक चाही से सभ हिनकामे छनि। कथाक सार्थकता कथामे अछि। विभिन्न कोणसँ समस्याकेँ खँखिदेखार करैत एतय एहन स्वस्थ समाजक दिशा निर्दिष्ट कयल गेल अछि जाहि-ठाम नारीक अस्मिता, सम्मान ओ अधिकारक सुरक्षाक गारंटी हो विदुषी लेखिकामे रचनाधर्मिताक जे सबल सम्भावना अछि ताहिसँ हम आशा करैत छी जे ओ अपन नव-नव कृतिसँ मैथिली कथा-साहित्यक भण्डारकेँ भरती। विश्वास अछि जे मैथिलीक प्रेमी पाठक वर्ग अकादमीक एहि नव प्रकाशनक हृदयसँ स्वागत करताए।



२१ दिसम्बर १९८८

अध्यक्ष

## प्रकाशिकी

"मधुकर, एहि विश्व विपिनक, हम सरल शेफालिका छी ?

खसि पड़ल आकाससँ, जे विकच तारकमालिका छी ??"

—महाकवि आरसी एहि पाँतीक अनुरूप यथानाम डा० शेफालिका वर्मा आधुनिक मैथिली साहित्यक एक कीर्तिस्तम्भ थिकी। १९६६ ई० मे मैथिली एकेडेमी, इलाहाबादसँ हुनक एक संस्मरण 'स्मृति-रेखा' नामसँ प्रकाशित भेल छल जे हुनका मैथिलीमे प्रतिष्ठित कयलक। एहि रेखाचित्रक एक अंशमे ओ स्वतः कहैत छथि : "बाबू कोन नाम राखि देलनि-शेफाली ? रात्रिक शीतलतामे खिली-खिली उठैत छी आ सूर्यक प्रथम रश्मिक तापक आशंकसँ काँपि-काँपि धरती पर खसि पड़ैत छी।" आधुनिक अधिकार चेतना आ शाश्वत नारीक श्रद्धा-समर्पणक सन्धि-रेखापर ठाढ़ि नवयुगक दस्तक देत डा० वर्मा आई सरिपो मैथिलीक महादेवी बनि साहित्यक कथा, कविता, संस्मरण, रेखाचित्र आदि कतोक विधामे अपन कीर्ति-चन्द्रिका पसारि सहृदय हृदयपर नगजकाँ गाड़ि गेली अछि। हिनकामे सतरंगी कल्पनाक इन्द्रधनुष, मयूरपंखी भावनाक उल्लास-विलास, अनुभूतिक सरस उद्गार आ अभिव्यक्तिक सहज प्रवाह देखिते बर्नैछ। सहजतामे सम्मोहनक सौरभ, जमीनपर रंगीन अकासक परिकल्पना निस्सीममे ससीमकेँ बाह्यबाक अभिष्ट लालसा ओ एहि हाड़-काठक लोककेँ वेदना आ स्नेहक अमृतदानसँ देवता बना देबाक लेल ई अपस्यांत छथि। यथार्थक कठोर धरतीपर वेदनामती, अनुभूतिमयी आ अमृतमयी नारीक समतामय कोमल प्रतिमूर्ति एहि विदुषी लेखिकाक कथासंग्रह 'एकटा अकास' प्रकाशित करैत अकादमी गौरवान्वित भ' रहल अछि। महिला-लेखनक प्रोत्साहन-प्रवर्धनक दिशामे ई एक अपन कीर्तिमान थिक।

'एकटा अकास' मुख्यतः नवयुगक नारीक कथा थिक। नारी-जागरण आ स्वातन्त्र्यक एहि युगमे प्रस्तुत संकलन किछु नव-नव आयाम आ बिम्बक संग किछु ओहने व्यथा-कथा कहैत अछि जे बहुत पूर्व मैथिली शरण गुप्त कहि गेल छथि :

अबला जीवन हाय ? तुम्हारी यही कहानी

आँचल में है दूध आँखों में पानी।"

महादेवी साहित्यक ध्वनि आ इंगितिकेँ लेखिका कदाचित् आत्मसात् कयने छथि जाहिसँ हुनक अधिकांश कथा करूणासँ संस्रित ओ वेदनासँ रसाद्र अछि। यथार्थक तानी-भरनीमे रोमानियतक अपूर्व कसीदाकारी अछि। अधिकांश



कथा नारीक केन्द्रपर ध्रुवित अछि जकर वृत्तमे अपन समाजक समग्र कटु-तिवत परिदृश्य मूर्तिमान अछि। 'एकटा अकास' अलोच्य संकलनक एक मर्मस्पृक प्रतिनिधि कथा थिक। 'नामकदेश ग्रहणे' पि नाममात्र-ग्रहणम्—भ्यायसं लेखिकाक सर्वप्रिय कथाक आधारपर पोथीक नामकरण 'एकटा अकास' भेल अछि। वस्तुतः एहि ठाम सहृदय पाठककेँ कथाक असली कुँजी भेटि जाइत छनि :

“नारी स्वयं एकटा बुझीअलि थिक आ स्वयं उत्तरी। प्रश्न बुझनाइ तँ कठिन अछिए,

उत्तर कम दुष्कर नहि। हमर हृदय कोनो चोटक पीड़ासँ अछि, मुदा हम स्वयं नहि कहि सकैत छी जे ई केहन चोट थिक। ई असह्य चोट मोनकेँ 'विह्वलक' देने अछि। हृदयमे एकटा हलचल अछि। ई ओतवे सरल अछि, जतवा गूढ़। सरल एतेक जेना सोनजूहीक कली, आ गूढ़ ओतवे जेना ओहि कलीसँ चोट लागि गेल हो आ व्यथासँ तन-प्राण भरि गेल हो.....।’

नारी हृदयाकशक सभसँ पैघ प्रश्न थिक : “स्त्रीक अकास ओकर घरक छत होइछ जे मात्र पति द’ सकैछ.....।” की नवयुगकेँ अरधर्तक ? जिनगी जीवाक एक कला थिक। एकर किछु मार्मिक क्षण अनमोल होइछ बिसरल नहि जा सकैए। प्रातक लाली आ साँझक गुलाबी क्षणिक होइतो संसारक शाश्वत सम्पदा थिक। लेखिकाक जिनगीक विश्लेषण देखिते बनैछ : “जिनगी क्षणसँ बनैत अछि वर्षसँ नहि। अवधि जीवन नहि थोक, मुदा जे क्षण जीवि जाइत छी, ओएह जिनगी थिक।”.....“जाहि दिन मानव वृद्धि जायत जे रूपो मानवक छाहरि थिक ताहि दिन सत्य स्नेहक गूढ़ता वृद्धि जायत। एहि सृष्टिक निर्माणमे सभसँ सहयोगी किछु थिक तँ नारीक रूप। एहि रूपसँ आकर्षित भ’ एहि मुखमय सृष्टिक निर्माण होइछ। आइ साहित्य आ काव्यक आकर्षण नारिये थिक।”

छायावादी आ रहस्यवादी परिवेशमे बुनल कुमारि कन्याक सतरंगी सपनाक रंगमहल आ विवाहिताक शोषण-उत्पीड़न, प्रताड़न-परित्याग, लाँछल-प्रदूषण, धर्षण-पुनर्लगनक मर्मन्तिक व्यथा-कथा एतय मोनप्राणकेँ क्षिकझोरि सहृदयक हृदयकेँ मोमजकाँ पघिला दैत अछि। ‘यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता,’— ई सभ आइ पुरुषप्रधान समाजमे नारीक लेल फूसियोअल बनि गेल अछि। माय-बहिन, ननदि-भाउज, पत्नी-दुलहिन आदिक भूमिकामे आइ कतोक अहल्या-द्रौपदी

सीता-शकुन्तला वा कुन्ती-गाँधारी जिनगीक तबधल रेतपर फकसियारि काटि रहल छथि। दू वृन् नोरे हुनक जिनगी अथवा अथवा हत्या-आत्मघाते हुनक नियति थिक। वास्तव्यक व्यामोहमे शाश्वत नारी विवाहकेँ जिनगीक कल्पना, पतिकेँ प्राणधार ओ माय बनि घर-गृहस्ती सजेनाइये अपन जीवनसर्वस्व मानि लेलक। वास्तव्य आ दाम्पत्यक मोह नारीकेँ विवाहक लगाममे गछारि भनसाघरमे कैदक’ देलक। आजुक नारीक मोहभंग भ’ चुकल अछि। ओ आब परम्परामे खुटेसल-बान्हल कोठीक मरुआजकाँ लेबल-मूनल नहि रहती। बेरी समाज, अन्हार लोक, रूग्ण मानसिकतामे जकड़ल बगुलाभगत आ पाथरक देवताकेँ सृष्टिक विधात्री आ पुरुषक जन्मदायी आधुनिक नारी आइ सहन नहि करती। युगक ई उद्घोष संकलनमे यत्र-तत्र छिड़िआयल अछि। नवयुग भावविह्वलता आ कलात्मकता स्थान पर अपन एहि क्रान्तिक दीपशिखा आ प्रगतिक अग्रदूतसँ अपेक्षा रखैत अछि ओ आरौ प्रखरतर आ उग्रतर भावभूमिपर उतरथि जत’ विद्रोहक वाहीक संग-संग व्यंग्य-बाणक घरगर चोट सेहो हो। ओना कथा ओ कथ्य हुनू दृष्टि ए ई संकलन सर्वथा पठनीय ओ संग्रहणीय अछि। शिल्प आ संवेदनामे ई बेजोड़ अछि। सहजला, उन्मुक्ता, रचना-निष्ठता ओ रागात्मकता एकर विशेषता थिक।

भाषा कदाचित् जहलक ओ देवार नहि थिक जाहि ठामक कैदीकेँ साहित्यक आरपारक संसार नहि सूझैक। तेँ यदि किनको एहिमे यदा-कदा हिन्दीआइन गन्ह लगनि तँ ओ लगले मछाइनमे बदलि जयतनि। कारण कथामे देशकोशक सौरभ भरल अछि ओ जे बाहरी शब्द आयल से पचि गेल। धड़फड़मे छपाइक जे गड़बड़ भेल अछि ताहि लेल अपन प्रेमी पाठकक समक्ष खाली दण्डप्राणायामे टा कयल जा सकैछ। किमधिकं सुधीसहृदयेपु ?

**देवकान्त झा**

निदेशक-सह-सचिव



## आत्माभिव्यक्ति

'स्वयं' के उपगृहीत करवासे पहिलहि 'स्वयं' के हेराय नहि दी...इ आसका कलनहुँ-कलनहुँ एकटा विकल आ विभ्रंखल मानसिक स्थिति मे घकेलि बँत अछि। आ एहि क्षणमे अपन जिनगीमे भटकल बीतल अनगिनत चेहरा-मोहरा आ संवाद-परिसंवादक बरियाती हमर चेतनाक तप्त घरातल पर बरखाक मेघ जकाँ झूकि जाइछ। एतेक लग-एतेक लग जे एकटा हल्लुक प्रयाससे हम ओकरा छुबि सकैत छी। भावावेशमे हमर आँगुर स्वतः मेघ दिसि उठैछ। मुदा स्पर्शातुर आँगुर आ झुकल मेघक मध्य तइयो एकटा निमंम दूरी रहि जाइछ। हम वस्तुतः एहि दूरीकेँ मिटएबाक प्रयासमे छी। हम अपन आत्मा, कल्पना आ विचारकेँ बेचबा लेल नहि चाहैत छी मुदा अर्पण करैत छी अपन पाठक-पाठिकागणकेँ। हुनक अन्तर्मनक तार हमर कल्पनासे झँकृत भ' जाय, हम सफल भ' जायब ?

एहिमे संग्रहीत प्रायः सभ कथा १९६३ सेँ १९७० धरि पत्रिका सभमे प्रकाशित भ' चुकल अछि। अनुभूतिक सत्यता यदि कथा उपन्यासक मेरुदंड अछि तँ एहि कथा सभक पाती पाती एकटा अकासक नीचा समाजमे साँस ल' रहल अछि। भाषा आ शब्दक सीमासे फराक भ' सह संवेद्य बनि अनुभूत करवाक आग्रह !

"दी ह्यूमन हाटं हेज हिड्डन ट्रेजसं,  
इन सीक्रेट, केप्ट, इन सायलेन्स सील्ड—  
वी थाउट्स, दी होप्स, दी ड्रीम्स, दी प्लेजर्स,  
हूज चार्ल्स वेयर ब्रोकेन, इफ रीभील्ड,"

## पयंचक

'एक मुट्ठी मिले माइजी.....'

अपन ओछाओन पर कछमछाइट हमर कानमे गुँजि गेल। गरमीक तप्त दुपहरिया, पसेनासेँ लथपथ लोक बेचैन। हम एकसरे घरमे छलहुँ, थाकल पड़ल। 'मिले माइजी'...ओह...ई कोन समय थिक मिखमंगा सभक अबैक ? कतेक बेर बजैत छी सप्त-हमे एक दिन रवि क' आयल कर ! मुदा ई सभ बुझ' बला अछि ? एक आदमी अलगसेँ रहबाक वाही भीख देवाक लेल। भोर भेलैक नै कि 'मिले माइजी...' स्कूल, कॉलेज, ऑफिस भोरका टाइम कतेक व्यस्त रहैत अछि। सुईयाक नोकपर घरक सभ प्राणी दीड़ैत रहैत अछि; तखनो 'मिले माइजी...' हम रोटी बेलि रहल छी। हाथ चिक्कससेँ आँटल-आँटल...पिकी स्कूल लेल किताब सरिया रहल अछि, लीली केश थकरैत छलि—ई अपने दादी बनबैत... आखिर ककरा कही एक मुट्ठी भीख द' अबहीक। स्वरकेँ कने देवा हम पिकी-लीलीकेँ बजबैत छी।

'मम्मी अहूँ हद करैत छी। स्कूलक अवेर भ' रहल अछि.....' धनभनाइतो एक बनिन जा क' कहियो काल भीख द' अबैछ। ओना अपने त' हम सदिकाल मिखमंगा सभ लेल प्रस्तुते रहैत छी।

लाख बजैत छी, झुकैत छी मुदा बाप-मायक देल संस्कारो अछि जे याचक खाली हाथ घुरय नहि। ओना एकरो पाछाँ एकटा इतिहास अछि। बच्चेमे एकटा कोनो सिनेमा देखने रही जे ब्रह्मा, विष्णु, महेश भिखारीक भेष ल' भीख माँग' जायल रहथि। ओ गीत... 'बड़े प्यार से मिलना सबसे दुनियामें इन्सान रे, क्या जाने किस देश में बाबा मिल जाए भगवान रे.....' आ ई जखन मोन पड़ैत अछि त' नस-नसमे रक्त-प्रवाह तीव्र होब' लगैत अछि। ओएह मिखमंगा भगवान त' नै थिक ? दीड़ैत छी भीख देब' लेल। रातुक रोटी ढेर पड़ल अछि। सोचैत छी एकटा बासिये रोटी द' देत छियैक, आ जहिना रोटी दैत छियैक की रोटी चढा क' फेकि दैत अछि।

'बासि रोटी नै खाइत छी.....' आ एकटा तीव्र अवमानना आ अहंकारमे दूबल ओ मिखमंगा बलि जाइत अछि। भगवानक साक्षात्कार लेल दूबल



हमर मोन तित्त भ' जाइत अछि । मनुख की आसानीसँ मनुख भ' सकैत अछि ? गाछ-बीरीछ आसानीसँ गाछ-बीरीछ बनि जाइत अछि, पशु-पक्षी आसानी सँ पशु-पक्षी भ' जाइत अछि, मुदा मनुखकेँ मनुख बनबा लेल बड़ दुःख, बड़ पीड़ा आ कालक ठेरो प्रभंजन सह' पड़ैत छैक । आइ देशकेँ ई कृत्रिम मिखमंगा सभ आओर मिखमंगा बना देत । एक बेर एहिना हम बजने छलहुँ 'हो हाथ-पयर छह तखन भोख किएक मँगैत छह । काज करह आ खा !'

'काज के' दैत अछि माइजी—?' दीन स्वरमे बाजल । हम आन बाड़ीमे दुष्टि दीड़लहुँ—दूभि आ घास एक दोसराक आलिंगन पाशमे चिर निद्राक प्रतीक्षा क' रहल छल । 'हे, ई बारीक घास-दूभि सभ उखाड़ि दहक । एकटा टाका हम द' देब' ।'

'माइजी! भीख देवाक अछि त' दिअ', उपदेश लेबा लेल हम नै आयल छी ।' हमरो जिद्द लागि गेल—'

'नै, तो' जाह—हाथ-पयर अछैत भीख मँगैत अछि कोड़िया ।' ओ शानसँ उठि चलि गेल । मुदा, तकर बाद हमर मोन छटपट कर' लागल । ओह ! चुपचाप भीख द' दितिएक । व्यर्थ हम बहस कर' लगलहुँ । खाली हाथ चलि गेल ? कहीं भगवाने नै होथि । आ सिनेमाक सीन मोन पड़ि गेल जे भगवानो त' हूष्ट-पुष्ट योगीक वेशमे भीख माँग' आयल छलाह । अनर्थ त' नै क' देलहुँ ? हे भगवान—ई की ? मुदा नै—ई योगी त' नै छल । हूष्ट-पुष्ट त' अवश्य छल मुदा फटलाहा बेल-बाँट पहिरने छल—तखन मोन शान्त भेल—'

नै भगवान बेल-बाँट पहिरि कहियो परीक्षा नहि लेताह । आखिर हुनको अपन मर्यादा छनि, अपन सीमा छनि—'

'माइजी...एक मुट्ठी...आब स्वरो दीन भ' गेल । हमर संस्कारी मोन तुरन्त भीख देवा लेल विदा भ' गेल । एकटा कृशकाय दीन-हीन कारी क्षामर-नांगर मिखमंगा बैसाखी लेने घामे-पसीने अपस्यांत भेल । ओकर अवस्था ओकरा अपाहिज देखि अपना पर आक्रोश उठि गेल ! कखनो दौड़ि क' जाइत छी आ कखनो... ओकर दशापर आँखि हमर वेदनासँ व्यथित भ' उठल । कनेक 'चाउरल' गेलौं देवाक लेल । सवृण नयनसँ चाउर दिस तकैत बाजल- 'माइजी ! अन्न ल' हम की करब ? हमरा के अछि जे किछु बनाओत । पैसा किछु द' दिअ...कौन फुटहा खा' पानि पीबि लेब' । आ हमरा छातीमे ज्वारि उठल...आह...'

...आह बासियो रौटी घरमे नै अछि । दुपहरियामे चौका बरतन नहा'-धो' बैसल अछि । हुनकर जेबोमे हाथ देलहुँ । एकटा अठबत्ती भेटल । एक क्षण कमकि गेलौं, फेर दीड़ि ओकरा द' देलियेक...। कृतज्ञतासँ ओकर नयन नमित भ' उठल । ठेरो आशीर्वाद दैत ओ चलि गेल ।

हमरा मोनमे आइ आंतरिक खुशी भेल । आजुक भीख जेना सार्थक भ' गेल । सुपात्रक हाथे, अवश्ये भगवान हेताह । विकलांग अपाहिजेमे त' भगवान रहैत छथि । हम बड़ खुशीमे छलहुँ । भीख देवाक चाही मुदा अपाहिज विकलांग केँ...मुदा कंकटा विकलांग अबैत अछि ? चाही त' ठेर किछु मुदा होइत की अछि ।

आब ओछाओन पर गरमी चानन भ' गेल । सरिपहुँ मोनक तापसँ तन तप्त होइत अछि । आ हम त' विशेष रूपेँ । मोनमे जे किछु भावना अबैत अछि ओकर प्रभाव तन पर तुरन्त आवि जाइत अछि । खुशीक लहर मोनमे उठैत अछि...हमर समस्त देह मन बीणा सन बाजि उठैत अछि, आ उदासीक कनिको स्फुरण होइत अछि त' हमर चेहरा सुखा जाइछ । जराह देह भ' जाइत अछि । एहि लेल ई हरदम हकताह—अहाँ क्षणे रूष्टा क्षणे तुष्टा...सत्ते मोनक परिधि सँ भिन्न आदमी तनकेँ कोना रखैत अछि, हम बुझि नहि सकैत छी । कहताह— 'अहाँ के' जे भीक बात कहैत अछि, तुरत ओकरा पर विश्वास क' लैत छियेक । ओ अहाँक विश्वासकेँ खंडित करैत अछि । हमरा हँसी आवि जाइछ । ठीके त' हमर विश्वासक रक्षा नहि कयल जाइछ । सभक विश्वास हमरा लग अछि । ओ हमर विश्वासक खंडन करैत अछि । ओकर विश्वास हमरा लग अखंड-अक्षुण्ण रहैत अछि । खडनक दर्द हम सहने छी आ जनैत छी । जे हमरा स्नेह देलक ओकरे लेन किछु नै क' सकलहुँ जे हमरा घृणा देलक ओकरो चोट नहि पहुँचा सकलहुँ । सभ दुःख, सभ सुख, सभ कष्ट, सभ आनन्द कलेजाक भीतर पोसि रखलहुँ । ककरो सँ मुँह खोलि किछु कहि नहि सकलहुँ । एहन स्वभाव ल' जन्म किएक लेलहुँ ।

दोसर दिन सभकेँ यथा स्थान विदा क' महिला समितिक मीटिंगमे जयबा लेल तैयार भेलहुँ...एक मुट्ठी...माइजी... ई सभ स्वरकेँ अभ्यस्त हमर कान भ' गेल छल । एक मुट्ठी भीख द' जल्दी-जल्दी घर बन्द क' रिक्सापर विदा भेलहुँ । मोनमे फेर अबैत कालक 'एक मुट्ठी...माइजी...घुमरैत रहल । कालहुक देल भीखक आह्वाक पुनरावृत्ति भ' गेल । अपरिमित संतोषसँ करेजा चाकर भ' गेल । हुँह ! ई त' ओहिना कहैत छथि जे अहाँकेँ सभ ठकि लैत अछि । मोन आवि जाइत



अच्छि—हमर देओर पहिल बेर बम्बई गेल रहथि। स्टेशनसँ बाहर ओहिना भेटलनि एकटा अर्धौ ल' चारि गोटे ठाढ़... 'बाबू जलाते के लिए लकड़ी नहीं है, कुछ पैसा बाबू... संवेदनशील भाबुक हृदय हुनकर ! तुरत जेबीसँ पाँच टाका निकालि द' देलथिन। कनिये आगू जा क' देखैत छथि जे अर्धौ फेकल अच्छि आ पाँचो गोटेय (चारिटा अर्धौ पकेई वाला आ एकटा मुरदा बनल आदमी) पैसाक बँटवारा क' रहल अच्छि... हम सब बड़ हैसल छलहुँ। ओ बाबू ! ई दुनियाँ छियैक दुनियाँ। एहिठाम बड़ प्रपंच अच्छि... बड़ धोखा अच्छि... लोक कतेक तरहसँ एक दोसरके ठकबाक प्रयत्न करैत अच्छि ? केओ कोनो भेषमे केओ कोनो भेषमे...

सोचैत-सोचैत हमरा हँसी लागि गेल। एकाएक रिक्शा अटकासँ रुकि गेल। 'की भेलौक ही ?'

'चेन उतरि गेल माइजी.....'

'ओह !' हम चैनक साँस लेलहुँ। बगलमे एकटा चाह पानक दोकान छलैक। अनायास हमर नजर ओहि दिस उठि गेल। आ हम चौकि गेलहुँ। काल्हक नाडर भिखमंगा खूब बढ़िया कपड़ा पहिरने चाह पीवि रहल छल। मोड़लका टाँग सोझ... एकदम सोझ छल..... की हमर आँखि धोखा खाइत अच्छि। हम आँखि मलि-मलि देख' लगलहुँ। कृशकाय स्यामल किशोर... आँखिमे दीनता नहि विद्रूपता भरल छलैक... अपन संगीके हँसि-हँसि कहि रहल छल—'रौ मीखो भँगवाक कला होइत छैक। सभक बसक बात नहि थिकैक—करुणा दीनताक साकार प्रतिमा बनि जौ... देखही... कतेक अठन्ती टस-टस डिब्बा मे.....' आ हमर आँखि विस्फारित भ' गेल। लागल जेना हमर सभटा संतोष सभटा खुशी हमरे मुँह दूसि रहल हो।.....



## करिया मेघ गोरकी बिजुरी

'अहाँक हाथक बनल चाहमे कतेक मिठास अच्छि'—

'जतेक अहाँक बातमे अच्छि।'

प्राती—ठोरसँ कप लगौने मोहक दृष्टिसँ तकैत बाजल गगन—आब अपन नय कविता नहि सुनायब ?

अवश्य सुनायब—आ प्रातीक अवर जेना अन्तरक सभटा भाव छिरिआय

बेलक—

हम केकरो वेदना छी

स्मितक छाहरि मे पड़ि-पड़ि

जोहै छी अपन मुस्की।

नोर चुअल आखि सँ

चान भ' गेल खुन्डी-खुन्डी .....

अहाँ बड़ सेन्टीमेन्टल छी प्राती। नामो अच्छि ने ?

हँ गगन, हम ओएह प्राती छी जे उषा कालसँ पहिने लोकक ठोरक सिंगार बनि जाइत अच्छि।

'एकटा बात पूछू प्राती ?'

'पूछू—घरती दिसि तकैत बजलीह प्राती।

'अहाँ हमरासँ एतेक दूर-दूर किएक रहै छी ? कतेक खुलि क' हमरा सभ मिलैत छी मुदा भितर खे'। हम ओहिसँ बढ़ि क' अहाँमे किछु खोजैत छी।'

प्राती भीतरे-भीतर काँपि गेलीह। ओकर करेज ओकरा मुँहमे आव' लागलैक।

ओ मुँहमे आँवरक खुट खीसि अपन कानव रोक' लगलीह।



‘प्राती की बात अछि । अहाँ ऊपरसँ एतेक प्रसन्न रहितो भीतरसँ एतेक निराश ।’

‘गगन, हमरा सभ की एकटा नीक मित्र नहि छी ? हमर मित्रतामे कोन कमी आयल ?’

‘मित्र—हूँ’ हूँ—अभ्यर्थनाक स्वरें गगन बाजल—मित्रताक कमी-प्राती, बेश मित्र सेही मुदा असली मित्रमे सेही एक दोसराक हृदय खूजल पोथी होइछ—जखने मित्रतामे किछु लाथ कयलहुँ, तखने दुराव आवि जाइत अछि ।’

‘हम अहाँके कोना बुझावी गगन ?’

बेश गगन, आव जाइत छी । माय एकसरे बाट तकैत हँतीह ।’

—आ प्राती उत्तरक अपेक्षा बिना केने ओहिठामसँ चलि अयलिह ।

गगन बहुत व्यथित भ’ गेल । ओकरा दिमागमे एके शब्द नचैत छल—

‘प्राती’ ।

ओकरा लागैक जेना ओ स्वयंसे प्रेम करवाक वादो ककरो आरसँ प्रेम करैत अछि ? एहन प्रेम जाहिमे जीवन छल, जाहिमे आशाक प्रकाश-किरण छल । ओ छोट-छीन प्रेम ओकर मोनकेँ शान्ति दैत छल, आशा आ विश्वास दैत छल ।

‘बेटा आइ बड़ उदास देखैत छियौक ?’

‘कहाँ माय—’ गगन चाँकि हँसि बैसल जेनो केओ खलिया वरतन चूलिह पर चढ़ा देने होइक ।

‘जो घूषि फिरि आ । की घरमे बैसल छे ?’

‘ठोरना ।’—तौकरवाकेँ वज्रवैत गगन बाजल—देखही तँ हम रुमाल आ फौन्टेन कत’ राखि देने छिएक ?

भोरेसँ नहि भेटैत अछि ।’

‘बेटा, आव तोरामे बिसरवाक आवत आवि गेल छौक । तेँ आव तोरा

कनियाक आवश्यकता छौक जे सभ चीज सरिआय क’ रखतीक ।’

गगन किछु नहि बाजल । ओ एकटा मूढ मुस्कानक संग घरसँ बाहर निकलि गेल । बाहर आवि सोच’ लागल आव कत’ जाय ?

पयर स्वतः प्रातीक घर दिसि बढ़ि गेलैक । नहि जानि गगन केँ की भ’ गेल छलैक ? ओकर मोन-प्राणमे खाली प्राती-प्राती समायल रहैक । नेनपनाक स्नेह आव प्रेममे बदलल जाइत छलैक । मुदा प्राती ? गगन ओकर अन्तरक थाह नहि बुझि सकल छल । प्रातीक पिता डिप्टी इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूलस छलथिन । गगनक पिता सेही कोनो पैघ ऑफिसर रहथिन । दुनू एके शहरमे । तखन प्राती आ गगन दुनू बेदरे रहय । दुनूमे बड़ स्नेह छल । मुदा ३-४ वरखक बाद प्रातीक पिताक बदली दोसर शहरमे भ’ गेलनि । आ आठ वरखक बाद जखन भेंट भेलैक तेँ दुनूक पिता स्वर्गवासी भ’ गेल छलाह । आ गगन डाक्टरीपास क’ आव हाउस-सर्जन छल ।

अपन विचारमे ऊब-डूब करैत गगन प्राती ओत’ पहुँचल । प्रातीक माए बाहरमे ठाढ़ि छलीह—

‘की हौ, गगन आवह-आवह । माए नीके छथुन कीने ?’ हँ काकी, सभ नीके अछि । प्रातीकेँ नहि देखैत छियैक ।’

‘प्राती ? ओकरा नहि जानि की भ’ गेल छैक ? एम्हर २-३ दिनसँ गुमसुम बैसल रहैत अछि । हँसनाइ, बजनाइ सभटा बन्द । एहन कतौ लोक होअय ।

‘प्राती !—ने प्राती ! एम्हर आ, देखही गगन आयल छौक ।’ गगनक नाम सुनितहि प्रातीक छाती जोर-जोरसँ काँपय लगलैक ।

‘प्राती—प्राती—चिकरैत गगन स्वयं ओकर कोठलीमे गेल ।’

‘बाप रे ! प्राती, एहिकोनमे आहाँ की क’ रहल छी ? चलू बाहर होइ ।’

—काकी हमरा सभ कनिटा भगवती स्थान तक घूम’ जाइ ?

‘जाहू ने, एहिमे पुछवाक कोन बात ! प्रातीयोक मोन बहलि जेतैक ।’

पयरे-पयरे प्राती आ गगन भगवती स्थान दिसि चलल जाइत छलथि । प्राती मोने-मोन डरैत छलीह जे रस्तामे फेर ने कोनो प्रसंग गगन उठाए दिए । मुदा,



दुनू गोटे गुमसुझ भगवती स्थान पहुँचि गेलथ ।

प्राती—भगवती स्थान हमरा लेल ओ खजाना अछि जाहि ठाम हम जे मँगलहुँ से भेटल । एहि मन्दिरमे अहाँ एकटा अमृतपूर्व ज्योति लगै छी जे कि हमर मोन-प्राणकेँ ज्योतिर्मय क' देलक । विश्वास राखू प्राती, आव हमर समस्त व्यक्तित्वमे अहाँक आलोक पसरि गेल अछि । लगैछ अहाँ नहि रहितहुँ तँ किछु नहि रहितैक । ई पृथ्वी नहि रहितैक, ई आकाश नहि रहितैक । चान-तारा किछु नहि रहितैक । फूलमे पराग नहि रहितैक, पात-पातमे जीवन नहि । भगवानक सप्पत प्राती । ई सब किछु अहाँक अस्तित्वसँ अछि ।

प्राती किछु नहि बजलीह । लागल जे गगनक मुँहसँ बहरायल शब्द सपनाक धुँआयल मेघक ओ परदा अछि जे हवाक ऊँपर लहराय रहल अछि । ओहिपर बैसल प्राती जेना कोनो अलौकिक दिशामे चलल जाइत होअथ । अचक्के जेना प्रातीकेँ कोनो झटका लगलैक । जेना केओ उड़ैत मेघसँ ओकरा घरती दिसि धकेलि देने होइक । आ प्रातीक सौंसे देह थर-थर काँपय लगलैक । ओकरा हृदयमे कखनो एकटा सुखद अनुभूति घुलि जाइत छलैक तँ कखनो एकटा अपराधक भावना । कखनो किनार दिसि विहँसत बढैत छल तँ कखनो मझधारमे डूबि जयवाक भयसँ डेरायल । गगन आस्तेसँ बाजल—

‘प्राती’ !

‘हूँ S S S हूँ’—प्राती आँखि मुनने बजलाह ।

‘अहाँ कतेक नीक लगैत छी प्राती ? नहि जानि अहाँक अन्तरमे कत’सँ एतेक शान्ति आ सन्तोषक सागर उमड़ि गेल अछि ? अहाँ लग हमरा लगैछ जे हम रंग आ आलोकक घाटीमे भटकल रहल छी, इन्द्रधनुषक झूलापर झलि रहल छी । अहाँक प्रेमसँ पैघ संपदा हमरा लेल किछु नहि ।’ गगनक मुँहसँ बहरायल एक-एक आखर मौघक घाटमे हिलकोर मारैत अनुभूतिक झीलमे डूबि जाइत छल । झीलक लहरि पुलकित उन्मादसँ जलतरंग बजबैत छल ? मुदा तुरतै प्रातीक आँखिमे एकटा नुकायल-नुकायल डर काँपय लगलैक ?

‘अहाँ किछु नहि बजैत छी, प्राती, किएक प्राती ?’—भाव विह्वल स्वर बाजल गगन ।

‘हमरा किछु बजवाक अवसर कत’ द’ रहल छी—अहाँ ?’

‘नहि, नहि आव हम अहाँकेँ किछु बजवाक समय नहि देब । काल्हि अहाँ हमरा ओत’ चलब ने माएसँ भेंट करवा लेल ?’—हलसित गगन बाजल ।

‘चलब’—आत्मविस्मृतिक स्वप्नमे बजलीह प्राती ।

‘माँ, अहाँकेँ एकटा बात मोन अछि ?’

‘कोन बात रे ? बाज ने हमरोसँ नुकबैत छें ?’

‘माए तो कहने छलीह ने । तों जे पसिन्न करबें हम ओकरे सँ तोहर विआह करबौक ।’—घखाइत, लजाइत कहलक गगन ।

‘हूँ—हूँ अवश्य बेटा, हमरा खूब मोन अछि । माने तों कोनो लड़की पसिन्न केने छें ? बेटा, हमरा एकटा पुतहुक काज अछि, मुघड़ पुतहु, बस ।

के धिकौक ओ लड़की ?’

‘माए, हम काल्हि ओकरा नेने अयबौक ।’

आ गगनक माएक मोन प्रसन्नताक सागरमे डूबि गेल, बेटा राजी तँ भेल ।

दोसर दिन भरि रास्ता प्राती पूछैत रहलीह आइ कोन एहन बात अछि जे एतेक उमंग सँ हमरा नेने जा रहल छी ?’

‘अहाँ ओहिठाम चलु प्राती तखन बुझबैक ।’ प्रातीक करेज कोनो अदृश्य आशाकासँ कंपित छल । गगन ओकरा बाहर ओसरापर पायाक अड़मे ठाढ़ क’ भीतर जाय, माएक कानमे कहलक—‘माए पुतहु एली ?’

‘कत’ ? कत’ नुकेलीह ?’ आ ओ दीड़ले ओसारा पर चलि गेलीह कि प्राती केँ समझ देखि थकथकाय गेलीह । मुदा पुनः ओएह उत्साहसँ बजलीह—‘प्राती बेटा, आ अपना बाँहिमे प्रातीकेँ ल’ गगनक माए भाव-विभोर भ’ गेलीह । प्राती चकित ठाढ़ । ओ बुझि नहि सकल जे चाची एना अनुगत रूपेँ किएक प्रेम दर्शा रहल छलीह । गगन केवाड़ लग ठाढ़ अपन माथ कुड़िआबैत छल आ कनखीसँ प्रातीकेँ देखि विहसि रहल छल ।

आब भीतरो जाय देबही कि बाहरे ठाढ़ रखबही ?—गगन बाजल ।

‘अरे हूँ, हूँ,—मुदा कनेक सोचि माए पुनः बजलीह—



‘नहि-नहि एना नहि, कनिया जका पहिने प्रातीक मुँह मीठ करेबक तखन जाय देबेक ।’

‘कनिया—’आखरसें प्राती एक डेग पाछा हटि गेल । ओकरा लगलैक जेना चारू कात बन्सूकक गोली फटाफट छूटि रहल होइक ।

भयंकर भूचाले आवि गेल हो, घरक दीवार, छत सभटा धूम’ लागल हो ।’

‘हूँ—प्राती; माए अहाँके पोतहु बनाब’ चाहैत अछि ।—गगनक बात सुनि प्रातीक लगलैक जेना केओ लोहाक छड़ धिपाकेँ दागि देने होइक । प्राती एक आँखिसें गगनके देखलक जाहिठाम अगाध प्रेम छलकि रहल छल ? प्रातीक चेहरापर जेना कोनो विरडो उठि गेलैक । बरबस ओकर आँखि भरि अयलैक । नकारात्मक मुद्रामे पहिने ओ अपन मुड़ी डोलाय देलक फेर बाजलि—नहि, नहि ओ कहियो नहि होयत ।’

‘प्राती ?’ गगन विस्मित ।

मुदा प्राती चोट्टे ओहिठामसें पड़ायलि । एक क्षण तँ गगन अवाक् रहल । माए हत बुद्धि रहि गेलीह । मुदा गगन प्रातीक पाछा दौड़ल । ‘प्राती-ठाढ़ि रहू-प्राती-ठाढ़ि रहू—’ बताह जकाँ चीकरैत दौड़ैत रहल गगन ।

‘गगन बाबू, घूरि जाउ हम अहाँक योग्य नहि छी—भगैत बजलीह प्राती । ‘आब घुरब असंभव अछि, प्राती ठाढ़ि रहू ! ठाढ़ि रहू ! चीकरैत गगन बाजल—एकाएक प्रातीक पयर एकटा बड़का पायरसें लागि गेलैक आ ओही ठाम खसि पड़ल । एकटा चित्कार प्रातीक मुँहसें निकलल आ प्राती अचेत भ’ गेल । ‘प्राती-प्राती अघोर स्वरे बाजल गगन—अहाँके की भ’ गेल प्राती ?’

प्रातीक माथ फुटि गेल छल आ शोणितक धार बहि रहल छल ? गगन जल्दी एम्हर ओम्हर ताकि एकटा रिक्शा बजौलक आ अस्पताल ल’ गेल । ‘एमरजेन्सी वार्डक’ बाहर गगन बेचेनीसँ एम्हर ओम्हर घुमैत छल । नर्स बहरायल ।

‘सिस्टर ! केहेन मोन छैक मरीजक ?’

‘डाक्टर—साहेब भीतर आऊ ।’

गगन भीतर गेल । प्रातीक भरि माथपट्टी बान्हल छल मुँह पर पीड़ा आ अवसावक चिन्ह । गगन आँखि तीति गेल ।

‘ओह कतेक चोट आयल होयत—प्रातीक हाथ अपना हाथमे लैत गगन बाजल ।

‘हूँ’—डाक्टर साहेब—‘एकटा आर दुःखक बात’—

‘की’—उत्सुकता आ चिन्ता से गगन मुड़ी उठौलक ।

डाक्टर-साहेब—‘अहाँक पत्नीक ‘एबॉर्शन’ भय गेल ।

‘की ? एबॉर्शन ? नर्स—जोरसें चित्कार क’ उठल गगन । फट्ट द’ ओकर हाथ प्रातीक हाथसें खसि पड़लैक ।

नर्स ओकरा धैर्यक बात दू टा कहि बाहर चलि गेल । गगन फाटल—फाटल आँखिसें प्रातीक मुख देख’ लगलैक ।—एकदम निरीह बालिका सन चेहरा जाहि पर एखनो सीता सन पवित्रता झलकि रहल छल । की ओएह प्राती छी ! माए बन’ बाली ! एकटा कुमारि माए ! गगन के लागल जेना ओकर चारूकात ठाढ़ महलक दीवाल सभ ढहि-ढहि खसि रहल हो । जेना मूसलाधार वृष्टिसें गगनक नाक कोसीक चढ़ैत बाढ़िमे डूबि रहल हो । आ गगन बड़ जोरसें भागल ओहिठामसें । ओकर माथ केबाड़क पाटसें भिड़ि गेल ओ छर-छर शोणित बह’ लागल । मुदा कोनो तरहेँ भागल । रहि-रहि ओकर आँखिक आगू प्रातीक चेहरा नाचि उठैक । कलकिनी प्राती—नारीक नाम पर कोढ़—आ सोझे भगवती स्थान जाय भगवतीक पयर पर खसि पड़ल—माँ ई की कयलहुँ ? हमर जीवन अन्हार कय देलहुँ माँ ? मुदा भगवतीक ठोर पर ओएह एकटा शांत आ दृढ़ मुस्कान छल । कनिक काल धरि ओ भगवतीक सौम्य मुँह बिसि एकटक तकैत रहल फेर बुदबुदायल—‘हमरा क्षमा क’ दिअ’ माँ ।

माए पूछलनि—‘बेटा कनिया कहाँ गेली ?’

‘मरि-गेल—कटु स्वरे बजैत गगन अपना कोठरीमे जा केबाड़ बन्द क’ छेलक । जखन प्रातीकेँ होश आयल तँ नर्स सभ बात कहलक—माए बनब हँसि ठट्टा नहि छियेक ? खैर धीरज राखू ।—गगनक नाम सुनितहि प्रातीक चेहरा उज्जर भ’ गेलैक । ठोर स्याह भ’ गेलैक । आ ओकरा अपन चारू कात



अन्हार लाग' लगलैक। ओकर मस्तिष्क नाना प्रकारक ताना-बाना बुन' लगलैक—जिनगी की अछि? एहिमे कत' रंग अछि कत' रस अछि? खाली रेत-रेत, प्यासे-प्यास।—आ जेना प्रातीक कंठ सुखा गेलैक। ओ एकटा पियासल बिड़ जकाँ हँसय लागल। ओकर अन्तरक गहीरई कोनोभाव विकल व्यथित भ' क' हाथ पयर पटक' लगलैक।—पानि-पानि-पानि कतहु नहि। खाली रेत—सूखल मैलछाह।—आ ओ विवश भ' क' पड़ि रहल। एकटा बोझिल प्राण नाशक झुनझुनी ओकर सौंसे देहमे पसरि गेलैक। ओ नहि बुझैत छल कि ओ की चाहैत छल? ओ बस एतबे बुझैत छलीह कि ओकर जीवनमे अभाव अछि, तृष्णा अछि, घृटन अछि। आ ई भावना छैनी जकाँ ओकरा प्रहार करैत छल। ओकर उपचेतनामे एकटा द्वन्द्व मचल छल। आब ओकर जीवनसँ गगन बहुत दूर चलि गेल से प्राती बुझैत छलीह—आब ओकर जीवनमे रंगीन राति नहि छल। इज्जतक चांदनी नहि छल मुदा, आगि बरसाबैवाला प्रचंड सूर्य आकाश पर चढ़ि रहल छल। रौद कोइक दाग जकाँ घर आगिनक दीवार पर बड़का-बड़का दाग बनाय रहल छल। एहि अकाशक प्रकाशमे जीवनक सभटा कुरूपता उजागर भ' गेल छल।

भिनसरबा भेल जाइत छलैक आ गगन भरि राति आराम कुर्सी पर पड़ल-पड़ल सोचैत रहि गेल। ओहि निस्तब्ध वातावरणमे एकटा घद भरल स्वर गगनक कानसँ ठकरायल—'मोरा मन मनहि रहि हे ऊधो, मोरा मन मनहि रहि।' गगन चौंकि उठल। के गबैछ?—'ओह माँ! प्राती गाबि रहल अछि।—'सोचि ओ अवश जकाँ माथ पाछाँ कयलक कि पुनः जेना चौंकि पड़ल—प्राती—प्राती नागिन प्राती आ ओकर नस-नस जेना ऐँठ गेलैक। ओ भागल माए लग—'माए माए बंद कर ३ प्राती बन्द कर माए भगवानक वास्ते। माए आश्चर्यमे पड़ि गेलीह। ओ पुत्रक केशमे हाथ दैत बजलीह—'बेटा की छैक जे प्रातीक नामसँ एना कर' लगैत छै? कतेक दिन भ' गेल मुदा तौ अपन आंगक दुबार अपने वस्त्र कय देन छै।

'माए—रुद्ध कंठे बाजल—गगन।'

'बेटा एकटा बात पुछियोक? प्राती ओहि दिन किएक भागि गेल छलीक?

'माए ओकरा बिसरि जो माए' बिसरि जो।'

'अँय हमरा कहैत छै बिसरि जाय छल। मुदा तू किएक नहि ओकरा बिसरैत छै?—माएक स्वर भरपूर गेलैक।—बेटा, हम बुझैत छियोक जे तू प्रातीक बिना नहि रहि सकैत छै।'

'माए भगवानक लेल ओकर नाम बेर-बेर नहि ले।'

'की बात छै जे तौ एकाएक ओकरासँ घृणा कर' लगलै?'

'माए ओ एहि घरके कोनो खुशी नहि द' सकैत अछि।'

'से की? ओ एहि घरक पुतहु नहि बनि सकैछ?

'नहि माए नहि तौ नहि मुनि सकै छै जे ओ कतेक नीच अछि? माए डाक्टर कहलक जे ओ माँ बन' वाली छल।'

'आब माए तौही कह जे एहि पवित्र घरमे कोनो कलंकित स्थान भ' सकैत छैक?'

तोरा सन देवीक छाहरिमे कोनो पतिताक अंनलासँ कुलमे दाग नहि लागत?—बुझैत गगनकें गर बाजि गेलैक, आँखिसँ तोर बहय लगलैक। माए चुचाप ओहिठामसँ उठि गेलीह।

गगन, एहिठाम की क' रहल छह? चल 'धूम' छल।—अचक्के गगनक अभिन्न मित्र सतीश पहुँच गेल। नहि ही! सतीश। एही ठाम बैसह। कती जयबाक इच्छा नहि अछि। मूड आँफ अछि।

'अच्छा मूड के की भ' गेल छह। नहि जानि इ ब्रेन डिपार्टमेंट ठीक ऐन मौकापर 'मूड' किएक 'ऑफ' क' दैत छैक। शायद 'एलेक्सीसीटी डिपार्टमेंट'क हवा लागल जा' रहल छैक—सकीतुक बाजल सतीश—अच्छा आव सुनाबह अपन प्रातीक हालचाल।'

'दोस्त ओकर नाम हमरा लग नहि लएह।'

'अँय की?' सतीशकें लगलैक जेना साँपक फतपर ओकर पयर अचक्के पड़ि गेल हो।

'हँ दोस्त हँ—ओकर नामसँ तोहू घृणा कर' लगबहक। ओ माए बन' वाली छलीह माए। बिन बापक बच्चाक माए, कुमारि माए। निमिष मात्र



‘लेल सतीशके लगलैक जेना कोनो अजगरक मुँहमे ओ चलल जाइत अछि । मुदा तुरते आन स्वाभाविक गृहकानक संग बाजल—‘बड़ बेश, ई गुनिते हमरा तोरेसँ घृणा भ’ गेल । तोरे सँ ।

‘की’ ?—‘वकित भ’ गेल गगन ।

‘गगन, मरियम सेहो कुमारि माए छलीह, कुंती सेहो—’

‘ओहि पतिताक तुलना ओहि पवित्र आत्मा सभसँ नहि करहक ।’

‘कतेक दुःखक बात अछि गगन जे तँ प्रातीसँ प्रेम करैत छह ।’

हमरा कहियो ओकरासँ प्रेम छल मुदा आव नहि । झूठ, अगर तोहर प्रेम सत्य रहित’ तँ एहन भयानक कालमे ओकरा असगर नहि छोड़ि दितहक । एखन ओकरा तोहर सहाराक आवश्यकता छलैक । प्रेम छाउरक ढेरी नहि थिकैक जे तेज हवामे उड़ि जाय । तँ प्रेम केँ की बुझैत छहक ? प्रेम हमरा अछि अपना माएसँ जे आइ मरल छथि मुदा हम तइयो हुनकासँ गप्प क’ लैत छी । प्रेम हृदयक निधि थिक गगन । तँ की प्रेमक अर्थ बुझवहक ?

प्रेमक अर्थ ई तँ नहि अछि जे एकटा कुमारि माएकेँ गरमे बाहि ली ?

ई तोरा के कहलक जे ओ बिन बापक अछि । ओहि वच्चाक बाप के ? ओ तोरे जकाँ पुरुष हैत जे बेचारीकेँ वच्चा तँ द’ देलकैक मुदा बाप बनवा काल मुँह छीपि लेलकैक । वा नहि तँ बेचारी ई कलयुगिया संसारमे कोनो बलात्कारक शिकार भेल होइ ? एकटा नीक घरमे नीक लड़कीकेँ तँ सम अपनाव’ लेल तैयार भ’ जाइत छैक ? मुदा प्रेमक कसीटी इएह थीक जे ओ ठोकरायल लड़कीकेँ गरक हार बना’ लेअय । ओहि कलंककेँ अपना प्रेमक आवरणमे नुकाय लेअय ।—

गगन किछु नहि बाजल तँ सतीश फेर बाजि उठल—‘आ सभ सँ नीक कुकुर-बिलाड़ि । हम जखन कोनो पशुकेँ देखैत छी तँ ओकरा आँखिमे एकेटा भाव रहैछ—‘मनुष्यक प्रति व्यंग्य । ओहि मानव लेल जे अपना चाख्कात विष-व्यवहारक जाल टांगि अढ़ क’ लेने अछि । जहाँ कोनो परीक्षाक काल आवय भट द’ अढ़ क’ ली ।’

‘मानवक बनाओल विष व्यवहार हमरा सभकेँ एकटा वैधानिक सीमा भे रखैत अछि ताकि हम अन्याय नहि करी, गलत रास्ता नहि अपनाबी । गगन, एहि वैधानिक सीमाक कारण कतेक अन्याय, अत्याचार कल अछि से देखिए रहल छह’ । एहि सीमाक कारण तँ आर उच्छृंखलता बढ़ि गेल अछि । जकरे परिणाम आइ बेचारी प्रातीकेँ—गगनक हृदयमे जेना कोनो कसक उठलैक । ओ दुनू हाथ माथ पर द’ हिचुकय लागल—‘प्लीज सतीश, हमरा असगर छोड़ि देह कनिटा । ओह ।’

सतीश ओहिठामसँ चुपचाप उठि चलि आयल । गगन चुपचाप एकसरे बैसल रहल । ओकर मस्तिष्कमे सतीशक वाक्य गुँजि रहल छल—‘अगर तोरा प्रातीसँ प्रेम रहित’ तँ ओकर कलंक केँ तँ अपना प्रेमक आवरणमे नुका लितह ।’—आ तखन ओकर मानसमे एकटा घंटी बाज’ लगैक—ई की ओकरा प्रातीसँ प्रेम नहि अछि ? ओकर भीतर करेजमे जेना कोनो मरोड़ उठलैक—यदि ओकरा प्रेम नहि छैक तँ ओ आइयो किएक प्राती लेल विकल अछि ? प्रातीकेँ ओ एखन धरि मोनसँ किएक नहि हटाय सकल ? प्राती तँ ओकर जीवनक प्रथम प्रेम अछि । जे मानव मनक सभसँ पैघ सम्पत्ति होइत छैक । प्रातीक प्रेम तँ ओकर सर्वस्व अछि—मुदा की प्राती ओकरा धोखा नहि देलक ? किएक हमरा अपन निकट आव’ देलक ? जखन ओकरा बुझल छलैक जे ओ जबैघ सभ्तानक माए बन’ वाली अछि तँ किएक ने अपन स्थिति साफ-साफ हमरा कहलक ? मुदा यदि प्राती धोखे देतीह तँ ठीक समय पर जखन ओकरा बहुरिया कहलक ओ किएक पड़ा गेलीह ।—हम अहाँक योग्य नहि छी गगन बाबू, पुरि जाउ—रहि रहि ई चित्कार ओकर हृदयकेँ क्षत करैत छल । गगनक विचार एहिना ओहिना भटकैत रहल ।

एखन धरि गगनक माए जागल छलीह । गगन कलबसँ नहि आयल अछि । रातुक एक बजैत छल । एकाएक केबाड़ लग आहट सुनि माए बीइनीह ।—‘माँ तो जगले छँ ।’ लड़ खड़ाइत गगन आवि रहल छल । ओकरा उपमनाइत देखि माए भरि पाँजक’ पकड़ि लेलक की भेलौ बेटा ?

गगनक मुँहसँ अबैत दुर्गन्धसँ माय बुझि गेलीह जे गगन की क’ आवि रहल छल । ओकरा हृदयमे जेना विरहो उठि गेल ।



‘छी: छी: शराब पीने छह ?’

‘है माय...है खूब शराब...जायब कत’ प्राती चलि गेल अरे-अरे बिगड़ नहि प्रातीसँ नीक तँ शराब अछि जे दुःख पैत नै अछि, दुःख लैत अछि।’ बेहूदा कहाँ के माए तड़क धापड़ गगनक गाजपर संगाय देलथिन। गगनक जागू तारा नाचि गेल। ‘चट्ट द’ घरती पर बैसि रहल आ रद पर रद कर’ लागल। माए बड़ धीरजसँ ओकर माय धुआय, कपड़ा बदलबाय, सुतय गेलीह।

भोरे बड़ अवेरमे गगनक नोन्न टूटल। ओ रातुक बात जेना समटा चलचित्र जकाँ ओकरा लग नाचि उठल। ओ लाजसँ काठ भ’ गेल। ओह देवी तुल्य माए—

‘बेटा एना बताह जकाँ किएक करैत छह तों ?’

‘माए हमर हृदयक चाह कोना मिझाएत ?’

‘एकहि दिनमे शायद ठीक भ’ जायत।’

‘ई चाह कहियो नै जेतो बेटा।’

‘तखन हम की करी ?’

‘हमर विपत्ति सुनबह ?’

‘बाज माए तोहूँ बाज।’

‘प्रातीसँ ब्याह कय ले।’

‘नहि ई कोना हयत ? ओ पतिता अछि।’

‘अछि ते’ एहि पृथ्वीपर रहवाली हमरे तोरे जकाँ एकटा कमजोर मानव जकरा जीवनक कोनो भूल भटकाय देलकैक।

‘मुदा माए.....’

‘बेटा, ओ पतिता अछि मुदा एकटा मानव अछि। भूल मानवसँ होइत अछि, ओकर भूलकेँ सुधारबाक चाही, दुस्कारबाक नहि चाही। प्रेम मानव

केँ देवता बना दैत छैक। तोहर सिनेह सत्य हेतोक तँ प्राती गंगाजल सन पवित्र रहि जेतोक। यदि तो’ प्रातीकेँ छोड़ि देबहीक तँ नहि जानि प्राती एहन कतेक जड़की कोनो सहारा नहि पाबि आत्महत्या क’ लैत अछि आ नहि तँ बेइया कोठाक सिंगार बनेत अछि। तोहि सोचही एकटा स्त्री अगर बेइया भ’ जाइछ तँ साँप बनि कतेक पुरुषकेँ डेसि लैत अछि। एकटा नारी यदि विपाकत भ’ जाय तँ कतेक दूर घरि ओकर विष पसरि जाइ’छ। तोहर बुधियारी एहीमे छोक जे ओकर देहसँ ई विष चूसि लहीं—’

‘माए—एखन घरि हम अन्हारमे छलहुँ आब एहि इजोतकेँ हम अपना भाग्य रेखामे भरि लेब। प्राती हमर अछि हमर। गंगाजल सन पवित्र, पुरीत। माएक आँखिसँ खुशीक नोर बह्य लागल। ओ चुपचाप ओहिठामसँ चलि गेलीह। भावावेशमे गगन प्रातीक फोटो बाँक्ससँ निकालि बाजय लागल— ‘प्राती, मानव देवता नहि अछि मात्र एकटा मानव होइछ। गलती प्रत्येक मानवसँ होइत अछि। एकटा गलतीक दण्ड यदि भरि जिनगी भेटैत रहैक तँ मानव हेवान भ’ जायत। प्राती, अहाँ जरूर ककरो वासनाक शिकार भ’ गेल छी। नहि तँ अहाँ सीता आ मरियम जकाँ पवित्र छी। महान छी। भगवतीक सन्पत प्राती! अहाँक समाजमे ओएह स्थान भेटत जे एकटा उच्च कुल बधुक होइ’छ। जे एकटा पतिव्रता साध्वी पत्नीक होइछ। चाँदमे ग्रहण लगैत छैक तबामि लोक ओकरा चाने कहैत छैक।’—गगनक आनन पर कतेको रंग मबलि रहल छलैक। जेना बरसा कालमे मेघक कातमे कतौ घानी रंग बिखरि जाइ’छ कतौ जाल रंग, कतौ नील। ओकर हृदयक स्पन्दन संगीतक गुंजन बनि ओकर जाकृति पर छिरिया गेलैक। आ ओहि मधुर वातावरणमे ओ प्रातीक फोटो हाथमे नेने दौड़ि गेलैक प्रातीक घर दिसि नव पुलक, नव उन्माद, नव स्पन्दनक संगे। आ दोसरे क्षण गगनक दुनू हाथमे प्रातीक मुँह छल। गगन बाँकि प्रातीक आँखिमे देखलक—जे दिनक प्रकाशमे ओ कोनो नक्षत्र जगमगाय रहल अछि ? ओ मोतीक पानिसँ धुआयल मोट-माट आँखि तकैत। आँखिक पारदर्शी गहिरामे संसार भरिक कोमलता समेटने केँ ओकरा दिसि ताकि रहल अछि ? ई केहेन मानसरोवर अछि जकर तगल नीलिमा मे भावनाक पवित्र मोती मिलिमाय रहल छैक।



आ एकाएक प्राचीक ओंछिमे नीर छलकि जायल। गगन अपन चारु दिसि तकलक—अन्हारे-अन्हार आ अन्हारक ओहि असीम, अनन्त, अज्ञात प्रदेशमे खाली प्राचीक सीमन्त रेखा प्रकाशक किरण जकाँ जगमगाय रहल अछि। क्षितिजक एक छोरसँ दोसर छोर घरि जा' रहल अछि आ भटकन बटोहीकेँ बाट देखा रहल अछि।



## लहास 'बोल्डनेस'क

संगी पारिजात,

आकाशमे घुमइल मेघमाला आइ अहाँक स्मृति हमर अन्तर प्रकोष्ठकेँ सजल क' देलक।

सोचैत छी जे किछु नहि सोचल जेतैक त' ठीक छल, किछु नहि चाहल जेतैक त' ठीक छल। मुदा आब बड़ अबेर भ' गेल !

अहाँ सोचैत होयब जे अहाँक उपासना बड़ खुश अछि। निर्वन्ध जिनगी स्वतंत्रताक ऊमिल लहरिपर तरंगित ! अहीं सभक बनाओल साहसिकता हमरा एतेक प्रज्वलित क' देलक। ओ साहसक प्रतिफल छल जे हम अपन 'बाबूजी' लग भूँह खोलि सकलहुँ।

आ दोसर दिन अपना सभ कॉलेजमे कतेक 'फुल ऑफ स्पिरिट' छलहुँ ! लगैत छल एवरेस्टक ऊँचाइ पर चढ़ि गेल छी। 'इंगलिश चैनल'केँ हँसैत-हँसैत पार क' गेल छी।

'ऑफ पीरीयडक ओ क्षण मोन पड़ैछ जखन हमरासभ फूलक झुरमुटमे बैसि कतेक 'प्लान' बनबैत छलहुँ ! कतेक त्तरहसँ सोचैत छलहुँ जे लड़कीमे बोल्डनेस एबाक चाही। ई की जे माए-बाप जकर हाथमे डोरी पकड़ा देलक; भिकल भेड़-बकरी लकाँ गिरइ वन्हने चलू पति सेवा लेल ? मोन अछि पारिजात हमरासभ कतेक जोरसँ अट्टहास करैत छलहुँ। अट्टहासक 'बोल्डनेस' देखि क्षितिज कापि जाइत छल। अपनासभ बहस करैत-करैत इतिहासक पन्ना पर दौड़ि जाइत छलहुँ जे कोना संयोगिता बापक नहि चाहला पर पृथ्वीराजकेँ अपन पति चुनलनि, कोना कृष्ण यक्षिणीकेँ हरण केलथि, कोना द्रौपदी अर्जुनकेँ चुनलनि.....।

सते पारिजात, ई सभ बात ओहि समयमे कतेक यथार्थ लगैत छल। एहि समाजक प्रति एकटा विद्रोह जनम लेने छल। खाली एतबे होइत छल जे नारी अपना हौक्य, स्वयंकेँ अबला नहि बुझथि। अहाँ जनिने छी जे एहि काज लेल पतिव्रता साहसिक पग हमहीं उठौलहुँ। माए बापक विरुद्ध, सामाजिक मर्यादाक विरुद्ध, पहिल नारा हमहीं अपन घरमे लगैलहुँ।



एहि नारा लगयबामे खाली बिद्रोहेक भावना नहि छल पारो; हमर अंतरमे एकटा लालसा सेहो मुह उठा रहल छल जे हमर जीवन-संगी हमरे सन पढ़ल लिखल योग्य हो। आ ई कोनो अनुचित उद्यम लालसा नहि छल जकर पूर्ति नहि भ' सकैत छल।

ई नहि जे शेली, कीट्स, प्रसाद, महादेवी, मीर, गालिबक संसारसँ बड़ दूर फेका जाय आ तखनहि हम ई असंभावित व्यवहार अपन बाबूजीक संग कयलहुँ।

आइ हम स्थानीय कॉलेजमे प्रोफेसर छी। पढ़वाक लालसा त' पूर्ण भ' गेल मुदा दोसर लालसा त' कहिया नहि सारामे सोन्हिया गेल। जँ रहियो गेल अछि ओ लालसा, तँ ओहिसँ की होमय जायबला अछि। जीवनक वत्तीस वसन्त आवि पतझड़ बनि गेल। हमरा सभ आब की सोची? जिनगीक कतेक दिन शेष रहि गेल अछि! नीक कमाइत छी, नीक खाइत छी। पहिने जकाँ गरीब बापक बेटी नहि छी।

गलती तँ कतहु हमरे संग अछि। हमर ओहि गरीबीक संग, जे हमर नहि, हमर बापक छल। हम दूनु गोटे एक्के पथक पथिक छी। पारो, दिव्याक मोन अछि? कर्नलक बेटी, बाप पैसा उझलि क' डाक्टर घर ल' अनने छलैक। आ पारो, सीपीक मोन अछि की? माय—बाप दुनू कॉलेजक प्रिंसिपल। सीपीक वियाह पंद्रह हजार टाका दय इन्जीनियर लड़कासँ भेल। आ सरिपहुँ एहि सभसँ इन्जीनियर डाक्टर तँ कात जाय, जे मामूली आइ० ए०, बी० ए० छथि हुनको डाक दस हजार सँ कम नहि छनि। हमरा तँ आक्रोश उठैछ ओहि लड़की सभ पर जे टाका गनव' वलाक व्यहता भेलीह। ओ सभ मीलि जँ एकबेर 'बोल्ड' भ' अपन पति पर रोव जमावथि जे अहाँकेँ हमरा ऊपर किछु बजबाक-तमसेबाक अधिकार नहि अछि। कारण हमर बाबू जी आहाँकेँ टाका द' कीनि अनने छथि, तँ एहिसँ शनैः शनैः पतिक मानसिक दीर्बल्य ज्वालामुखीक रूप धारण करत आ ओ अपन परिवार सँ रूढ़िवादी विचार धाराकेँ हटेबामे समर्थ होयताह। मुदा दोसरकेँ बात छोड़ू।

आइ हमर बाबूजी एतेक पैसा कत'सँ आनताह जे हमरा कोनो पढ़ल-लिखल लड़का स्वीकार करत। आओर हमर पढ़ाइ-लिखाइ हमरा लेल अभिशाप भ' गेल। आन पेट काटि मात्र-अभिलाषाक पूर्ति आ हमर अदक्य आकांक्षासँ अभिभूत भ' बाबूजी कहुना हमरा पढ़बैत रहलाह। आ ई पढ़ेनाइ हुनका बड़

महग पढ़ि गेलनि। हम एतेक पढ़ि गेलहुँ जे कम पढ़ल-लिखलक संग वियाह केनाइ उचित नहि लागल। आ ताहि कारण हम सतीश—कोइलाक बिजनेस कर'बला मैट्रिकुलेटक संग वियाह करब, हम बाबूजीक समक्ष 'बोल्डली' नामंजूर क' देलहुँ। ताहि कारणे बाबूजी हमरा राति दिन गंजनि करैत रहलाह। हम सभ सहैत गेलहुँ, मुदा की क' सकैत छलहुँ?

आब हम विस्मृतिक खिड़की खोलबा लेल नहि चाहैत छी पारो, मुदा अन्तरक कोनो कोनसँ जेना एकटा स्वर अबैछ जे हम गलत बाट धयने छलहुँ, एम भटक गेल छलहुँ। ओहि समय हमरा ओना नहि करबाक चाही। सतीश बाबूक विषयमे हमरा किछु नहि बजबाक चाहैत छल। आखिर हम गरीब बापक बेटी छलहुँ! हमरामे आ दिव्या, सीपीमे तँ अन्तर होयबाक चाही, ओह! ओहि कालक ई हमर सभक सामूहिक खुशी छल जे हमरा भटकयबामे सफल भ' गेल। बोष नहि तँ हमर अछि, ने अहाँकेँ, ने संगी सभक। ओत' आयु एहन छल जे खुशीक हल्लुक-हल्लुक कतेक सपनाक फूल तोड़ि दैलक। मुदा पारो ओ सत्य नहि छल। सत्य त' आब अछि। ओहि दिन हमरा सभ जतेक खुश छलहुँ आइ हम एकसरे ओहिसँ कतेक गुणा बेसी दुःखी छी।

अहाँ एतवे बुझू पारो जे अहाँक उपासना जे सतरंगी ताना-बाना बनीने छलीह, समटा छिन्न-भिन्न भ' गेलनि। आइ धरि हम सिनेह नामक कोनो भावना सँ अभिभूत नहि भेलहुँ। सिनेह मानवकेँ मेघक ऊँचाई धरि ल' जाइछ आ पातालक गहीँरई मे सेहो फेकि दैछ। मुदा किछु प्राणी एहनो अछि पारो जे ने त' मार्गक अछि आने नरकक। दूनु लोकक तमसिन्धुमे डूबल रहैछ। ओ ककरो सिनेह भडि करैछ। ओकर जिनगीमे खाली एकटा शून्य, एकटा रिक्तता एकटा प्यास रहैछ। आ हम ओएह पियासल आत्मा छी पारो!

आब हमर सभक कॉलेज लाइफ कहियो धुरि नहि सकैछ पारो। मुदा, एनाबा जरूर कहब जे सभ लड़कीकेँ एक समान नहि सोचबाक चाही; आजुक युग आ पुरान युगमे बड़ अन्तर अछि। सभ लड़की द्रौपदी आ संयोगिताक विषयमे किएक सोचतीह? आजुक समाज पैसाक दास अछि। लड़कीक पसिन्न-नापसिन्न कोन बात?

सत पारो नारी बिना पुरुषक अर्पणीन अछि। स्त्री कहियो स्वाधीन नहि रहि सकैछ। ओकरा लग पास पत्नीत्व छोड़ि आन उपाय नहि! जहाँ स्वाधीन



भेलीह, हमरे जकाँ तम-सिन्धुमे डूबि जाइछ। सिनेह स्थायी नहि, मुदा पत्नीत्व स्थायी होइछ। ओ अपन घरक रामी होइछ। पारो, अहाँ नहि बूझि सकब जे उन्मुक्त आकाशमे बिड़ जकाँ चहकैत, निर्वन्ध घुमैत आब बन्धन लेल कतेक आतुर भ' गेल छी, कतेक तरसि रहल छी एकटा सशक्त डारि लेल जाहि पर हम एकटा संतोषमय सुखद नीड़ बना सकैत साँस ली। मुदा, काल हमर जीवनमे माहुर घोरि देलक। हमर सभटा सतरंगी भावना सुतसान उजाड़ बनि हमर जीवन-तरेके-निर्ममतासँ झकझोरि रहल अछि।

अहँ हमरे जकाँ अपना जीवनमे दुःख वेसाहने छी। तेँ हम अहाँसँ आग्रह करैत छी जे जेना हो, अहाँ अपन सुखद नीड़ एकटा बना लिय'। अहाँ हमरासँ वयसमे छोट छी। अहाँ जानि-बूझि अपना जीवनक वसन्तपर तुपारापात नहि कर।

हमरा लेल तेँ दरदे हमर जिनगी ! सभ सुख हमर दरद अछि, अबसाद अछि !

अहींक बिसरल,  
—उपासना।



## प्रस्तर-प्रतिमा

की जिनगी इएह थिक ? एहिना बीतैत चल जायत ?—बुनैत-बुनैत हाथ शिथिल भ' गेल। ऊन-काँटा एक दिस राखि कनेक काल लेल आँखि मुनि लैत छी। सर्वत्र अन्हारे-अन्हार। मोनमे उघरल ऊन जकाँ ओझरायल विचारजाल। कखनो-कखनो मोनमे एकटा आक्रोश उठैत अछि। एना कतेक दिन आर जीव' पड़त ? नहि-नहि, समस्त शरीरसँ जेना प्रतिरोधक चीत्कार उठैत अछि। एकटा मूक चीत्कार, बंद अधर, बंद मोन आ बंद तनक काराकेँ तोरवा लेल ओ चीत्कार छटपटा रहल अछि। रौदक एक खंड हमर बगलमे आवि पसरि जाइछ। सून आङ्गनक सून दुपहरिया। ई अपने आफिसमे छथि। शुभशी आ इतिश्वा दुनू बहीन स्कूलमे। छोटका निरभ्र कतहु अड़ोस-पड़ोसमे खेला रहल अछि। एहि घरमे हमर गिनतीए की ? सभक चाकरी खटैत छी—पतिक, पुनीक, पुत्रक। कखनो काल लगैत अछि हमरा मोनमे जेना कोनो कुंठा होअय, कोनो ग्रन्थि होअय जे हमरा घुटनक उमसमे तड़फड़ा दैत अछि। हम घुटैत रहैत छी, मुदा किछु क' नहि पवैत छी। हरदम सागरक लहरि सन अशान्त हमरा मोनमे सदिखन एक-ने-एक चिन्ता रहिते अछि। भादबक मेघमाला सन घेरल चिन्ता कखनो एकटा हल्लुक अनुभूति मोन-प्राणकेँ कँपा दैत अछि जे एहि बेटी सभमे हमर आत्मा, हमर शोणित नहि अछि की ? हमर गममे नी मास रहियो क' को हमर कोनो अंश नहि ? ओ हमर अंतर अवस्थित देह रहियो क' कोना विदेह भ' गेल। सभमे अपन खानदानी गुण आवि गेल अछि जे हमरा सहि नहि पवैत छथि। अपन व्यवहारसँ नहि, अपन स्वभाव सँ हमरा प्रति निर्मम। हम माए रहितो माए नहि छी। सभ किछु रहितो, निछु नहि छी, किछु नहि छी—आ, अन्तरक चीत्कार पुनः एकबेर देहक कारा लोढ़वा लेल छटपटाय लागल। घड़ी दिस तकैत छी, एक बाजि गेल—चारि बजे शुभा आ इति आ पाँच बजे घरि ई अपने। एकबेर घड़ीपर सभ कार्यक्रम एहि घरक चलैत अछि। एहि कलकत्ता महानगरीक जनसंख्यामे प्रवासी मैथिलक कोन गिनती ? चारु दिस पंजाबी-बंगालीक मेला रहैत अछि। कतहु केओ अपन नहि लगैत अछि। मिथिलाक अपनरवक अपेक्षा एत' कत' ?

—मिथिली की भ' रहल छैक ? हम चौकी उठैत छी। म ! नगरक



एकमात्र संनिनी अनु मोहिनी मुस्कान लेने ठाढ़ छलीह ।

—की होयत अनु, समय बिता रहल छी कहना । कुर्सी ओकरा दिस बढ़बंत हम बजलहुँ-आउ, बैसु हम सभ तँ मात्र मशीन छी, घड़ीक काँटापर काज कर' वाली ।

कुरसीपर आरामसँ पसरैत अनु बजलीह—नहि शिल्पी, अहीँटा नहि, हमरा अहाँ एहेन कतेक प्रवासी मैथिल स्त्री एहि ठाम छथि जे आइ मात्र मशीन बनि एहिठाम रहि गेल ।—लोक समयक हाथक मशीन अछि आ हमरा सभ अपन पतिक हाथेँ स्वयं अपन संतानक हाथेँ । समयक धारा कत' सँ कत' बहि गेल । आजुक सभ्यता आ कालहुक सभ्यतामे कतेक अन्तर आवि गेल । आइ हमरे सभक संतानकेँ एतबा फुरसति नहि अछि जे हमरो सभक दुख-ददं सुनत ।

—अनु किंचित हँसी हमरा अघर पर आवि गेल—दुख-ददं सुनयबा लेल व्यग्र केँ अछि ? ओकर आवश्यकतेकी अछि ? मुदा अहाँक केहेन मोन अछि । अहाँ खयलहुँ की नहि—से घरि पुछबाक अवसर हुनकालोकनिकेँ नहि ।

कनेक काल घरि हम दुनू चुप्प रहलहुँ—नहि-नहि, चुप्पीक एकटा फाँस हमर आ अनुक गरमे लागि गेल । अनुक एकटा नम्रह साँस ओहि फाँसकेँ तोड़ि देलक । ओ बाजि उठलीह सभसँ तँ दुख ई अछि शिल्पी जे हमर मिथिलाक सभ्यता एखन बड़ पछुआयल अछि, यद्यपि मिथिलाक संतान बड़ अगुआयल छथि । अहीँ देखू, श्वेताक वियाह लेल हम कतेक छटपटयलहुँ, मुदा श्वेता एके ठाम कोनो बंगालीसँ बियाह करवा लेल प्रतिवद्ध । जखन किछु बुझबंत छियेक तँ हमरे बुझब' लागैत अछि—मम्मी, ओ जमाना आव चलि गेलैक । आव स्त्री स्वतंत्र अछि । आव हमरा सभ लकीरक फकीर नहि रहब मम्मी । जा घरि हमसभ अवला बनि सभ मान्यताकेँ स्वीकारैत रहब हमरो सभक जिनगी अहीं सभ जकाँ सुरंगक अन्हारमे डूबल रहत ।

ओ बजैत तँ ठीक अछि अनु, हमरो गरक फाँस ढील भ' गेल—जाति-पाति ई सभ बंधन कतेक दिन ?

बीचेमे बात कटैत अनु बजलीह—सभ किछु ठीक अछि शिल्पी ! हम अहाँ मानव की समाज मानत ? काल्हि गाम जायब; सभ केओ बारि देत ।

आदमी कतेक बर्दाश्त करत शिल्पी ? हमर सभक अन्तर, हमर सभक समस्या केँ देख'वालेकेँ अछि ? सरिपो जमाना कत' सँ कत' चल गेल आ हमर मैथिली सृजनहारो सभ एखनि घरि गाछी-बिरछी, खेत-पथार सभमे ओझरायल छथि । समस्या राखी तँ ककरा लग ? निदान खोजी तँ कत' ? अपन डीह-डाबर, खेत-पथार सभ बेचि बैसि जाय कलकत्ताक एकटा अनिश्चित कोठलीक प्रांगनमे तखन ने ? श्वेताक बाबूकेँ जेना सोचक धून लागि गेल छनि । एक दिस संतानक ममता आ दोसर दिस समाज ।

अनुक चेहरा तमतमाय लागल । आँखि छलछला गेल छल ।—भात भ' जाउ अनु ! छलछलायल आँखिसँ अनु हमरा दिस तकलीह । ओकर आँखि नोर जेना हमर आँखिमे आवि हृदयमे उत्तरि गेल-सरिपो, हमरा सभ पढ़ि-लिखि की कयलहुँ । नहि तँ पुरान भ' सकलहुँ आ नहि तँ नवीन । नहि तँ पुरान पीढ़ी खुश रहैत छथि फारवाड बुझि, आ नहि तँ नवीन पीढ़ी खुश रहैत अछि बैकबाड बुझि ! दिमागमे अतीतक एकटा खंड नाचि गेल । तेरह-चौदह वर्षक इतिश्री कोनो षोड़शीसँ कम नाहि लागैत छलीह । ओहि दिन एकटा सस्ता पॉकेट बुक पढ़ैत छलीह । हम प्रेमसँ ओकरा बुझा देलहुँ—बेटा, एखन अहाँ छोट छी । उपन्यास नहि पढ़ल करू । पैघ भ' जायब तँ उपन्यास पढ़ब । ओ मूक रहलीह मुदा आँखिमे एकटा प्रतिवाद भरने चुपचाप ओ उपन्यास हमरा द' देलक । हम अपन काजमे लागि गेलहुँ । इतिश्री बरण्डापर ठाढ़ एकटा संगीसँ गप्प कर' लगलीह । चाहूँ दिस सिख आ बंगाली छौड़ा सभ अपन-अपन कोठरीसँ निकलि एकरा सभ दिस ताकि-ताकि अश्लील जकाँ हँसैत छल । हमर मोनमे घृणाक अवसाद उठल । इतिकेँ भीतर बजा लेलहुँ बेटा, आव अहाँ पैघ भ' गेल छी । बाहर नहि ठाढ़ रहू । देखैत छी कतेक—हमर मुँहक बात मुहें रहल । इति एकटा विचित्र दृष्टिसँ हमरा देखि पुछि बैसलीह—मम्मी, जखन हम उपन्यास पढ़ैत छी तँ अहाँ कहैत छी एखन अहाँ बेदरा छी, नहि पढ़ू । आ जखन हम बाहर ठाढ़ होइत छी तँ अहाँ कहैत छी आव अहाँ पैघ भ' गेल छी—अहाँ साफ-साफ एक्के बेर हमरा बाजि दिय' जे हम पैघ छी कि छोट ।

हमरा लागल जे गरमे पढ़ल जंजीर हमर जेना हमरे गरकेँ कसने जा रहल हो—'साफ-साफ बाजि दिय' एके बेर—' जेना हमर माए हमरा बँटैत छल—आव अहाँ पैघ भ' गेल छी शिल्पी बाहर ठाढ़ भ' हँसू-बाजू नहि ।



जमाना खराब अछि—काल्हियो खराब छल—आ काल्हियो हमर माए ई बाजि हमरा अहपर चोट करैत छल—आइ हम अपन बेटीकेँ...काल्ह ओ अपन बेटीकेँ...परम्परा एहिना चलैत रहत...जमाना लाख बदलय...सभ्यता उन्नति करय...परिवेश बदलय मुदा, हृदयक भाव तँ विरन्तने रहत, शाश्वत रहत...छाउरक ढेरमें नुकायल चिनगी सन स्त्री अपन शक्तिके कहिया चिन्हत ? कहिया स्वीकारत ? शिल्पी...अनुक स्वर सुनितहि हम चौकि उठलहुँ—विस्मृति हमरा ठामक ठाम छोड़ि पलायन क' गेल ।

आब चाह पीबाक चाही अनु—कतेक सोचब, कतेक बाजब । जिनगी एहिना चलैत रहल बिन हमर सभक इच्छा-अनिच्छा बुझने । शिवा नीकरकेँ बजबैत छी तँ मोन एकदम भरल भरल मेघ सन बोझिल छल...दू कप चाह लेने आयब...शिवा चल गेल चाह बनयबा लेल आ हमर मोन फेर सोचक जालमे ओझराय लागल—अनु गलती ने अहाँक अछि, नहि हमर, नहि ककरो, गलती समयक अछि, परिवेशक अछि । शुभा, इति अहाँक श्वेता, बादल सभक जनम एहि महानगरीमे भेल । आँखि खोललक एहि परिवेशमे, बुझलक इएह दातावारण । गाम घरकेँ विदेश बुझलक । हमर अहाँक शिक्षा आ उपदेशपर ओ सभ अपन जीवनक समस्त आयाम समस्त आदर्श केँ उत्सर्ग तँ नहि क' देत, हम अहाँ तँ पुरान आ नव दुनूक तामस, दुनूक आक्रोशकेँ झेलनिहार प्रस्तर प्रतिमा मात्र थिकहुँ । जाँतक दुनू पाटक मध्य पीसल जाइत छी नहि तँ एम्हुरका..... ।

शिवा आबि चाह राखि देलक । एक कप उठा अनु दिस बढेलहुँ । आब एहिना चाह पीबैत रहू अनु एकरे मिठासमे अपन जिनगीक सभ टा मिठास खोजैत रहू आ तँ हम चाहमे बेसी चीनी पीबैत छी—आ हम एकटा हास चेहरापर आनवा खेल चाहलहुँ—मुदा ओ मान क' हमर चेहरापर सँ पड़ा गेल आ हमर मोन उदास भ' गेल—अनु—बेटा-बेटीक मोन ओकर सभक व्यस्तता अपना सभकेँ सदखन बुझबाक चाही । हमर मोने स्वीकारि उठल—हमरा सभ अपन माएकेँ ईश्वर सँ बड़ि बुझैत छलहुँ, ओएह श्रद्धा, ओएह आदर हमर सभक संतान हमरा सभकेँ किएक नहि दैत अछि ? नहि दैत अछि शायद ओकर ढंग बदलि गेल अछि । भरि दिन खटैत रहू, मरैत रहू आ जखन स्कूलसँ आओत ओएह उलहन-ओएह उपराग—मम्मी, हमर फाकपर आयरन किएक नहि क' देलहुँ, हमर किताब सभ किएक नहि सरिया देलहुँ, आइ ओछाओन नहि झगड़ल अछि । हम प्रस्तर प्रतिमा जकाँ चुपचाप सुनेत रहैत छी । जहिया किछु कहैत छी

गरदनिमे हाथ ब' झुलि जाइत छलीह मम्मी अहाँ नहि बुझैत छी । हमरा सभकेँ समय नहि भेटैत अछि । तँ अहाँकेँ कहैत छी । आब देखियोक टास्क बनायब, क्रोशिया बिनब, बेटमिंटन खेलायब—कतेक काज अछि । हम मूड़ी हिलाय स्वीकारैत छी-ठीकेँ हमर बेटी बड़ व्यस्त अछि—ओ हे दिन शुभा कहने छल मम्मी अहाँ हमरा सभकेँ हरयम बेटा-बेटा कहैत छी । ई हमर सभक अपमान थिक मम्मी । अहाँ हमरा सभकेँ बेटी कहू आ सिनेह—दुलारसँ निरभ्रकेँ बेटी कहियोक । की बेटी कोनो लज्जाशील शब्द थिक ? मम्मी बेटी तँ गौरवमय शब्द थिक । अहाँ बेटीकेँ बेटी कहि सम्बोधित करब तँ हमर सभक मनोबल बढत । हमरा जगत छल ओ शुभा नहि स्वयं हम छी जकर अन्तरमे इएह सभ भाव विद्रोह करैत छल । मुदा विद्रोहक ओ स्वर मुखरित नहि होइत छल । आह हमरे अन्तरक विद्रोह हमर बेटीक अवरक विद्रोह थिक गेल ।

तखन प्रस्तर प्रतिमा—हमरा अनुक स्वर झकझोरि देलक—तीन बाजि भेल आब जाइत छी । सभटा काज पड़ल अछि ।

प्रस्तर प्रतिमा—सम्बोधन पर हमरो हँसी आवि गेल—जाइत छी हमहूँ जल्बी-जल्बी काज सभ निपटा लैत छी ।

एकटा थाकल ठेहियायल मुस्कीक अंगैठी संग हम शुभा इतिक कोठलीकेँ देखैत छी । सभटा ओछाओन सभ अस्त-व्यस्त । कपड़ा सभ असगनीपर सँ नीचा खसल । निरभ्रक ट्राइसाइकिल एकटा कोनमे उनटल छल । इतिक जापानी डौल जे ओकरा एकटा दोस्त ओकर जन्मदिनमे प्रेजेंट कयने छल नीचामे मूच्छित पड़ल छल—नयनमे उमड़ल मेघकेँ हम पलकमे समेटने खिड़की लग ठाढ़ भ' जाइत छी—बाड़ीमे रोदक अन्तिम खण्ड लसकल छल । कने-कने सर्द हवासँ गाछक सूखल पात-पुष्प झरि-झरि खसि रहल छल आ कने दूर ओ'घरा क' पुनः निष्प्राण भ' जाइत छल । एकटा नीमक सघन तरु भीन मूक बड़ छल जकर नीचामे चिनिया बादामक खाँइचा सभ ओहिना पड़ल छल जे भोरे तीनू भाइ-बहिन मिलि खयने छलीह—एक क्षण लेल हमर साँस चैन पबैत अछि—हम कतेक भागवत छी जे कलकत्तामे एकटा कोठली भेटनाइ समुद्रमे पुल बन्हनाइ थिक । ताहि ठाम हमरा छोट-छीन दुनू कोठलीमे फ्लैट, छोट सन कम्पाउन्ड हमरा भेटल छल,—मुदा हमर एहि फ्लैटमे, ई चैन की—आँखि उठि गेल भोला बाबाक फोटो दिस । नील वर्ण शिवजीक मोहक मुस्कान । सभटा गरल पीबियो अधर पर अमृतमयी



मुस्कीक छटा। एक टा अन्तर्भावनासँ अभिभूत भ' हमर हृदय नमित भ' उठल—नीलकण्ठाय वृषवज्जयाय, तस्मै शिकारा नमः शिवाय। आइ धरि हम भगवानसँ किछु मंगने होयब मोन नहि अछि। हमर बेचैनी भगवानसँ चैन मँगैत रहल, पाथरसँ चैन मँगैत-मँगैत हमहूँ तँ पाथर भ' गेल छी।

मम्मी-मम्मी भूख लागल, बरण्डेपर बस्ता पटकैत दुनू बहीन खाय लेल गोहारि कर' लागल। एक नजरि शुभापर फेकि हम चुपचाप दुनूक आगूमे जलखँ परसि देलहुँ। जलखँमे मीन-मेख निकालैत दुनू बहीन एकटा भू-चाल जकाँ ठाढ़ क' देलक। आ दुनू बहीन अपन-अपन ड्रेस ओछाओनपर फेकि चल गेलीह बंडमिटन खेलयबा लेल। हमर दृष्टि जेना बेचारी भ' ओहि कपड़ाके देख' लागल। ओहिना सीरक सभ अस्त-व्यस्त कपड़ा सभ असगनी परसँ खसल। एकटा दब जेना मोन उदास क' देलक। कतेक बेर चाहैत रही जे हिनका सभ बात कहि दी। मुदा ई जखन थाकल ठेहिआयल घुरैत छलाह तँ कोनो शिकाइत करबाक मोन नहि होइत छल। आइ हमरा मोनमे प्रतिकार करबाक इच्छा जाग्रत भेल। दुनू बहिन आव सियान भेल। आव अपन उत्तरदायित्व बुझबाक चाही। समर्थ वेटीके एतबा देखबाक छुट्टी नहि जे हमर कोठलीमे एतेक गंदा अछि। हमर ओछाओन गंदा अछि। लागल जेना ई घर दुआरि जहिना ओकरा सभले रहीक टोकड़ी अछि तहिना हमहूँ रहीक टोकरी.....।

की सोचि रहल छी..... ?

अरे, अहाँ आफिससँ आवि गेलहुँ ?

हँ, आइ किछु पहिने चल अयलहुँ—ई घड़ी दिस ताक' लगलाह जेना गलती घड़ीक नहि, हुनकर अपन अछि—हमर हँसी हिनकर सरलतापर जेना रुकि नहि सकल।

एकर सभक घर एतेक गंदा किएक अछि। केओ आवि जायत तँ हिनकर प्रश्नक उत्तर—आन दिन हम एकर सभक कपड़ा-लत्ता ओछाओन सरिया दैत छलहुँ।

आइ सोचलहुँ देखी की प्रतिक्रिया एकरा सभ पर होइत अछि।

शुभा-इति-हिनकर पारा चढ़ि गेल-जोरसँ चिकरि उठलाह।

हिनकर तामससँ दुनू बहीन डेराइत छलीह। स्वर सुनितहि दुनू छटपटाक' भागल—जी पापा।

देखू, अहाँ सभ अपन कोठली। जहिना भोरे उठल छलहुँ तहिना ओछाओन सभ पड़ल अछि। सभटा कपड़ा-लत्ता नीचाँ खसल। एतेक टा भ' गेल छी आ अहाँ सभके एखन धरि अपन उत्तरदायित्वक ज्ञान नहि भेल अछि। भरि दिन मम्मी खटैत रहैत छथि। बेटीक कोन सुख। आन दिनसँ अहाँ सभक कोठली...बड़बड़ाइत ई ओहिठामसँ चल गेलाह। हमरा ममत्व उठल, कथी लेल हम छोड़ि देलहुँ। सहियारि देने रहितहुँ तँ दुनू आइ बाजब नहि सुनैत। हम अपनाकेँ कोसैत ठाढ़ छलहुँ। तावत उद्यत इति फुसफुसा उठलीह—मम्मी जानि बुझिक' सभटा कपड़ा नीचाँ खसा देलक आ हमरा सभकेँ डाँट सुना देलक। शुभा ओकरा दिस व्यंग्यक मुस्की मुस्का देलक आ हमरा ओहि एक क्षणमे लागल जेना शुभा-इति हमर दुनू गालमे तड़ातड़ थापड़ मारने चल जइ रहल अछि—

मुदा नहि हम तँ प्रस्तर प्रतिमा छलहुँ—किछु कहाँ भेल.....।





## कोन विश्वास

भनसा घरमे चुल्हक घघरा लग बैसि उम्मी हुनू ठेहुनक मध्य मूड़ी नुका छेलनि । लाली, प्रीती आ शैशव सूतछे छल । सौरभक पता एखनि घरि कतहु नहि । बिच्छु जकाँ डंक मारैत पूसक सरदी । राति निस्तब्ध भेल । कखनो कखनो सड़कपर कोनो कुकूर भूकि उठय । आ उम्मीक अंग-प्रत्यंग जेना सिहरि जाय ।

आइ दू बरखसँ उम्मी तरसि क' रहि जाइत छलीह जे कहियो सौरभ आफिससँ जल्दी घर आवथि । उम्मी कतेक बेर कहैथ छलीह जे पाँच बजे 'आफिस' खतम होइत अछि तँ अहाँ छमी बजे घरि घुमैत-फिरैत घर अवश्य पहुँच जाउ । हमर मोनमे नाना प्रकारक आशंका होइत रहैछ । एहि परदेशमे हम ककरा की कहबैक ? कोनो चोरे उचक्के आवि जाय । मुदा सौरभक लेखे ठाकक ओएह तीन पात । ओ आठ बजेसँ पहिने कहियो नहि पहुँचैत छल । मुदा आइ सौरभकेँ दस बाजि गेल छलैक । एतेक देरी हुनका कहियो नहि होइत छलैक । उम्मी बड़ तमसा गेलीह । भरल लोटा पानि आगिक घघरा पर ढारि ओहिठामसँ उठि गेलीह । 'ट्रांजिस्टर' लग आबि खट् द' सुइया 'ऑन' कयलनि । 'मोसो छल कियो जाय, सँइया 'बेईमान'—तामसे 'सुइच' खट् द' ऑफ क' देलनि । 'घौर, जत' सुनय ओतहि पूरषक घोखा, छल, कपट ।' आ एकटा अवश आक्रोश जेना बिजलीक करैट जकाँ ओकरा सीसे देहमे पसरि गेलैक । 'आइ हम कोनो धाख नहि करब । जे जे हमरा मोनमे होइत अछि, अवश्य उगलि देब । ओ जानि-बूझि क' हमरा एतेक सतबैत छथि । हुनकर मोन आव हमरासँ उबि गेल छनि । हुनकाँ लेखे हम मात्र एकटा 'सेफ डिपोजिट' जकाँ छी । जखन आवश्यकता होइत छनि, हमर काज पड़ैत छनि । नहि तँ हम घरमे सजाओल एकटा 'शे केस' । हम किछु बजैत नहि छी मुदा देखैत नहि छी की ? हमर अन्तरमे की कोनो इच्छा नहि, कोनो आकांक्षा नहि ? दिन-राति बाल-बच्चाक झमेलमे ओझरायल रहैत छी । एहि घरसँ हमरा एकरती छुट्टी नहि भेटैत अछि । हम की एको बेर हुनका बजैत छी जे हमरा सिनेमा-वियेटर ल' चलू । आ कि हमरा नुआ फाटि गेल की टोल-पड़ोसक लोक

हमर कान शून्य देखैत अछि तँ हँसी करैछ । हम तँ स्वयं चाहैत छी हुनका हमरा ल' क' कोनो कष्ट नहि होनि । कोनो चिन्ता नहि पहुँचनि । मुदा ओ पतिये डा छथि, कहियो हमर भावनाकेँ आदर नहि कयलनि, कान नहि देलनि ।'

आ सोचैत-सोचैत उम्मीक जेना माथ फाट' लागल । क्रोधे माहुर भेल छलीह । खन घर, खन बाहर करैत जेना ओ पयर पटकैत तामसकेँ प्रकट करैत छलीह । माँ-माँ—तावत दू वर्षक काली सूतलमे कानि उठलीह । ओ दोड़ि ओकरा पीठ ठोकि क' सूतब' लगलथि । मुदा ओ धौना पसारि देलकनि । कानते रहलीह । 'मरि जो' कहैत ओ हाथसँ पीटपीटा देलनि । काली—बाबूजी-बाबूजी, कहैत कान' लगलीह । बाबूजी-बड़ बाबूजी वाली भेल छे' । कोन सोख पुरलकीक बाप ? बाबूजी-बाबूजी—बड़बड़ाइत ओ कालीकेँ कोरामे ल' टहल' लगलीह ।'

कनिये कालमे लालीयो सुनि गेलि । मुदा आव उम्मीक मोनमे नाना प्रकारक आशंका अपन टाङ पसार' लागल । एतेककाल तँ कहियो नहि होइत छलीक । ओ छथियो बड़ लापरवाह लोक । एकदम फक्कड़ जकाँ 'अलमस्ती' तँ चलल जाइत छथि । साइकिलो कतेक 'रेण' सँ चलबैत छथि । बाप रे बाप कहैत-कहैत थाकि जाइत छी, सबेरे चल आउ, साइकिल आस्तेसँ चलाउ । एहि ठामक रस्ता बड़ संकीर्ण आ जाय रहैछ, बस, ट्रक, मोटर-रिक्शा । कतहु कोनो बुपुंटना नहि भ' गेल हो । हे भगवान, हे बजरंगवली आब हम ककरा कहबैक ? आइ-काल्हि जमाना बड़ खराब भ' गेल अछि । एकोरती ककरो तँ बातावाती भेल कि झट द' छूरा निकालि लैत अछि । ओ लोकसँ बहसो बड़ करैत छथि । किछु कहलहुँ तँ—'अयँ ककर मजाल अछि जे आँखियो उठाओत हमरा दिस ?' आ सहसा उम्मी एकदम घबड़ा गेल । ओ अन्हरियामे घरसँ निकलि पेशकार साहेबक घर पहुँचि गेलीह—'बहिन, एखनघरि कालीक बाबूजी घर नहि आयल छथि ।' कनिये रेवाक बाबूजीकेँ कहियनु देखबाक लेल । हमर मोन घबड़ा गेल अछि ।'

'घबड़यवाक कोनो बात नहि, कोनो जान-पहचान वाला भेंट भ' गेल जायतनि । तँ देरी भ' गेल होयतनि । एखन तँ दसे बाजल अछि । रेवाक बाबूजी कहियो-कहियो तँ वारहो बजा दैत छथि—पुनः आस्तेसँ बजलीह—हम रेवाक बाबूजीकेँ पढ़ा दितिएक मुदा आइ साक्षेसँ हुनकर देह—हाथमे



बड़ दरद अछि। तेल-मालिश कयने छी तखन एखन निद्रा भेलनि अछि। एक घंटा आर देखि लिय' तखन हम हुनका उठा देबनि।

उम्मी चुपचाप घुरि गयलीह। ओकर हालति बताहि जकाँ छलैक। खन खिड़की लग जा क' ठाढ़ भ' जाइत छलीह, खन अङ्गनामे। कखनो जी मसोसि ओछाओनपर पड़ि रहैत छलीह तँ कखनो चौकिक' बैसि रहैत छलीह। ओकर आँखिक आगू सौरभक चेहरा नाच' लगलैक—'कतेक हंसमुख छथि ओ। कतेक सोझ, कतेक सरल। काँच, पाकल, छूछ, रख जे किछु हुनका आगू राखि देबनि बिना प्रतिवादे खा लैत छथि। ओकरा सन भाग्यशाली आरके' एतेक सुन्दर पतिक परनी। हुनकामे कमी कथिक छनि ?'

आ तखन नहि जानि किएक उम्मीके' अपनापर तामस उठि गेलैक—'सभटा खरापी तँ हमरा अपनेमे अछि। नहि तँ हुनका सन, सुन्दर, नहि तँ पढ़ले-लिखल। हम तँ हुनकर सेबो नीक जकाँ नहि करैत छियनि—'आ अपन दोष निकालैत-निकालैत जेना उम्मीके' परम तुष्टि भेटैत छलैक।' अत्यन्त संतोष होइत छल। अन्तमे मोने-मोने हनुमानजीके' कबुला कयलक जे ओ स्वस्थ घर घुरताह तँ हम दू सपैयाक परसाद चढ़ायब।

आ डरसँ ओकर सौंसे देह थरथराय लागल। ओकरा देहमे शोणित नहि छल। ओकर गर जेना केओ घोंटि रहल छल।

'ठक-ठक'—केओ केवाड़ खटखटोलक। 'के छी ?—उम्मी विद्युत गति सँ ठाढ़ भ' गेलीह।

'खोलू-खोलू, हम छी—सौरभक स्वर बहरायल। उम्मीक सभटा शक्ति जेना तिरोहित भ' गेल। ओ चाहितो किछु नहि बाजि सकलीह। ओकर स्वर ओकर गरामे लसकि गेलैक। ओ दीड़ि क' जाय लेल चाहैत छलीह मुदा पयर जेना जमि गेल छल। खदनक एकटा अप्रतिरोध आवेग ओकर सौंसे शरीरके' अवशक' देलक। पुनः तुरत सम्हरि ओ नोर पोछि केवाड़ खोलि देलक आ चुपचाप भनसा घर चल गेलीह।

सौरभो चुपचाप अपराधी जकाँ घर आयल। केवाड़ बंदक' ओ कपड़ा बदल' लागल। ओ तरे-तरे देखलक जे उम्मी भनसा घरमे ठाढ़ अछि। आन दिन उम्मी केवाड़े लग ठाढ़ अपन मधुर मुस्कीसँ ओकर स्वागत करैत छल।

घोसर दिन सौरभक ओछाओन सभ कयल रहैत छलैक। आइ सभटा अस्त-व्यस्त पड़ल छल। सौरभ सभटा कपड़ा सरिया क' अपन ओछाओन सभ क' लेलक। उम्मीक साड़ी नीचामे खसल छल। तकरा चुपचाप सहेजि राखी देलक असगनी पर।

'ई सभ काज छोड़ि दियोक। परसल अछि, आबि क' खा लिय'—उम्मी बजलीह।

'अरे लाउ ने'—हँसैत बाजल सौरभ। उम्मी एखनो ठाढ़े छलीह। ओकर चेहरा ओसमे नहायल गुलाब सन लगैत छलैक। नोर रुकलापर ओकरा मोनमे घोर अभिमानक भावनाक उदय भेल। सोचल की आब सौरभसँ नहि बाजत। जाबत ओ अपन गलती नहि मानत, हमरा मनाओत नहि, हम नहि बाजब। आइ जँ कोनो ओर उचकके आबि जयतेक तँ हम की करितहुँ। नाहि, नहि हम नहि बाजब जाबत ओ हमर माथपर हाथ राखि सप्पत नहि खयताह जे आन दिनसँ एतेक अवैर नहि करब। मुदा जखन ओ देखलक जे काज उम्मीक छल से सौरभ क' रहल अछि तखन ओकरा बाजल बिनु नहि रहि गेलैक। मुदा आब ओ बाजि पछताइत छलीह जे एकर माने ओ जानि—बूझि क' अवैर कयलकैक। ओ मोने-मोने आपनाके' कोणय लगलीह हम बड़ छुछुन्नर छी। हमर कोनो मर्यादा नहि रखैत छथि। नहि जानी घोसर स्त्री कोना पुरुषके' नकेल द' नचबैछ। सौरभक समक्ष तँ हमर सभटा स्वाभिमान कपूर जकाँ उड़ि जाइत अछि। ओ कतेक बेर सोचैत छलीह जे ओ सौरभक समक्ष रुसि जायत, तमसा जायत, मुदा ओकर अपने निश्चय सोडावाटक बुल-बुला जकाँ झाँत भ' जाइत छल।

ओ धारी परोसि सौरभक समक्ष 'स्टूल' पर राखि देलक। आँखिमे नाराजगी आ अभिमानक भाव ल' क' ओ अपना कात बैसि रहलीह। दूनूगोटक' आँखि मिलल मुदा सौरभ अपन दृष्टि झुका लेलक।

'आइ त' बड़ अन्हर होइत छल, कौर मुँहमे लैत बाजल सौरभ।

'अँय से की ?—उम्मीक चेहरा फक्क भ' गेलैक।

'बुझू भाय खरजितिया कयने छल ते' बचि गेलहुँ। ऑफिससँ तँ पाँचे बजे चलसहुँ मुदा रास्तामे एकटा रिक्शासँ टकड़ा गेलहुँ। कनिए दूर फेकाय गेलहुँ। बड़ मीड़ जमा भ' गेल छल।

'कतहुँ चोटो लागल ?—उम्मीक स्वर काँपि गेलैक। कोड़ फाटि गेलैक।



‘ओहि समय तें माथमे चोट लगलाक कारण वेसुध भ’ गेल छलहुँ। मुदा चोट कतहु नहि छल। एक-दू घंटा मे अपने होश मे आवि गेलहुँ। ‘सौरभ तेना बाजल जेना ओकरा ओहि दुःखक कोनो परवाह नहि अछि। बरनी, किछु टुटल-फूटल नहि। बचि गेलहुँ।’

‘हे भगवान ! आ अहाँ हमरा एखन कहैत छी। तें कहैत छी जे हम अहाँक केओ नहि। एतेक काज होइते अछि आ साइकिलक ‘ब्रेक’ ठीक करायब से नहि। हम तें कुकुर छी भुक्त रहैत छी। आइ जे अहाँकेँ किछु भ’ जाइत तें आइ हमर की—आ बजैत-बजैत उम्मी ठोह पाड़ि कान’ लगलीह’। उम्मीकेँ कनेत देखि सौरभकेँ संतोष भेलैक। एहिसँ उम्मीक मोनमे चिन्ता पीड़ा आवि गेलैक। सौरभक मोन पूर्णतः उत्साहित एवं उन्मुक्त भ’ गेलैक। उम्मीकेँ चिन्तित, दुःखित देखि ओकरा संतोष होइत छल जे ओ एकटा एहन स्त्रीक स्वामी अछि जकरा ओकरा सँ असीम प्रेम अछि। ओकरा लेल कोनो त्याग क’ सकैछ। ई सौरभ अपन अधि-कार बुझैत छल। जे पतिक कष्ट फिकिर सुनि पत्नी अपन दुःख चिन्ता सभटा बिसरि जाय। आ उम्मी सरिपहुँ एहिना करैत छलीह तें सौरभ अतिरंजनासँ काज लैत छल।

‘नहि काल्हि सभसँ पहिने ‘ब्रेक’ ठीक करा लिय’ तखन ऑफिस जायब।’

‘एखन कोना होयत ? पैसा कहाँ अछि ?’

‘हम देब पैसा।’

‘अयें अहाँ—चौकल सौरभ—अहाँ कत’सँ देब !’

‘हमरा संगमे दस टाका अछि एक बरखसँ नुकाओल अछि। एतेक काज पड़ल एहि बीचमे मुदा’ हम नहि निकाललहुँ। आ अहाँक जानपर पड़त, हम ओ टाका जोगाक’ की करब ? हँ दरमाहा भेटत तें हम ल’ लेब।’ बजलीह उम्मी।

‘ओह उम्मी, अहाँ कतेक नोक छी, एतेक सहनशील अहाँ सन पत्नी पाबि हम तरि गेल छी’। आ स्नेहक बरखासँ भीजैत रहलीह उम्मी।

भोरे प्रसन्न मोने दस टाका उम्मी सौरभकेँ दैत बजलीह—‘पहिने जाक’ साइकिल ठीक करा आनू तखन हमर मोन स्थिर होयत।’

सौरभ खुशी-खुशी टाका ल’ बाजार चल गेल। उम्मीकेँ बहुत दिनक बाद एतेक स्नेह, एतेक सहानुभूति सौरभसँ भेटल छलैक। ओ एकटा स्वतंत्र चिड़ै’ जकाँ

घरक सभटा काज स्वच्छन्द भावसँ कर’ लगलीह। हुनका अन्तरमे अपूर्व स्फूर्ति आवि गेल छलनि।

‘ठक-ठक’—केओ केवाड़ खटखटौलक। बाहर एकटा अपरिचित व्यक्ति देखि ओ थकमका गेलीह—‘की बात छी ?’ बाबू घरमे नहि छथि।

‘बेस, कोनो बात नहि। ई हुनकर फोन्टेन छियाँनि। राति सिनेमामे छेने छलियनि, से हमरे लग रहि गेल छलनि।’

सिनेमाक नाम सुनिते उम्मीक हृदयक धड़कव तीव्र भ’ गेलैक।

‘सिनेमामे ?’ ओ आश्चर्यित भ’ पूछलानि। हँ, हँ, सिनेमामे। वीणा टाकीजमे। अहाँकेँ कहलनि नहि की ? राति हमरा सभ तीन—चारि गोटेसँ सिनेमा गेल छलहुँ तें ओतेक देरी भ’ गेल।

आ आगन्तुकक बात सुनबाक उम्मीकेँ होश नहि रहलनि।





## रैत आ रैत

‘भोजीके’ की भ’ गेल छैक पायल ?’

बादलक स्वर सुनि चौकि भाइ दिस तकलक पायल—‘सविखन एकटा स्वप्न-लोकमे डूबल आँखि, व्यथा-वेदनाक जीवंत रूप, भोजी जखन बात करैत छथि तँ चाख दिस जलतरंगक अपूर्व ध्वनि पसरि जाइछ ! जेना कोनो दीयाक ‘ली’ हुनक पपनी पर, गालपर दहकि रहल हो पायल, काल्हि राति ओ जखन फोनपर गप्प करैत छलीह तँ लगैत छल जेना फोन छोड़बाक हुनका मोन नहि होनि, कतेक तन्मयता, कतेक आत्मियता...

एकटा साँस लैत बाजल—‘अपना सभके’ हुनक मदति करबाक चाही...’  
—‘मदति.....?’ पायल चौकि गेल ।

—हँ पायल, भोजी हमरा माए जकाँ पोसने छथि । हम माएक अभाव कहियो नहि अनुभव कयलहुँ । ओएह मातृतुल्य भोजी हमर कतेक उदास, कतेक परेशान.....आखिर किएक.....?

—‘एहि वयसमे हिनका एहि तरहक—हमरा जेना कोना दन लगैत अछि । दुइ बच्चाक माए भोजी तखन—! स्वयंके’ मारि देतीह, अपन इच्छाक गराँ घोटि देतीह, मुदा हारि मान’ वाली नहि छथि ।’

—‘नहि, अहाँ गलती बुझैत छी भैया ! भोजीके’ किछु होइत छनि अवश्य, लेकिन.....’

—‘नहि, पायल हमरा तँ होइए, भोजी स्वयं नहि जनैत छथि जे ओ ककरो अथाह प्रेममे डूबल छथि । एहि तरहक आदमी स्वयंके’ फुसियवैत अछि । अपनाके’ स्वयंसे’ नुकवैत अछि । हृदयक अन्तरतम गद्दीरइसें फुटैत कामनाके’ थकुचि दैत अछि ।’

—हमरा बुझवामे किछु अवैत अछि भैया, अहाँ की वाजि रहल छी ?

—‘हमरा होइछ, भोजी ककरो चाहैत छथि । मुदा एहि वयसमे पहुँचि कोनो स्त्रीक सतीत्वके’ ई स्वीकार नहि होइत अछि । अपनापर अधिकार क’ अपन इच्छाक अरथी निकालि दैत छथि । जनैत छी—

झाड़ि वहारि पथं नित राखब  
कृष्ण भेला परम कठोर.....

एकटा आकाश

३७

एतेक उदासी—एतेक व्यथा-वेदना-आङ्गनसँ भोजीक गीतक स्वर जेना बादल आ पायलके’ मूक क’ गेल । भोजीके’ गाँत गयबाक बड़ स’ख छलनि । ओ सविखन किछु ने किछु गुनगुनाइत रहैत छलीह—सभटा उदासीक गीत । कतेक कालक लेल गीतक स्वर रुकि गेल । प्रायः भोजी अपन नोर पोछि रहल छलीह—

अपन सनेस छोड़ि जायब सखिया  
इहो हुनू नयन चकोर

एक-एक आखर जेना कराहि रहल छल, एक-एक स्वर आहत भ’ छटपटा रहल छल.....!!

बादल अपन सोचमे ओझरायल रहल । भोजी किएक एना बदलि गेलीह ? नहि जानि, ककर खियालमे भोजी कटल गुड्डी सन बेबस जकाँ पहुँचि जाइत छथि ? बेसलि-बेसलि गुम-सुम ! गप्प करैत-करैत जेना हेरा जाइत छथि । हमरा होइत अछि, भोजी स्वयं नहि बुझैत छथि । ओ ककरो चाहैत छथि । एहि वयसमे खास क’ धर्मभीरु, दुई जुआन बच्चाक माए ककरो चाहबाक कल्पना भक्ति क’ सकैत अछि । कहियो अपन दुर्बलता स्वीकार नहि क’ सकैत अछि । तीयो भावनाक बिहाड़ि कखनो-कखनो हुनका अङ्गलित क’ दैत छनि । हुनक अन्तरपर झेलाइत एकटा जादुइ मुस्की, हुनक व्यवहारमे कखनो चंचलता आबि जाइछ । भोजीक हृदयमे कोनो दबल-दबल फुलझडी अछि । हुनक तीतल पलक मीन आर आ वाक्छल स्वर जेना हुनक देवसीक चेन्ह थिक । ओह ! बादलक मायक नस सभ चरचराय लगलैक ।

यदि ई बात सत्य होयत तँ भोजी कहियो अपन लोकसँ, अपन परम्परागत रास्तासँ हटि नहि सकैत छथि ? नहि जानि एहि तरहें कतेक जीवन अमावस्याक चिर अँवकारमे डूबि जाइछ—नोन जकाँ पानिमे चुपचाप भूत.....

ओहि दिन कोनो बातपर तमसा क’ भैया आफिस चल गेलाह । भोजी किछु नहि बजलीह । भैयाक भयंकर गर्जन-तर्जनमे डूबल भोजी मोन-मूक ठाढ़ि रहि गेलीह—भैयागे इएह एकटा खराबी छनि जे तामसमे हुनका समय-असमय, निराला बोधी-कपूक खयाल नहि रहैत छनि । भैयाक आफिस गेलाक बाद भोजी चुपचाप बादल आ पायलके’ जलखँ करब’ लगलीह ! बादल कतेक आग्रह कयलक भोजीके’ खयबा लेल-पायल भोजीसँ प्रार्थना करैत रहलीह, मुदा भोजी !.....नहि



जानि हुनका की भ' गेलनि ? उवास-उदास, कानल-कानल, भिस्तामे डूबल । जेना कनबाक कोनो बहाना ताकि रहलि होथि । जेना हुनक किछु हेरा गेल हो, खाली-खाली बाँखिये शून्यमे ताकि रहल छलीह । नहि ककरो माए, नहि ककरो पत्नी, नहि ककरो भोजी—किछु त' नहि छलीह ओ—ओहि काल । भोजीक ओहि रूपके देखि पायल कानय लगलीह—अहाँके की भ' गेल भोजी ? की भ' गेल ? बादलक समस्त तन, रोम रोम जेना भोजीसँ प्रश्न क' रहल छल । मुदा, सभटा प्रश्नके अनुत्तरित घुरबैत भोजी चलि गेलीह, बाध हममे । नहि घोक' निकललीह आ फेर ओएह भोजी ! बादल पायलक अवरपर मुस्कीक किरण चमकि गेलैक । सभ केओ जलखै करवालेल बैसलाह । बादल कोनो अवसादमे डूबल चुपचाप भोजीक मुँह देखि रहल छलाह । खिड़की पारसँ सूरजक रक्तिम आभा गुलाबक ठारिसँ छनि-छनि अवैत भोजीक चेहरापर पड़ि रहल छल ! बादल जेना अभिभूत भ' उठल । सिन्दूरी रंगमे डूबल भोजीक तेजोमय सौन्दर्य देखि.....ओकर आँखि एहि महान देवीक समक्ष नमित भ' उठल—'भोजी अहाँ कतेक महान छी, कतेक पवित्र । जतने पवित्रता सूरजक एहि रक्तिम किरणमें अछि, ओतने अहाँक आत्मामे । तखन अहाँ एतेक उदास किएक छी ? एतेक दुखी किएक—?' मुदा बादलक प्रत्येक प्रश्नके भोजी अपन तिलस्मी हँसीसँ बिच्चे पगडंडीमे भटका दैत छलीह । बादल चुपचाप सोचक एकटा नमहर रास्तापर निकलि जाइत छल । ओ एहन बाट छल जाहिमे कतेको भटकाव, कतेको घुरची छल । एहि घुरचीके सोझरयबामे अनेक क्षण मिलि मिनटक स्वरूप लेलक आ अनेक मिनट मिलि घंटा । अचक्के ओकर सोचक ई क्रम टूटि कानमे दूरसँ अवैत कोनो आवाज सुनाय पड़लैक—'की बात छैक बाउ, एना ठाढ़ भ' की सोचि रहल छी ?'

बादल हड़बड़ा गेल—'किछु त' नहि भोजी—किछु नहि ।'

भोजी ओकर बाँहि पकड़ि लेलक 'किछु बात अछि बाउ, अहाँके कथीक सोच अछि ?'

भोजीक प्रश्न सुनि ओ आँखि उठा क' हुनका दिसि तकलक । ओह ! भोजीक ओ नजरि बादलक अंतरके जेना प्रकम्पित क' गेल । ओ चुप नहि रहि सकल—'अहाँके कखनो कखनो की भ' जाइत अछि भोजी ? सभ सुख प्राप्त रहितो भोजी कखनो लगैछ भौतिक सुख उपलब्धि एतेक जयघोषक मध्य जेना अहाँ विराट् शून्यमे हेरा जाइत छी । किएक भोजी किएक ?'

जेना बादलक प्रश्न भोजीक समस्त अस्तित्वके अकझोरि देलक । किछु अकचका क' ओ एकटा निसाँस छोड़लनि । एक तोड़ पानि-बिहारिक बाद बातावरणमे एकटा विचित्र शांति रमि जाइछ, तहिना कतेक काल धरि भोजीक चेहरा सपाट रहल आ पुनः दोसर तोड़ पानि बिहाड़ि उठल । कनेक काल पहिने धरि जे चेहरा सपाट छल, से कतेक मनोभावनासँ भोजि-तीति गेल ।

—भोजी, बाजू ने भोजी ! कोन करणे अहाँ एतेक आत्मपीड़न भोगि रहल छी ? कखनो लगैछ अहाँ एकटा कली छी गुमसुम, चुपचुप ! जखन अहाँ हँसैत छी तँ कली फूल भ' जाइछ । अहाँक संपर्कमे आयल सभ केओ एहि सौरभसँ सुरभित भ' उठैछ । अपन दुःख, अपन पीड़ा बिसरि जाइछ । भयो तँ बजैत छथि जे अहाँक भोजी एकटा 'टॉनिक' छथि, हँसीक 'टॉनिक', सौरभक 'टॉनिक' । आ' फेर लगैछ हुवाक कोनो नीत्र झोक आयल आ फूलक समेटा पंखुरी धूरामे छिड़िया गेल ! फूल-फूल नहि रहैछ, अहाँ-अहाँ नहि रहैत छी ? भोजी, ई कोन बयार थिक—कोन पीड़ा थिक ?—बादल आवेशसँ हाँफ' लागल ।

भोजी ता धरि अपनाके सहज क' लेने छलीह ? किछु बाजबा लेल हुनक अघर खुजल की फोनक घंटी टनटनाय लागल । ओ दोड़लि 'ड्राइंग-रूम' चल गेलीह ! बादलक कानमे भोजीक मद्धिम स्वर पड़ल—'हेलो की हाल छैक ? हम ? जीवैत छी—हँ, जीवैत-जीवैत थाकि गेल छी—हम जीव' नहि चाहैत छी—जीव' नहि चाहैत छी—बड़ कठोर यात्रा अछि एहि जीवनक.....'

बादलक कानमे भोजीक दर्द भरल स्वर घुमरैत रहल । फोनपरके छल ? भोजीके कोन दुःख छनि ? के अछि जकरा दुःख नहि छैक ? ककर जीवन सर्वथा क्लेश, व्यथासँ रिक्त अछि ! मुदा ओहि दुःख, क्लेश, व्यथाके अभिव्यक्त करवाक लेल सभ केओ कोनो-ने-कोनो रूपमे माध्यम ताकि लैत अछि । प्रकृति धरि एहिसँ छटल नहि अछि । आकाशक अन्तरमे की सोच नहि अछि ? कारी-कारी मेघक घनघोर घटा की आकाशक हृदयक व्याकुलताके अभिव्यक्त नहि करैत अछि ? आ' सोचक ई सीमा असीम भ' उठैत अछि,—जखन आकाशक छटपटी एकटा बिजुरी ब, कीधि जाइत अछि ! मेघक ई स्वर.....आकाश जखन अपन वेदनाके सहाजकरबामे असमर्थ भ' जाइछ—तँ वेदनाक ई भीरकार समस्त संसारके कँपा दैत अछि । आकाश तँ सरियो



एतेक कमजोर, एतेक असमर्थ भ' जाइत जे आखिसँ अविरल अश्रुकरण बस' लगैछ। मुदा भोजीकेँ कनितो तँ नहि देखैत छियनि ! सभटा नोर ओ पीबि लेने छथि.....सावत भोजीक खनखनाइत हँसी झाइंग-रुमसँ फेर सुनाइ पड़ल। पर्दा हँटाक' चुपचाप बादल देखलक। मोहल्लाक चारि-पाँचटा छोड़ा भोजीकेँ घेरने—'चाची, सरस्वती पूजाक बंदा चाही—चाची, बिना अहाँक मदतिक कोना भ' सकैछ—'आँटी ओप हमलोगों को सलाह देती रहें—'सभक स्वरक जयमाल पहिरने भोजी मुस्कियाइन रहलीह—'बेस, अहाँ सभ निश्चिन्त रहू, एहि बेर एहि मोहल्लामे एहेन सरस्वती पूजा होयत जेहन कहियो नहि भेल अछि।

—'चाची जिन्दाबाद—आँटी जिन्दाबाद' नाराक संग छोड़ा सभ चल गेल। समयक सागरमे ज्वार-भाटा अवैत रहल आ एक दिन डाकिया चिट्ठी ल' क' आयल। साइकिलक घंटी बजबाक संगे भोजी पागल जकाँ दौड़लीह। डाकिया एकटा लिफाफ द' चल गेल। भोजी छटपटाक' चिट्ठी पढ़' लगलीह। हुनक चेहरापर अबैत-जाइत रंगकेँ खिड़कीसँ बादल चुपचाप देखैत रहल ! तखन बादलक मोनमे हल्लुक सन संदेहक साँप फन काढलक।—ककर चिट्ठी भोजी एतेक प्रेमसँ पढ़ि अपन कोठलीमे ओछाओनतरमे राखि देलनि ? बादलक निः शब्द आँखि भोजीक पाछाँ क' रहल छल। ओकर हृदयमे एकटा आवेग उठल—एकटा बड़कन—ओ शीघ्रतासँ भोजीक कोठलीसँ चिट्ठी निकालि क' ल' आयल ! भोजी भनसा घरमे छलीह। अपन कोठली बंद क' आशंकित मोन आ अभ्यक्त भयक संगे ओ चिट्ठी पढ़' लागल—

'प्रिय नेहा !.....' आ नेहा—भोजीक नामक संबोधन ओकरा कोनादन लगलैक। एहिठाम केओ भोजीक नाम नहि कहैत छलनि। खाली भोजी, चाची, काकी, माँ इएह सभ रूप हुनक छलनि ! खैर, बादल आगाँ बढ़ल—'पत्र, 'अहाँक भावमय पत्र भेटल। हम ओकरा एकबेर दुइ बेर, अनेक बेर पढ़लहुँ। ओह ! कतेक भावमयी अहाँ छी ! लगीछ ईश्वर अहाँकेँ, अहाँक मोन प्राणकेँ कोनो रेशमक मुलायम, सुकुमार, 'मासूम' तारक ताना-बानासँ बुनने अछि, जाहिमे सलोनी पूर्णिमाक स्निग्ध, चन्द्रिकाक रस निचोड़ि राखल.....' ओ पत्र पढ़ैत जाइत छल आ बादलक माथपर आबि रहल छल—भोजीक रहस्य जेना खुजि रहल छल—'एहि मोन-प्राणमे मानसरोवरक हँसक शुभ्रता आ मयूरपंखक

चित्रमयता अछि। कतेक रंग, कतेक सम्मोहन भरि देल गेल अछि अहाँक अन्तरक नीलाभ आकाशमे ? साओनक घटाक करुण कोमल व्याप्ति आ बिजलीक तड़ित लयसँ अपन सपनाक सिंगार कयने छी अहाँ !' बादल अपन हृदयक घड़कन स्वयं सुनि रहल छल। भोजीक प्रत्येक हाव-भाव, एक-एक रहस्य ओकरा रोमांचित क' रहल छल... 'एहि विशाल विश्वमे जाहि ठाम हमरा लेल कोनो विशेष आकर्षण आ सम्मोहन नहि अछि, जाहि ठाम हमरा जीवामे कि मरि जयबामे कोनो अन्तर नहि अछि ओहिठाम अहाँक पत्र एकटा पुलक, एकटा भोरक किरण, एकटा शरदकालीन ओसक चमक आ बसन्ती बयार बनि अबैछ, हम अपन ऊपर रसवंती केतकी वा चमेली वा किछु आरक अनुभूति करैत छी.....' बादलकेँ लगलैक, भाभी कतेक 'फाँड' अछि ? कतेक 'भोला-भाला' कतेक नीरक्षीर सन पावन मुदा असलमे—? ओकरा मोन भेलैक, तुरत भैयाकेँ जाक' पत्र देखा दी। तुरत भोजीसँ पुछी। फेर सोचलक, कने आर आगाँ पढ़ि ली—'अहाँक मोनमे किछु घुमरेत रहैत अछि ! हम बुझैत छी, अहाँ हमरा सँ किछु तुका रहल छी ! अहाँ तँ हमर छोट बहीन सन छी ? अपन भाइपर विश्वास नहि अछि ?' भाइ-बहिन ? बहिन-भाइ ? बादलक दिमाग जेना चक्कर काट' लगलैक... ओकर बनाओल रेतक सभटा रेखा बिहाड़िमे लुप्त भ' गेलैक। ओकर ऊपर साँस जेना नीचाँ आयल ? भोजी-ओह ! कतेक बात ओ सोचि गेल ? जेना भयंकर सपना देखिक' ओ उठल होअय—जेना कोनो अनर्थ होइत-होइत बाँचि गेलैक—'अहाँ हमरा राखी बन्हने छी। तखन अहाँकेँ हमरापर विश्वास नहि अछि ? राखीक अर्थ थिक बहिनक रक्षाक भार !'—बादलक मानस-जेना पानि बरसि आकाश निरभ्र भ' जाइत छैक—एकटा पैघ 'एक्सीडेंट, होइत-होइत—एकटा भयंकर 'ट्रेजेडी' होइत-होइत बचि गेल। मुदा की 'ट्रेजेडी' होइत-होइत बचल ? की भयंकर 'एक्सीडेंट' नहि भ' गेल ? ओहि भाग्यहीन दिवसक रेत बादलक आँखिमे गड़' लागल—एहि तरहक ओझराहटि आ भोजीक पाछाँ बेहाल बादलक प्रकृति एकदम रुझ भ' गेल छल। अपन पढ़ाइ-लिखाइ सभ बिसरि गेल छल ! मेडिकलमे एडमिशन टाकाक तंगीक कारण नहि भ' रहल छलैक ! ओ चुप भ' नियतिक खेल देखि रहल छल। एम्हर भोजीक प्रवचना—हँ, प्रवचने तँ छलीह—दोसर लोक लग कतेक उत्फुल्ल, कतेक उन्मुक्त, कतेक सहज, मुदा अपने घरमे कतेक निराश, कतेक बंदिनी, कतेक दुख। समस्त शहरमे भोजीक बड़ाइ, छोट-पैघ, बूढ़-बेदरा स्त्री-पुरुष



सभ केओ मुक्त कंठे करैत छल ! ओएह भोजी भरल घर, लोक रहितो, कतक असम्पुक्त भ' जाइत छलीह ।

जखन भैयाके कोनो गरजे नहि छनि तँ हम कथी लेल भोजीक पाछा तबाह भेल छी । आ' कॉलेज जयवा लेल बादल तैयार होव' लागल । झाड़ंग रुममे फेर फोनक घंटी टनटना उठल ? आ पुनः भोजीक स्वर स्थिरसँ तीव्र । पुनः एकटा खनखनाइत हँसी.....आ' बादलक कानमे जेना काँच पिघलैत रहल— दस मिनट बीतल, बीस मिनट बीतल—भोजीक गप्पक कतहु अन्त नहि छल— बादलक दिमाग साँय-साँय क' रहल छल ।

ई कोन गप भेल फोनपर ! गप करैत छी, हँसैत जा रहल छी—ई की भेलैक ? हम जलखै करवा लेल ठाढ़ छी, कालेज जाक' पता लगौनाइ अछि आ भोजी—एकटा नम्रहर गपमेडुबल, बात-वातमे ठहाका...गप किछु सुनाइ नहि पडैत छल, मुदा स्वरसँ बादलक समस्त तनमे लहरि फूँक देने छल ! ओ तामसे कालेजदिस विदा भेल..... गेट लग पहुँचल कि भोजी पाछासँ दौड़लि ओकर बाँहि पकड़ि लेलकै—“जलखै क' लिय' बाउ !” —“नहि बड़ अवेर भ' गेल, हमरा कॉलेजमे किछु काज अछि ।” तिकत स्वरे बाजल बादल । ओकर स्वर पर भोजी चौंकि उठलीह !

‘बाउ, अहाँक दुबारे हपहूँ जलखै नहि करब’ किछु अप्रतिभ होइत भोजी बजलीह ।

‘हमरासँ कोन मतलब अछि अहाँके ? अपन जाक' खा लिय’— उपेक्षासँ बादल बाजल ।

‘हम नहि जाय देव, जा घरि अहाँ जलखै नहि करब ।’ वासी मुँह हम नहि जाय देव—भोजी ओकर बाँहि घिचने मनसा घर दिस ल' जाय लगलीह ।

‘हम एक बेर कहि देलहुँ, नहि खायब’ ।

अपन जगहपर अडिग छल ओ । भोजीक लेल बादलक ई रूप अकल्पनीय छल, अकथनीय छल । ओ अवाक् छलीह ! वेदनाक एकटा ज्वार हुनका आँखिमे उठल, मुदा तुरते अपन कौशलसँ ओहि ज्वारके उपेक्षित क' देलनि । एकटा दर्द भरल मुस्कीक संग बजनीह—‘हे यी, केओ किछु कहि देने अछि ? अहाँ

एना किएक क' रहल छी ? हमरा सँ कोनो गलती भेल अछि ? की बात अछि ? चल् हमरा भूख लागि गेल अछि रविक प्रात थिक ।’

‘रविक प्रात...जा क' अहाँ खा लिय’ ? हमरा की कहैत छी—एतेक कालसँ जे अहाँ निहोरा करवा रहल छी एतेकमे त' अहाँ कैक बेर खा लिउहुँ ।’ बादलक सभ उपेक्षाके अनदेखल सन क' भोजी कहैत रहलीह—‘हम अहाँ बिना खाइत छी ?’ अनुनय करैत बजलीह । बादलके विवेक जेना कतहु हेरा गेल छल—‘एतेक बहाना नहि कर भोजी ! अहाँके हम खूब चीन्है छी ।’

‘बा...द...ल...’ बादलक विद्रूप हँसीसँ भोजी जेना विवश भ' गेलीह ।

‘अहाँ अपनाके की बुझैत छी ? छोड़ू हमर हाथ !’

‘बादल...! भोजीक हाथ ओकर गट्टा पर आर मजगूत भ' गेल ।’

‘की बात छैक बादल जी ? अहाँके...’

बादलके जेना अपन होश हवास पर कोनो कब्जा नहि रहलैक—‘नहि छोड़व ? त' लिय’...!’ भोजीक हाथ बामा हाथसँ कसि क' मोचड़ि देलक— अपन हाथ उन्मुक्त क' लेलक । भोजीक मुँहसँ एकटा पीड़ा निकलल ‘ओह !’ आ हुनक सौँसे चेहरा रक्तम भ' गेल । बादलके की भ' गेल छैक ?

‘ई कुहरब काहरब नकल हमरा लग किछु नहि चलत ।’ बादल क्रोधावेशमे माहुर भ' गेल छल—ओकर कंठ स्वर सौँसे आगनके प्रकम्पित क' रहल छल—ओ बिसरि गेल छल, हमर ई भोजी थिकीह, कोमल मसृण ओस सन मातृ तुल्य—ओ भैया छथि जे वदाँस्त करैत छथि । हमरा सभ—आ आवेशसँ ओकर स्वर रुद्ध भ' गेलैक ।

‘अहाँ की करितहुँ ?’ भोजी पुछैत रहलीह ।

‘हम—? पूछू, की नहि करितहुँ ? आन आन लोक संग टेन्नीफोन पर एतेक हँसी, एतेक ठट्ठा—भैया नहि जनैत छथि ते' ने ? अहाँ भैयाक आँखिमे घूरा नहि झोंकेत छी की ?—अहाँ अपनाके...’

तावत बादलक गालपर पाछासँ दू-चारि चाट लागल—‘बदतमीज बेहाया,



अपन मातुतुल्य भोजीसँ उकटा पँची क' रहल छें ? कोम्हर दनसँ भैया आवि गेल छलाह । थापड़ लगिते बादलक आँखिमे तरेगन नाचि गेलैक । बीचमे भैयाक हाथ पकड़ि भोजी बाजि उठलीह—'ई की करैत छी ? बेटा सन छोट भाइ पर हाथ उठबैत छी' ?

'जे बेटा अपन माए पर कलंक लगवैक ओहि बेटासँ बेटा नहि रहनाइ नीक थिक ।'

मुदा बादल, ओकर दिमाग जेना पगला गेल छल—'भैया, अहाँ भोजीसँ पूछू । एखन किछु काल पहिने ओ फोन पर ककरासँ हँसि-हँसि गप्प करैत छलीह' ?

'अरे निर्लज्ज, मोन होइछ जाहि जुबानसँ ई प्रश्न निकलल, ओहि जुबानकेँ पकड़ि क' खींचि ली'.....।

'अहाँ के हमर सम्पत थिक । आव अहाँ शान्त भ' जाउ । हमरा बेटा नहि अछि । हम बादलकेँ बेटासँ बड़ि क' मानैत छी । बेटा माएके किछु कहैत छैक त' ओ कलंक नहि होइत छैक ।' आ भोजी फफकि-फफकि कान' लगलीह । मुदा, भैया तमसायले स्वरमे बाज' लगलाह— 'किछु काल पहिने तोहर भोजी हमरेसँ गप्प करैत छलीह । बुझलही, खाली तोहर विषयमे' !

बादल अवाक् छल । 'कहैत छलहु तोहर भोजी जे मेडिकल कॉलेजमे जेना होयत बीआर नाम अवश्य लिखायब । कम्पिटेशनमे नहि अयला त' की होयतैक ? जेना होयत, हम सभ टाका-पैसाक इतिजाम क' हुनका डॉक्टर बनायब ।'

भैया बात पीसैत एक-एक शब्दपर जोर दैत बजैत रहलाह । 'हम कहलियनि एतेक टाकाक इतिजाम मुश्किल अछि ! तोहर भोजी की जबाब देलकी से बुझलही ?—अहाँक बैंक में पाँच हजार जमा अछिए । हमर गहना जेबट बन्हीकी राखि दस हजारसँ उपर भ' जायत । हम कतेक विरोध कयलहुँ जे बन्हीकी नहि लगायब । अहाँक गहना पर हमर कोन अधिकार अछि ? मुदा हमर सभ बातकेँ ओ हँसैत-हँसैत काटि देलनि—नाम लिखयबामे मात्र दुइए दिन बाँचल छै ! हम सभ गप्प क' रहल छी बंधकी लगयबा लेल ! एखन तुरन्त

अहाँ चल आउ—।' भैयाक गर बोझिल भ' गेलनि ।... 'आ एहिठाम तो'— बड़ नीक प्रतिदान प्रेमक दैत छलाह ? तो ठीके पैघ आदमी बनबह ।

आ बादलकेँ काटू त' खुन नहि । रेतक ढेर...ढेर बिरडो ओकर आँखि काम, नाकमे भरि गेल हो आ बादलक दम अना रहल हो, घुटि रहल हो.....

'बाउ, चलू जलखँ करबा लेल'

—ओएह स्नेहिल स्पर्श.....





## एकटा आकाश

अभिधाक मोनमे एकटा बिरडो बहल। सीपीक एक-एक आखर ओकरा मोन पड़ि अयलैक—‘स्त्रीक आकाश ओकर घरक छत होइछ जे मात्र पति व’ सकैछ……

अभिधाक आँखि आकाश दिप उठल मुदा ओकर अन्तरमे पुनः बिरडो चल’ लागल आ सीसे आकाश मेलछाँह भ’ गेल। बिरडोक तीव्र गतिमे अभिधा एकटा खड़िका जकाँ उड़ि विस्मृतिक कोरमे खसि पड़लीह……

ओहो एकटा सपना देखने छलीह, एकटा छतक। अपन इच्छा, कामनाक देवालसँ महल बनौने छलीह एकटा छतक। मुदा ओ सपना छल, आँखि खुजल आ निम्न टूटि गेल।

जवन सपनाक देवाल खस’ लगलै तँ ईंट-पाथरक तरमे दबल स्वयंके बड़ असहाय बुझैत छलीह। एक दिन सीपी अपन नेना सभकेँ ल’ अभिधा लग अयलीह। ओकर नेना सभक मध्य विहुँसैत अभिधा अपन सभ दुःख बिसरि जाइत छलीह। सीपीक नेनासभ तंग कर’ लगलैक—हम सभ एखन मौसी लग रहब आ सीपीक नेनासभक आग्रह देखि ओहिठाम ओकरा सभकेँ छोड़ि चलि अयलीह।

ओहि राति नेना सभ सपनाक खसल देवालक एक-एक ईंटकेँ हँटा देलक ओ अभिधाक करेजमे कोनो कचोट जकाँ उठैछ। अपन ‘बेड-रूम’क खिड़की खोलैत छलीह तँ खिड़कीक भीतर आकाश आबि ओकर आँखिक आगाँ बैसि जाइत छल। ओ कखनो खिड़की बन्द नहि करैत छलीह। शीतांशुकेँ देखिते ओकरा लगैत छल जेना सपनाक भव्य महल ओकरा समझ साकार भ’ गेलैक। ओहि काल अभिधाक परीक्षा चलैत छलैक मुदा शीतांशुकेँ निहारैत सभ बिसरि जाइत छलीह।…… आ’ एक दिन शीतांशु पितृहीना अभिधाक माएकेँ जोति अभिधाकेँ द्यूशन पढ़यवा ले’ आब’ लागल।

आकाशमे बड़ जोर बिरडो उठि गेलैक। अभिधा शीतांशुक कोठलीमे छलीह। शीतांशु समटा खिड़की केबाड़ बन्द क’ लेलक। बिरडो शांत भेल,

शीतांशु क्षमा मांगि चल गेल जे एहि रहस्यकेँ केओ बूझैक नहि। अभिधा एहि रहस्यकेँ पेटमे रखने रहलीह। रहस्य पेटमे बड़ लागल, बड़ैत-बड़ैत अपने खुजि गेल। माए ओकर दुर्गंजन क’ राखि देलकैक। तखन जे अस्पतालसँ घुसलीह त’ डॉक्टर कहलक जे आब कहियो माए नहि बनि सकतीह।

आ’ शीतांशु जे क्षमा मांगि क’ गेल से कहियो केओ ओकरा नहि देखलक—आब अभिधा बुझैत छलीह जे हुमर बियाह कयनाइ व्यर्थ। हम ककरो वंश वृद्धि नहि क’ सकैत छी। ओकर सपनाक महल हरबराक’ खसि पड़ल आ ओकरा जिगगी भरि ओहि महलक ईंट पाथर तर रहवाक छल।

दोसर दिन सीपीक नेना सभ तंग कर’ लगलैक—‘मौसी बाजार चलू।’ अभिधा बड़ उछाहक संग सभ नेनाकेँ बाजारमे खेलौनाक दोकान पर ल’ गेलीह। रंग-बिरंगी खेलौना चारू दिस पसरल आ अभिधाक करेजमे एकटा चोट लगलैक—हमहँ त’ आब एहि खेलौना सन छी, एकदम व्यर्थ आ तखने भेटल छल ओकरा प्रतीक—

‘अरे, अभिधा! अहाँ एत’…… ?

अभिधा चाँकि उठल छलीह प्रतीककेँ देखि। ओकर बाल्य कालक संगी।

‘प्रतीक अहाँ एत’……?’

प्रतीक हँसि पड़ल—‘हँ, हम औफिसक काजसँ एहिठाम एक मास लेल आयल छी—ई अहाँक बच्चा सभ थिक ? बड़ हँसमुख अछि।’

‘हुमर बच्चा—’ उसांसक सिहकीसँ सिहरैत स्वरमे बजलीह ओ ‘हँ हुमर बच्चा, अर्थात् बच्चे जकाँ—चलू, लगेमे हुमर घर अछि। एहिठाम गप्प काबनाइ ठीक नहि। अभिधा बजलीह—आ नेना सभकेँ खेलौना किना क’ हुनू मोडए घुरि गेलीह।

अभिधाक सून घर, सूत देवाल देखि प्रतीक पुछि बँसल—‘अहाँ एकसरे रहैत छी की ?’

प्रतीकक अभिप्राय वृद्धि अभिधा बाजि उठलीह ‘हम एहिठाम एकटा कलामीने स्टोरी छी। बेस, छोड़ू एखन ई सभ गप्प। पहिने अहाँ अपन कहू। कते’ छी ? कतियाँ कत’ छथि ? कँक टा बाल बच्चा अछि ?



‘रुकू-रुकू अभिधा, अहाँक प्रश्नक झड़ीमे हम नहा गेल छी—’ प्रतीकक आकृति पर उदासीक संख्या पसरि गेल। ‘अभिधा, हम एहि संसारक प्रायः सभसँ अभागल जाय छी। प्रिया रुसि क’ चल गेलीह। हँ, ओकरा टी० बी० भ’ गेल छलैक। बियाहक बाद कोहुना क’ ४-५ वर्ष हम ओकर सग पावि सकलहुँ.....’ आ अभिधाक समस्त तन समस्त चेतना जेना सहस्र कान बनि एहि वात्तिके आरमसात् कर’ लगलैक—अभिधा, ओ देवी छलीह, तखन हम एम० ए० पास क’ एकटा स्कूलमे शिक्षक छलहुँ। कतेक तगीस हमर सभक गृहस्थी चलैत छल। देह तोर महंगी जे नीक-नीक लोककेँ मारि देलक ताहिठाम एकटा मामूली मास्टरक कोन गिनती। माय-बापक ओ दुलार बेटी मुदा कतेक दुःख दैन्य कतेक मानसिक पीड़ा सहि ओ रहलीह। ई मानसिक पीड़ा तनकेँ अग्नियोसँ बेशी डाहि क’ राखि दैत अछि। जारनिक आगि मानव सहि सकैत अछि मुदा हृदयक आगि.....? ओकरा एकेटा इच्छा छलैक जे हमरा औफिसरक रूपमे देखय। कहियो कोनो वस्तुक मांग, ककरो कोनो शिकाइत हमरा लग नहि कयलक मुदा ओकर निशानी चारि वर्षक रजत आ छवो वर्षक कविता हमर जिनगी, हमर साँस बनि क’ रहि गेल। आव हम परिस्थितिक आगू स्वयंकेँ समर्पित क’ देने छी। हम फर्स्ट क्लास अफसर छी। दूनु तेना के उत्तम वस्त्र, उत्तम स्कूल उत्तम रहन-सहनक व्यवस्था क’ देने छियैक मुदा, हमरा एतेक समय कत’ जे हम अपन स्नेह आ प्रेमक बरखा ओकरा सभपर क’ सकी, जकर कि एखन ओकरा सभकेँ बड़ आवश्यकता छैक।

आ अभिधाक दूनु नयन डबडबा उठल। ओह। ई संसारे दुःखी आत्मा सँ भरल अछि। प्रतीक, भगवान ककरो छोड़ने नहि छथिन। हम नहि बुझि सकैत छी जे एतेक सुख, एतेक वैभव विलास देवाक संगे ईश्वर एतेक दुख, एतेक घुटन, एतेक वैकल्य ल’ मानव अन्तरक निर्माण किएक क’ दैत छथि? सत्ते हुनका मोनमे कत्तहु ममता नहि छनि ककरो प्रति।

‘अभिधा की अहाँकेँ भगवानपर विश्वास नहि अछि। की अहाँ मंदिर-देवता किछु नहि मानैत छी?’

‘प्रतीक मंदिर गेनाय हमरा नीक लगैत अछि मुदा, कोनो अनुष्ठान लेल नहि। ओहि लेल हम कहियो नहि गेलहुँ। माल शांति लेल, शांतिक संघय लेल। मोनकेँ चुपचाप धी देवाक लेल। सत्ते कहैत छी प्रतीक। परमात्मा

आजी बुजी लोकक कल्पना अछि। जे दुखी एवं संतप्त लोककेँ वृत्तयवा लेल स्थान जाय। ई परमात्मा एकटा भयंकर असह्य थीक, जकरा मानव निष्प्रयोजन बनन पाये जाइछ।’

‘अभिधा—अभिधा.....’—प्रतीक जेना स्वप्न, हतवाक् रहि गेल।.....  
ई आकाश अभिधा भिक जकर अवरक डारि परसँ कहियो स्मितक फूल मुरझाइत नहि गेल, ओकर सिगरहारी हँसी देखि कतेको कविता बनि जाइत छल.....

मुट्ठी भरि सिडरहार

छिड़िआयल चारू कात

‘आ, आव अभिधा, नास्तिक अभिधा, दुखी अभिधा, अहाँकेँ की भेल अछि?’

‘प्रतीक, नारी स्वयं एकटा बुझीअलि थीक आ स्वयं उत्तरो। प्रश्न उत्तरक रूपमे कठिन अछिये, उत्तरो कम दुष्कर नहि। हमर हृदय कोनो चोटक जखम तन जाक, मुदा हम स्वयं नहि कहि सकैत छी जे ई केहेन चोट थिक। प्रतीक, मोनक विह्वल क’ देने अछि। हृदयमे एकटा हलचल अछि। जखन सन भोल, अतवा गूढ़। सरल एतेक जेना सोन जूहीक कली, आ जखन तेना ओहि कलीसँ चोट लागि गेल हो आ व्यथासँ तन प्राण भरि अछि। मोनमाक आँखि कोनो सुदूर अतीतमे अँटक गेल। आँखिक जखम कोनो दिन मधमली सपना-सन जग-मग कर’ लागल मुदा लगले ओ जखम तन ममतामे बदलि गेल—

‘प्रतीक, ओकरा हम देखलहुँ तँ लागल जे हम हुनका लेल युगसँ, कल्पसँ प्रार्थना करैत छलहुँ। शीतांशु ओस-भीजल गुलाब-सन कविता हमरा दैत छल आ’ जखन जखन गगनमे बिहूसल सोन जूही ताराकेँ देखि प्रभुदित होइत छल। आ अभिधाक नयनसँ दू वृन्म नोर खसि ओकर पियासल गालकेँ तृप्त करैत छल। जखन जखन ओ मोन भ’ रहलीह, जेना वेदना अपन मूक संगीत बनैत जखन जखन राखि दैत हो।

‘प्रतीक, ओकरा हम देखलहुँ तँ लागल जे हम हुनका लेल युगसँ, कल्पसँ प्रार्थना करैत छलहुँ। शीतांशु ओस-भीजल गुलाबक खेतीक कारण ओ नहि, केओ कारण अछि। बुबा तखन धरि बड़ अवेर भ’ गेल छल। आ’ आव हम बैसि जखन जखन क’ रहल छी। रोज राति शीतांशुक नाम एकटा पत्र लिखैत छलहुँ।



बड़ी काल धरि ओकरा पढ़ैत छलहुँ । हमर आंगुर शीतांशुकेँ ओहि अक्षर, शब्द पँक्तिमे बन्हैत रहल आ हम निनिमेष ओकर रूपकेँ ओहि सभमे तकैत रहलहुँ । मुदा, उषाक आँचरसँ लालिमा झड़बाक संगे हम ओहि पत्रकेँ दू खंड क' दैत छलहुँ । हम स्वयंकेँ दू खण्ड क' देने छलहुँ । एकटा खंड हम स्वयं छलहुँ जे ओहि पत्रकेँ लिखैत छल, दोसर खंड शीतांशु छल जे ओकरा पढ़ैत छल ।

निष्पंद, निर्वाक प्रतीक बैसल रहल । अभिधा साकार वेदना बनल छलीह...प्रतीक, हम समर्पित, विह्वल, एकोन्मुख । आहत मोन चाहसँ भरि उठल । एतेक पैघ प्रवचना हमरा छलि गेल । हम त' 'आखाड़क' एक दिनक 'मल्लिका' बनि जीवनक सभ सुख आत्मसात क' लिखलहुँ, मुदा ओ.....ओ हमरा कतोक नहि रखलक । हमरा सभटा स्मरण होइछ आ हम बिखरि जाइत छी । हमर व्यथा एकटा अर्थहीन ट्रेजेडी बनि क' रहि गेल । व्यथा मुजन करैछ, मुदा हमर व्यथा वाँझ रहि गेल । '...आ अभिधा हिचकि-हिचकि कानि उठलीह । कतेको क्षण धरि ओ ठेहनमे मूड़ी गाड़ने कनैत रहलीह ।

'अभिधा !'—प्रतीकक स्नेहिल स्पर्श, ओकर पीठपर माथपर आशीर्वादी हँसोयैत रहल—'बस, एतबेमे अहाँ घबड़ा गेलहुँ ? अहाँक समक्ष समस्त जिनगी विस्तृत गगन जकाँ परसल अछि, ओहिठामक स्वर्णिम तारा चानीक चान—सभटा त' अहाँक थीक । जे चुनी, जे ग्रहण करी, ई त' अहाँक.....'

—'नहि-नहि प्रतीक ।' आवेशसँ मूड़ी झटकारैत बजलीह अभिधा 'एतबे नहि, एतबे नहि, आब हम कहियो माए नहि बनि सकैत छी...कहियो माए नहि बनि सकैत छी । हमराकेँ ग्रहण करत ? हमर ममता सून रहि गेल । हमर वात्सल्य सिसकैत रहि गेल'—आक्रोश क' उठलीह ओ ।

—'अहाँ शान्त रहू, घैर्य राखू—' आ तखन प्रतीक अभिधाकेँ अपना ओहिठाम ल' गेल । अभिधा, कविता आ रजत—तीनूमे दोस्ती भ' गेलैक । आफिसक बाद अभिधाक बहुत समय ओहि दूनु नेनाक संग बीत' लगलैक । एक दिन कविता फरमाइश कयलक—'अंटी, एकटा खिस्सा कहियोक ।' 'हँ-हँ अंटी ।' रजत समर्थनमे कहि बैसलैक—'हमरा सभकेँ केओ खिस्सा नहि कहैछ । खाली किताबे टामे पढ़ैत छी । परीवाला खिस्सा, राक्षसक नहि । राक्षससँ डर लगैत अछि ।'

'बेटा, राक्षससँ डेरायब त' मर्द कोना बनब ? अहाँ भारतक सन्तान थिकहुँ, जत' अनेको शूर वीर जन्म ल' राक्षसक घच कटने अछि ।'

'अंटी, अहाँ कहियो राक्षसकेँ देखने छियैक ?' विच्चेमे बात कटैत रजत पूछि बैसल ।

'बाँसल कोठलीमे काज करैत प्रतीक हँसि पड़ल ।...बेटा हम देखने त' नहि छियैक, मुदा राक्षस आ देवता कतहुँ बाहर नहि रहैत छैक । हमरा मोनमे जे सत् असत् भावना अछि, ओहिमे सत् ईश्वर थिक, असत् राक्षस ।' ओह । बिस्मय कहियोक अंटी । '...कविता भूमिकासँ विकल भ' उठलीह ।

'एकटा परी छलि । विजन विपिनक प्रसून-सन खिल-खिलाइत ।...' आभासक स्वर जल तरंग सन प्रतीकक कानमे किछु गढ़ैत रहल ।—'ओ एतेक धन पनक मसुण छलीह.....'

'जतेक अहाँ ।' कविता बाजि उठलीह । आ तीनूक मिश्रित हँसी प्रतीकक कागमे किछु गबैत रहल । 'ओकरा काज करबामे मोन नहि लगलैक । 'बाबू मे, हम अहाँकेँ मम्मी कहौ ?' रजत दोहराइत रहल आ नहि जानि कान पीपुष धाराक आवेगमे डोर्लैत अभिधा रजतकेँ कसि क' अपन छातीसँ सटा केननि । 'बेटा...' बाजि उठलीह अभिधा । ओकरा लगलैक जे ओकर आकाश बाद पलछीह नहि रहलैक, साफ भेल जा रहल छलैक ! क्षण भरिमे ओकरा जखन जखन हायबाक ओ घटना मोन पड़ि अयलैक । एक साँझ जखन सभ केओ आफिससँ अपन-अपन घर चलि गेल, अभिधा एखन धरि कोनो चिट्ठी टाइप क' नहि छलीह । तखन ओकर ऑफिसर अजय बाबूक व्यवहार ओकरा संग...?

बाबू बिससँ केवाड़ बंद करैत अजयबाबू बजलाह—अहाँ जनैत छी नहि, हमरा भी काज अछि ? हम सोचैत छी अहाँ एतेक अवोध नहि छी ।

अभिधाक सर्वांग पीपरक पात जकाँ थर-थर काँपि रहल छल—हमरा जाय किन ? आ ओ शराबी नीच अजय बाबूक बाँहिसँ पिछड़ि, दैवी शक्ति बले पड़्यबामे लगल भ' गेलीह । ओहि दिन तँ ओहि पशुसँ बचि ओ चलि अयलीह मुदा, मोन मे नकले एकटा भिचारक बिजली चमकि उठल—स्त्रीक आकाश ओकर छत होइत छी जे मात्र पति द' सकैत अछि ।—ओ कसिक' रजतकेँ पकड़ने छलीह । ओकर आँधिसँ अदिरल अश्रुधार प्रवाहित होइत रहल—प्रतीक देखैत छल । ओकर भीन अभिधा लेल कतेक इन्द्रधनुष बना देलक । ओकर मानस जखन अभिधाक उज्ज्वल जानन समक' लागल । ओकर मुँहपर कर्तकक कालिमा नहि छल । ओकरा मोन पड़ल जखन शीतांशुक रूपोलुपताक



વિષયમે અભિધા કહને છલીહ, પ્રતીક પુછને છલ... 'અભિધા, સીતાક જાહિ રૂપક આગિમે રાવળક સમસ્ત તન છાડર મ' ગેલૈક ઓ નારીક રૂપ કી થીક ? કવિ કહેત છથિ—રૂપક પિયાસ ! હૈ કોન પિયાસ થીક ? પાનિ દેખિ પિયાસ નહિ લગેત અછિ, મુદા, રૂપ દેખિ પિયાસ કિએક લગેત અછિ ?'

—'સત્તે વંહેત છી પ્રતીક, નારીક રૂપ એકટા અમ થીક, એકટા મયંકર મુગ મરીચિકા.....'

—'છાહરિકે' માનવ બુદ્ધિ પકડનાહ અમ થીક, મુદા રૂપ ત' કોનો વસ્તુક છાહરિ નહિ થીક !'

—'જાહિ દિન માનવ બુદ્ધિ જાયત જે રૂપો માનવક છાહરિ થીક તાહિ દિન સત્ય સ્નેહક મુઢતા બુદ્ધિ જાયત । એહિ સૃષ્ટિક નિર્માણમે સમસ્ત િષ સહયોગી કિછુ થીક તં નારીક રૂપ । એહી રૂપસં આકર્ષિત મ' એહિ સુખમય સૃષ્ટિક નિર્માણ હોઇછ । આહ સાહિત્ય આ કાવ્યક આકર્ષણ નારિયે થીક । મુદા, નારીક બાલ રૂપ પુરુષક મોનમે વસન્તક માલકતા નહિ અનેછ । તેં યદિ નારીક રૂપસં આકર્ષિત મ' પુરુષ મર્યાદિત ઢંગસં કિછુ ક' દેખયવાક સામર્થ્ય રહેછ તં ઓ અપૂર્વ સુન્દરતાક શૃંગાર કરેછ ।

—'ઓહ ! કત' વાસના, કત' પ્રેમ ? અહાં દુનૂકકે' એકે ઢંટીમે.....'

—'દેખૂ પ્રતીક, હમ દુનૂકે' જોખિ નહિ રહલ છી । ઇંજિનક જે શક્તિ ઓકરા આગૂ ત' જાઇછ, ઓએહ ઓકરા પાછાં ધકેલિ સકેછ ।'

આ' અભિધાકે' જેના હોશ અચલૈક । વેમુધિક સંસારસં ઓકર આંખિ ખુજલૈક ત' પ્રતીક ઠાઢુ છલ । નિમિષ માત્રક લેલ દુનૂક આંખિ એક દોસરાકે' વહુત કિછુ કહિ વરમાલા પહિરા દેલક । પ્રતીક કહને છલ... 'સંધ્યાક પસરલ ઉવાસીમે કોનો વિરહિણી તુલસી લગ દીપ લેસિ માથ ડુકા લેત અછિ ત' નોર દીપ લગ ટપ્પ દ' યસિ પડેત અછિ, વ્યથાગિનસં તપ્ત । અભિધા, જિનગી ક્ષણસં બનેત અછિ વર્ષસં નહિ । અવધિ જીવન નહિ થીક, મુદા જે ક્ષણ જીવિ જાઇત અછિ, ઓએહ જિનગી થીક—જાહિમે સાંસક ગતિ તીવ્ર મ' જાઇત અછિ, આન કિછુ નહિ, માત્ર ભાવના વિશેષ રહિ જાઇછ । હૃદય એક અસ્પષ્ટ મથુર નાદસં ગુંજિત મ' હડેછ । હમ અહાં એક દોસરાક પ્રતિ આકુળ નહિ છી, મુદા સમર્પિત છી...'

આ સતે અભિધાક મોન ફૂલ સન હલ્લુક મ' ગેલૈક...સ્વાતીક બુદ્ધિ યસિને થીપીક મુઢુ જુજિ ગેલૈક...વરખાક બુદ્ધિ મોતી બનિ ગેલૈક । ઓકરા બુદ્ધિ પકડીક જે પ્રતીકક એક-એક વાત ઓકર મોનક અસંખ્ય સીપીમે જાય મોતીક રૂપ ધારણ ક' લેલકેક । હૃદય જેના સ્વયં ઓકર એક-એક વાતકે' અપન કક્ષમે સજાય પાનિ મેલક ।

આકાશમે સઘન મેઘ લાગલ રહિતો અભિધા જેના કોનો હિન્દ્રધનુષ તાક' નામલીમ । આસ્તે-આસ્તે જાન દેખાહ પડ' લાગલ, કલિમા બિલા ગેલ । પ્રતીકક આશાનિ પર અપૂર્વ આલોક પસરિ ગેલ । એકટા વિશ્વાસક સંગ સમય સસરિ ગેલ.....





## सिसकत अन्हार

अनुरागक हृदय अन्हारिया रातिक आँचरमे मुका गेल छल । लगैत अछि ई अन्हार हमर जीवनक गहन तिमिरपर हँसि रहल होय—कारी आकाशमे अबरखी खंड सन छिटकैत ताराक आवरण पहिरि रजनी निर्भय भ' उठल छलीह—एकटा उच्छवास अनुरागक अंतरसँ निकलि ओहि शून्यमे बिलीन भ' गेल—भोर होइत अन्हार खतम भ' जाइत अछि मुदा, हमर जीवनक अन्हारकें कोनो प्रात नहि कोनो स्वर्णिम अक्षयि उषा नहि—प्रत्येक मानवक हृदयमे एकटा पीड़ामय संसार होइत अछि आ अपन एहि वेदनामय संसारमे ओ कतेक असगर—कतेक असहाय होइत अछि—ई की भ' गेल कुहकें—हरदम कोनो सोचमे डूबल—कोनो गुनघुनमे पड़ल मामूली ज्वर-बोखार-डाक्टर बाजल—दू-चारिदिनमे उतरि जेतैक । मुदा आइ पन्द्रह बीस दिन भ' गेलैक—जेना कोनो घुन लागि गेल होय—नापल जोखल शब्द ओकर मुँहसँ बहराइत अछि आ बजैत बजैत आगुक बात बिसरि जाइत अछि । कखनो भीत हिरणी जकाँ आँखि हमर चेहरा पर रखैत अछि—हमर कलेजा कटि जाइत अछि व्यथासँ—कोन प्रलयकारी घटना ओकर आँखिमे नचैत रहैत अछि । ओकरा प्रसन्न करबामे हमर प्राण सद्विचन आंतुर रहैत अछि—मुदा—हम जहिना-जहिना ओकरा समेटैत छी ओ बिखरि जाइत अछि । आँखि ओकरा कोन वस्तुक दुःख अछि—?

दुःख.....? अनुरागक माथक नस जेना छिटकि काँपय लगलैक । आस्तेसँ अपन माथ दून हाथमे राखि देलक—कतेक बेर कुहसँ पुछैत छी मुदा—उत्तर—‘कोनो दुःख नहि’ बस हमर सभ उत्तर हुनक अघरपर—‘टेप’ भेल अछि । काल्हि आयल छलीह श्रद्धा—श्रद्धा अनुरागक पड़ोसिन बाल्यबालक संगिनी—आ अनुक भावना दोसर करोट लेलक—आँखिमे मेघक एक खंड घुमड़ि गेल—श्रद्धा सहोदर बहिनक अभावक पूर्ति छलीह—श्रद्धा—

—कतेक धूमधामसँ ओकर वियाह कयलहुँ मुदा ओ विधवा भ' बैसि रहलीह—एकटा बाल-विधवा जे अपन पतिक स्पर्श मात्र पाणिग्रहण बाल कयने होअय । कुमारी विधवा जे अहीवातीक अर्थ धरि बुझि नहि सकल । एकटा एहन वृक्ष जाहिमे कोनो क्षण फल लागि सकैत अछि मुदा.....अनुरागक आँखिमे एकटा अतीतक

क्षण कमकि गेल...बाल्यकालमे दून गोटे चोरा-नुक्की खेलाइत छलहुँ । श्रद्धा बोझि हमरा पकड़ैत छलीह । खेल-खेलमे लड़ाय भ' गेल । हमर पयरमे ठेस लागि गेल छल । शोणितक रेत चंल' लागल । श्रद्धा खूब हँस' लगलीह । झगड़ा तँ भेल छल—हम एक चटकन तामसे ओकरा गाल पर द' देने छलहुँ । ओ कनेत कनेत भागि गेल । हम दौड़लहुँ माए लग । माए तँ शोणित देखिते जेना व्याकुल भ' गेल—असगर बेटा—बाबूजी मृत्यु उपरान्त माए हमरा अनमोल निधि भग साँठिक' रखैत छलीह...ओ चट द' डेटोलेसँ साफ क' चेयड़ा डाहि क' आंगुर पर साँठि देलक कि तावत श्रद्धा कनेत पहुँचल छलीह । आव हमरा होश आयल । हमर आंगुरक छाप ओकरा गालपर ओहिना छल जेना कोनो पहाड़ पर पसरल एकपेरिया । तावत चाची—श्रद्धाक माएकेँ हम चाची कहैत छलहुँ—‘चाचि डाँट’ लगलीह—खाली कानब—बेर-कुवेर किछु नहि बुझैत छैक । देखैत गलि छी भैयाकेँ कतेक शोणित बहि रहल छैक—

हँ, भैया—ठैया—हमरा मारलक से किछु नहि...आ' ठुनकैत ठुनकैत आँखिठामसँ बलि गेलीह । हमरा बड़ममत उमड़ि गेल । कनेक कालमे ओकरा तर्कैत-तर्कैत ओकर आँगन गेलहुँ । ओ अपन ओछाओनपर सूतल—एहि आँखिक नोर आँखि आँखिमे जाइत छल—श्रद्धा-श्रद्धा हम ओकर केशमे आंगुर आँसराव' लगायलहुँ—हँ हँ कहैत ओ दोसर करोट घुरि गेल—हमर बुधियारि बहीन लोक आँखि पर तमसाइत अछि जकरा सभसँ बेसी मानैत अछि आ अहाँ तँ.....

हमरा सभसँ बेसी मानैत छी नै ?

मनककेँ श्रद्धा उठिकेँ बैसि रहलीह हमरा हँसियो लागि गेल छल—

सभ दिन एहिना मानव नै ?

हँ, हँ, श्रद्धा सभदिन-सभदिन—अपन तरह्य हमर आगु पसारैत बाजल—‘पक्का’ ओकर तरह्यथी पर अपन विश्वासक तरह्यथी रखैत हम भावमय भ' गेल छल । ‘पक्का बहीन, पक्का’—आ ओ श्रद्धा हमर आत्माक अंश ओकर ई हाल ? कोन क्षण सजा क' हम ओकरा अपन समक्ष अनैत छी सभ वेढँग-व्यर्थ, कुरूप अपन अछि मुदा ओ जखन कल्पामयी बहीनक रूपमे अबैत अछि तँ हमर जन्म सँ सँ जाइत अछि । ओ बहीन नहि अशेष आत्मा अछि—पजरैत आगिक आँखि जगजगतीक छोट छीन पातर धूआँ पवित्र पावन—श्रद्धाक सासुरसँ



एना आइ बीस दिन भ' गेल । समय-नदीक कतेक पानि बहि गेल ।

—चौकि अनुराग आकाश दिसि तकलक । एकटा अरुणामा आकाशमे मुस्काइत जाइत छल । घड़ी दिसि देखलक छबो बजैत छल—सौसे राति आँखिमे बीति गेल । निसाँस जोना पिंजड़ासँ फड़फड़ा क' बाहर निकल्लि गेल !—

—आ कुहू अपन ओछाओन पर चुपचाप पड़ल छलीह । ओकरा लगैत छलैक जे ई ओछाओन नहि ईसामसीक 'कास' थीक जाहिमे ओ ठोकायल अछि । ककरो रेडियोसँ कोनो करुण गीत अबैत छलैक... 'जीयेंगे मगर मुस्कुरा न सकेंगे कि अब जिन्दगी में मुहब्बत नहीं है...' सत्ते, हमर जिनगीमे आव की बाँचल—रहि रहि अपन संगी गंधाक बात कुहूक मोन पर छेनी भारैत छल—कुहू अटाँ किछु नहि जनैत छी—अनुराग आ श्रद्धाक संग एखन रंग अनने अछि ।

श्रद्धा ? के श्रद्धा...जेना एकटा तीर सनसनाइत कुहूक अन्तरकेँ विडक' देलक ।

अरे ओएह, शेखर बाबूक विधवा बहिन—

छी: छी: की बजैत छी । ओ एहन नहि छथि—

अहाँ बड़-सरल छी कुहू । मर्द जाति पर एना आँखि मूनि विश्वास करव तँ अपने सर्वनाश होयत ।

आ रूणा कुहूक हृदय गंधा अपन दैनन्दिन बातसँ भरैत रहल एकटा मंथरा बनि । कुहूक हृदय आहत विडै जकाँ छटपटाइत रहल । श्रद्धा-श्रद्धा—ओ नाम सुनने छीह शेखर हुनक अभिन्न मित्र हुनके बहिन—विधवा...जे सासुरमे छलीह—एक दिन आयल छलीह हमरो देखवा लेल—बड़ कम बाहर निकलैत छलीह ।—श्रद्धा-श्रद्धा—आ—ह ।

भौजी केहन मोन अछि—शेखरक स्वर अमृत बरसा गेल समस्त वातावरण मे । कुहू देखलनि अनु आ शेखर—जेना छातीमे कोनो कील गड़ि गेलैक—

कुहू देखूने शेखर आइ अपना संग खाय लेअ जबर्दस्ती हमरा रोकि लेलक । कैपसुल खपलहुँ कि नहि ? कतेक बाजि गेल ?

...ओ एखन दस मिनट देर अछि । आ कुहूक समस्त देह काँपि रहल छल जोगा तीव्र हवाक वेगमे एकसर गुलाब ।

भौजी, अहाँ कतेक महैत छी । अहाँक ई स्वभाव-ई व्यवहार—ई प्रेम-ई गाम्भीर्य—ई सभ कोनो साधारण स्त्रीकेँ नहि रहैत छैक । अहाँक ई विशाल हृदय.....

बस बस बाउ, हम ई सभ किछु नहि छी, क्लान्त स्वरे बाजल कुहू ।

बेस भौजी हमरा ठकैत छी, परिहासमे बाजल शेखर ।

नहि बाउ, जीवनमे स्वयंकेँ ठकबाक अतिरिक्त आर ककरो ठकने छी, मोन नहि पड़ैत अछि । श्रद्धाक की हाल छैक ?

श्रद्धा ?—उसासक धुआँ समस्त बातावरणकेँ घूमिल क' देलक ।

ओकरा पुनर्विवाह क' लेवाक चाहैत छलैक । एहि रोगी समाजक सभ भियम सड़ि गेल छैक । विवाहक प्रस्ताव ओकर समक्ष राखल गेल छलै अबस्स गुला ओ स्वीकारलक नहि । समाज तँ आव सभ क्षेत्रमे प्रगतिशील मार्ग अपनौने अछि ।

ई बात तँ अछि शेखर मुदा, लोकक विचारमे एखन धरि परिवर्तन नहि लायल अछि । समाजक ठीकेदार कानूनक डरसँ किछु नहि बजैत अछि । अनुक स्वर बजैत छल ।

अनु, समाजक रूढ़िकेँ, परंपराकेँ बदलवाक प्रयत्न जाधरि नवपीढ़ी नहि करल ताधरि असंभव । परंपरा बदलबाक लेल समाज बदल' पड़त ! आ ई काम युवकेँ क' सकैत अछि । नबका पीढ़ी समाजक रीढ़ थीक, आव' वाला समाजक अधिनायक । नारीक अपमान अपन माएक अपमान थीक । समाजक विभिन्न पक्षकेँ जन्म दय नारी वात्सल्यक मोहमे ओकरा समाजक अधिष्ठाता बना देलक । शेखर आवेशमे चुप भ' गेल आ अनुक आँखिक आगु एक क्षण लपटित भ' उठल—जखन श्रद्धाक विवाह भेल छल तखन ओकर सुन्दरताक भान जन्मकेँ भेल छलैक पहिने पहिल । शान्त महासागर सन अथाह गहिराइ नेने ओ बीच बीच अछि—रानी हेलेनोकेँ आँखिमे इ गहिराइ नहि हेतैक । कृष्णक वैशीक स्वर



एतेक पावन नहि हेतैक—किलयोपेद्रामे एहन मपुर आकर्षण नहि होयत—लाठी मारि मारि प्रसुप्त बासनाके जगब' बाला उद्दाम सीदयके अनु देखने छल मुदा, उपासना करवा लेबाक शक्ति राख' वाला एहि स्निग्ध सीदयके देखि अनु मोने-मोन गुनगुना उठल—आह पहिलुक बेर देखि रहल छी ई दिव्य रूप ! आ ओएह हेलेन, ओएह किलयोपेद्रा जखन विधवा भ' क' अयलीह तँ इमशानक उदासी नेने कहने छलीह—भैया-इजोरिया हमरा लेल मृत्युक कफन थीक । ई राति अभागलि विधवा आ ई अर्द्ध चंद्र कोनो विधवाक टूटल चूड़ी—आ अर्द्धाक आँखिक कण अनुरागक आँखिमे आबि गेल छल—

समयक सागरमे ज्वार भाटा अबैत रहल जाइत रहल । कुहू ओछाओन पकड़ने रहलीह । दू मास भ' गेल । डाक्टर सभ थाकि गेल । बीमारीक कारणक कोनो पता नहि चलि रहल छल—आ कुहूके लगैत छल जेना सौंसे ओछाओन पर नागफनी पसरल होय । ओकर अन्तर अनगिन निराशाक मेघखण्ड सँ भरि गेल । ओकरा अपन जीवनक कोनो उपयोगिता नहि बुझि पड़ैत छलैक । कुहूक होइत छल अर्द्धाक प्रेमसँ अनुरागक आकाश लाल भ' गेल छल । ओकर मोनमे संशयक चोर बसि गेल छल जे सदिखन ओकरा कचोटैत छल जे जीवनक बाजी—प्यारक बाजी । ओ सभ दिन लेल हारि गेलीह । संशयक धुन ओकर शरीरे टा नहि मोनके सेहो नाश कयने चलल जा रहल छल । कखनो काल क्षण भरिक लेल मोनमे अपराधबोध होइत छल जे नहि ओ एना नहि क' सकैत छथि । आदि कतेको बातसँ स्वयंके बुझबैत छल मुदा मोन तँ शक्की होइत अछि—कुहू अपन निर्बल वक्षसँ प्रभावित भ' किछुसँ किछु सोचैत छलीह आ केन्द्रित विश्वास कण कण भ' बिखरि जाइत छल । जत' विश्वास होइत अछि ओत' संदेहक स्थान नहि । जाहिठाम मात्र संदेह होइत अछि ओहि ठाम घृणा होइत अछि, संघर्ष होइत अछि—घात होयत अछि ! एक दिस विश्वास आ दोसर दिस संदेह भेलासँ किछु नहि होइत अछि । संदेहमे अशुरी शक्ति होइछ जे विष पसारैत अछि तखन देवता मरि जाइत अछि । दानवक राज्य होइत अछि । अनुरागक सभटा दवा, उपचार, सेवाक अछैतो कुहू दिनानुदिन निर्बल भेल जाइत छलीह ।

कुहू—ई शब्द कुहूक माथक चुम्बन छेलक—अहाँक ओ सोनजूही हसी-जाहिमे हमर सभ दुःख दर्द धोखरि जाइत छल—ओ मुस्कान जकर आलोकसँ समस्त घर द्वार अदम्यत आभासँ उद्भासित रहैत छल—कत' हेरा गेल ? हम कतेक प्रयास करैत छी कुहू अहाँक ओ हँसी एक बेरि धुरि आवय आ हम ओहि

हँसी के अपन अघरमे समेटि ली । मुदा, अहाँक हँसी खुदोसँ करुण भ' जाइत अछि । अहाँकेँ की होइत अछि कुहू हमरासँ कोन अपराध भेल—

आ कुहू आँखि मूनने रहलीह । नयनक दूनू कोरसँ दू वृक्षमे किछु पंक्ति सिंहाकि गेल ।

—अहीं तँ कहने छलहुँ

एना हँसू ने

केकरो नजरि ने लागिजाय

कत्तौ ग्रहण ने लागि जाय

नजरियो लागि गेल

ग्रहणो लागि गेल...

आव हम कहियो नहि हँसि सकब अनु कहियो नहि । संसारक कोनो गीत कोनो संगीत हमर भेनकेँ मुकुलित नहि क' सकत...मुदा, प्रकटतः एतबे वजलीह—  
—छीः छीः अहाँसँ कोन गलती होयत ? अनुक दूनू हाथमे कुहूक दूनू हाथ कैपैत रहल—

तखन अहाँकेँ की भेल—अचानक की भ' गेल कुहू—की भेल की भेल... अनु नेना जकाँ प्रलाप क' उठल । डाक्टर कहने छल—हमरा रोगीक सहयोग एतेक प्रयत्नक बावो नहि भेटि रहल अछि । दवाईसँ बेसी रोगीक स्वस्थ हेबाक, जीबाक इच्छा ओकरा स्वस्थ बनयवामे सहायक होइत अछि । मुदा, रोगी जानि नहि आत्मघात क' रहल अछि ।

अनुराग चाँकि उठल छल—आत्मघात ? आखिर किएक ? एहन कोन दुःख ओकरा मोने छैक जे आत्मघात करवा लेल विवश भ' गेल । कतेको प्रयत्न करि अपरान्तो ओ कुहूक अन्तरक बात नहि बुझि सकल—हम तँ ठीके छी । तखन बीमारीमे जे समय लगैक । अहाँ चिन्ता नहि करू !

कुहूक नस नसमे संकाक रक्त प्रवाहित होइत छल जे ओ केवो आनक स्थान पर अछि । अनु किछु सोचैक तँ ओकरा होषए जे अर्द्धाक विषयमे सोचि



रहल छथि । रातिमे सूतल सूतल एकटा अग्निशलाका ओकर हृदयमे धुभि जाइत छल जे एहि स्थान पर अद्वाके रहबाक चाहैत छलैक । कपड़ा लसा बदल' लगैक तँ ओकरा होइक जे ओ अद्वाक कपड़ा पहिरि रहल अछि । अनु जखन बड़ गंभीर भ' ओकर आकृति देख' लगैक तँ ओकरा होइत छल जे ओ अद्वाक आकृति ताकि रहल अछि । भीतरे भीतरे शंकाक भाव कुहूक अंतरके मारि देलक ओकरा होअय जे ओ अद्वाक हिस्सा खा रहल अछि—

अपराधिनी ओ नहि-हमहीं छी—गंधा बीच बीचमे आवि मंत फुकि चलि जाइत छलीह ! आ कुहू घुटैत रहलीह घुटैत रहलीह—

अनु असहाय सन कुहूके निहारैत रहल । ओ बुझि नहि सकैत छल जे हँसैत खेलाइत कुहूके की भ' गेल ? जी जान लगौने ओ कुहूके परिचर्यामे लागल रहल । समस्त दिन उदासीक छाहरिमे बीति गेल । निर्जन, निस्तब्ध, उदासी कतहुँ कोनो शब्द नहि, कोनो चंचलता नहि, इजोरिया ओकरा आगुं बिखरल छल । सौम्य आ रम्य राति एकटा ममतामयी सृष्टि जकाँ ओकर मोनक अन्तर्दाहके शांत करवाक लेल, ओकर अन्तर्द्वन्द्वक व्यथाके चैन पहुँचयवाक लेल एकटा माए जकाँ ओ पुचकारि रहल छल । आम आ नीमक गाछक ऊपरसँ चान अनुरागके देखि संवेदनशील छल—आ अनुराग आकाशके निहारैत रहल—एक दिसि सप्तर्षि आ ओकर संगे अरुन्धती असीम नीलवर्ण नभमे दीप्तिमान भेल—किछु हँटि उत्तर दिसि ध्रुवतारा । ध्रुवतारा !—जेना ओ मूक संदेश द' रहल हो—जे अपन स्थान पर स्थिर अछि, अपन आस्थामे अडिग अछि, स्वधर्मक प्रति सतर्क अछि, ओएह महासागरक अनन्त विस्तारमे, रातिक सीमारहित अंधकारमे नाविकके आसरा आ आश्वासन द' सकैत अछि । आ अनुक माथ झुकि गेल—ओहि महान् स्रष्टाक सम्मुख नत भ' कुहूक जीवनक वरदान मांग' लागल—जखन केओ ईश्वरक सम्मुख प्रार्थना करैछ तँ ओकरा विश्वास रहैत छैक जे एकटा निराकार अस्तित्व ओकरा लग बैसि प्रार्थना सुनि रहल अछि ।

आऽ-ऽह—ओ ऽ ऽ हऽ—कुहूक स्वर कुहरवाक सुनि अनु दौड़ल ।

कुहू-कुहू—

कुहू दून हाथे छाती पकड़ने हँफसि रहल छलीह । अनु एकदम चबड़ा गेल । नोकरके डाक्टर ओत' पठा कुहूके सम्हार' लागल । डाक्टर बाजल—

अनुराग बाबू, किछु कहल नहि जा सकैत अछि । कोनो बातक चोट हिनक मोनपर अछि । हिनक हृदय कमजोर अछि आ हिनका कनिको सहायता हमरा नहि भिटि रहल अछि । हम औषध, सुइया सभ द' रहल छी । हँ, सतर्क रहब आवश्यक ।

किछु कालक उपरान्त कुहू होशमे आयल । अनुरागक आँखि डबडवायल छल—हम ठीक छी—अस्फुट अघर फड़कल मुदा अनु कुहूके पकड़ैत बाजल—अहाँ हमरासँ किछु नुका रहल छी कुहू । कुहू अपन हृदय हमरा लग खोलि दिय' । हमरापर विश्वास नहि अछि की ?

विश्वास—? कुहूक मानस जेना फेर अचेत भ' गेल । अपन पतिक सेवा, निष्ठा देखि ओकरा कौखन लगैक जे हम एहि देवताक प्रति अभ्यास क' रहल छी गुवा सन्देशक विष—

राति भरि अनुराग कुहूक माथ अपन कोरमे ल' बैसल रहल । ओ सुकुमार कली जेना सरकि गेल छल । अस्थि मात शेष छल । आँखि धँसल, गालक हड्डी विककल—अनुक नयन नीरस पाटल रहल—ओकर मानसमे ने तँ कृष्णक वंशीक-स्वर छल ने तँ हेलनक आँखिक गहिराइ आ न तँ क्लियोपेट्राक आकर्षण । ओकरा सामने कुहू छलीह मात्र दुःखिता । कुहू जकर अवरक हँसी संसारक कोनो मोलपर ना अनया लेल तत्पर छल । मुदा, कतेक असहाय—कतेक विवश ।

सोचक एहि आकाशमे तँ भोर नहि छल मुदा खिड़कीसँ प्रातः किरण आवि गेल छल । अनुराग आस्तेसँ कुहूक माथ अपन कोरसँ उतारि तकिया पर राखि बैलक । हाथ-मुँह धो' ओ पुनः कुहू लग कुर्सीपर बैसि रहल । आ ने जानि केसहरसँ वंशी बाजि उठल—भैया—

अनुराग चौंकि उठल । अद्वा ठाढ़ छलीह एकटा थारी हाथमे नेने । एकटा जमीन मुस्की अनुक अघर पर करोट लेलक—की बात छैक अद्वा भोरे भोर ?

जा कुहूक तंत्रा टुटि गेल । स्वर सुनतहि ओ आँखि मुनने निश्चेष्ट पड़ल छलीह ।

—मीजीक मोन केहेन छैक भैया ? आइ कोन दिन छीयैक से नहि बुझल जाय ।



कोन ?

आइ रक्षाबंधन छी ने ?

ओह—कोन बहीन हमरा अछि जे मोन रहत—कुहूक बीमारी ओकरा तीव्र बना देने छलैक ।

छी: छी: भैया बहीन सोझामे ठाढ़ अछि आ अहाँ जीविते ओकरा मारि रहल छी ?

आ कुहूक सौंसे देहसँ घाम चुब' लागल ।

गलती भ' गेल बहीन । असलमे कुहूक बीमारीक कारणे हम दर-दुनिया सभ बिसरि गेल छलहुँ ।

हम जनैत छी भैया । ताहि कारणे तँ हम भोरे भोर स्वयं दीइल अयलहुँ ।

—एतवा कहि श्रद्धा धारीसँ स्नेह भीजल राखी उठा अनुरागक हाथपर बाँन्हि देलक । मधुरक एकटा खंड मुहमे दय अनुक पयर छुवि लेलक ।

हम आहाँक कल्याणक लेल की आशीर्वाद दी बहीन मुदा, एतवा विश्वास दियावैत छी जे एहि राखीक मोल हम जनैत छी आ एकटा पैघ भाईक जे उत्तर-दायित्व अछि हम ओकर निर्वाह आइ धरि कयने अयलहुँ अछि आ एहिना करैत रहब । —भाववेशमे अनुरागक गर वसि गेल—बहीन, आशीर्वाद तँ अहाँ हमरा दिय'—अनुक स्वरमे करुणा सेहो करुण छलीह ।

भैया, हम अहाँकेँ की आशीर्वाद दी ? हम कोन जोगरक छी ।

हँ बहीन, अहाँ एतवे आशीर्वाद दिय' जे हमर कुहू हमरा भेटि जाय—एतवा कहि अनु कान' लागल आ श्रद्धा—? स्त्रीक विकल-करुण मनःस्थितिक वर्णन करबाक सामर्थ्य संसारक कोनो लेखनीमे नहि अछि ।

कुहूकेँ आगु जेना समस्त ब्रह्माण्ड नाचि रहल छल । ओकरा हिचकी उठि गेल । अनुराग चौंकि उठल—की भेल कुहू की भेल ? मुदा, कुहूक समस्त तन सिथिल भ' गेल छल । ओकर आँखिक समक्ष राखी नाचि रहल छल—हमरासँ झूड बाजि गेल—हमरासँ झूठ बाजि गेल—

के झूठ बाजि गेल कुहू—कुहूक माथ पर हाथ फेरैत अनु बाजल—अनुक स्वर कुहू बड़-बड़ाइत रहलीह—गंधा कहैत छलीह अहाँ श्रद्धासँ स्नेह करैत छी—ओकरासँ बियाह करब—

कुहू—विस्फारित नयनसँ तर्कैत चिकरि उठल—अनु अहाँ पहिने किएक नीति बजलहुँ । अहाँसँ हम पुछैत रहलहुँ । अहाँ एकटा सच्चीक बातपर विश्वास कयलहुँ मुदा, अपन प्राणसँ नहि पुछलहुँ ! ई की कयलहुँ कुहू ई की कयलहुँ ?

दुनू हाथसँ कुहूक कान्ह सकशोरैत बाजल अनु !

हमरा बचा लिय' नाथ । हमरा बचा लिय' । हम मर' नहि चाहैत छी—भाववेशमे कुहू फेर बेहोश भ' गेलीह । तुरंत डाक्टर आयल ? नीनक पूछाव' । सतकं रहवा लेल कहि ओ चल गेल ।

मध खंड चाकूकातसँ घुरिया रहल छल । बुझना जाइत छल कोनो प्रलय-मर बिहाकि मुँह बौने आवि रहल अछि । कारी-कारी मेघक गाछसँ टेढ़ मेढ़ गिरि रहि रहि छिटकि उठैत छल । अनुरागक छाती अदृश्य आशकासँ छिन्न जाग ।

कुहूक आँखि खुलल—केहन मोन अछि कुहू ?—अनुरागक स्वर ओकर कान्ह तकैत जनझना देलक ।

मध अपराधिनी छी नाथ । अहाँक प्रति मोनमे एतेक संशय ल' घुरैत रहल । कानी डाक्टरसँ कहि हमरा बचा लिय' । हम मरब नहि प्राण नाथहम मरब नाथ छी । हम जीयब—

कमजोर स्वर हाहाकार करैत रहल ।

कुहू अहाँ स्वस्थ भ' जायब । अवश्य स्वस्थ भ' जायब । शहरक सभसँ पैघ डाक्टरक हवाज बलि रहल अछि । हमर स्नेहक डोरि एतेक कमजोर नहि अछि जे अहाँ तीढ़ि लेब—

कुहू मोन भ' ओकर नेहरा देखैत रहलीह । आँखिसँ दुई बून्न नीर खसि गेल । जीवनक एहि रहस्यकेँ के बुझि सकल जे जीवनक मोह टूटबाक काल ई आँखिमे धमिल गइत अछि । कभीरक तत्व आनी अनुत्तरित भटकैत रहल—







एहिना सफेद चोला धारण केने रहत तँ कोना कोनो नारीक—पूर्णाक बेर-बेर मुट्ठी खोलैत छलीह, बंद करैत छलीह ?

ओकर देह धरधराय लागल । बिछाओन पर धप्प द' खसि पड़लीह—शलभ काज पर गेल छल, बड़का बेटा विश्वास कालेज, प्रिया आ नीति स्कूल । जरैत चुपहरिया आ जरैत मोन-तन लेने पूर्णा तपि रहल छलीह—कतेक काल धरि ओ पड़ल रहलीह—निश्चेष्ट—लुटायल, लुटायल ! उपवनक तरु मोन भ' सोचक सागरमे डूबल छल जेना यमदूतक दयनीय दूत कोनो सती-साध्वीक अकाल अर्धी ल' जसवाक लेल विवश—कतेक साँझ ओ अपन पतिक सँग एहि उपवनमे बितौने छलीह । एहि उपवनक तृण-तृणमे पत्त-पुष्पमे पूर्णाक साँसक सुरभि लटपटायल छल । सिंगरहारक मौलायल आनन देखि ओकरा मोने अतीतक एकटा क्षण सिहर' लागल ।—शलभ टहलिकेँ आयल छल । गुच्छ गुच्छ फूल सिंगरहारक, ओससँ नहायल, चुपचाप आबि सूतल पूर्णाक चेहरा पर छिरिया देलक । नर्म दर्द स्पर्श सँ चिहँकि उठल छलीह पूर्णा—“फूलक राजकुमारी” शलभ मन्द स्वरे ओकर कान मे गुणगुनायल—पूर्णा खिलखिला उठलीह जेना बहारक देवी प्रेमक अद्भुत छटा सँ आलोकित भ' उठलीह—अहाँ हमरा सभदिन एहिना मानब ने ?—फूलक राजकुमारी, बहारक देवीक अधर संगीतक लहरिसँ कम्पित भ' गेल ।

—अहाँकेँ कोनो संदेह ?

—हँ ।

—कथी, बाजू ।

—हम सुन्दर नहि छी, गोर नहि छी । दुनियामे एकसँ एक सुन्दर आ गोर—

—चुप चुप फूलक राजकुमारी—पूर्णाक अधर पर आंगुर रूखैत शलभ गुनगुनायल—गोर रंग मधुर थीक जकरासँ मानवक मोन तुरंत भरि जाइत अछि । आ दयाम वर्ण नोनगर होइत अछि जाहिसँ जिनगी भारि मोन नहि भरैत अछि ।

—चुप चुप गोर रंग वाली कोनो लड़की सुनि लेत तँ सभ दिन लेल अहाँक स्कोप खतम भ' जायत—आ दूनु गोटेक हँसीक जलतरंग वातावरणमे पसरि गेल छल । कतेक काल धरि शलभ ओकर केश—मेघसँ खेलाइत रहल आ प्रेमक गह्वर सागरमे डूबैत रहल जाहि ठाम एहन मोती रह्य जे संसारक कोनो खजाना मे नहि छल, एहन पारिजात सुमन रहैक जे दुनियाक कोनो उपवनमे नहि ।

पूर्णाक आँखि मोर गेल—की छल की भ' गेली ?

गौर, अहाँ कानि रहल छी पूर्णा ?

शलभ आगुमे ठाढ़ छल—उफ ।

अहाँकेँ कोना बुझाबी पूर्णा मानवक सभटा मर्यादा जीवनक कोनो एकटा जागरणक पुर्चटमासँ भस्म नहि भ' जायत अछि । मानव जा धरि जीवैत अछि ओकर भ्रम किछु बनल रहैत अछि—

पूर्णा हड़बड़ाय आँखि आँचरसँ पोछि बैसि गेलीह—

अहाँ पड़ल-लिखल भ' एना क' रहल छी । आइ-कालिह कतेको जगहमे एहि बलात्कारक घटना सुनि रहल छी । स्त्रीकेँ कहियो न्याय नहि भेटल । ओकरा लग पुष्प जबरदस्ती करैत अछि आ परिवारोक सदस्य कलंक स्त्रीए पर लगवैत अछि ।

पूर्णाक पीठ पर हाथ दैत रहल शलभ—अपनामे आत्मविश्वास आन । पूर्णा नारी जातिक दुर्बलतासँ फायदा लेब' वालाकेँ मुँह बंद क' दियोक ! उठू, पात बनाउ—एना नहि—एना नहि—कनि चेहरा पर मुस्की आनू—आब चाह बनाउ बड़ धाकल छी !

शलभक दिमागमे मयंक नाचि रहल छल—मयंक ओकर अपन दोस्त—नहि दोस्त कहि हम दोस्ती शब्दकेँ कलंकित नहि करब । बिजनेसमे मनमोटाव हेबाक कारणे ओ एतेक घृणित बदला लेलक ? कोना ओकर साहस भेल ! पूर्णा एहनक सती-साध्वी पर.....टाका आदमीकेँ नीच बनाय दैत छै ? हमरा एहन कइत नहि चाही जे अपन बीबी बेचि केँ होय ! पता नहि समाजमे कोन नीच आशिक पलायल ई प्रथा थीक जे पदक लेल, टाकाक लेल, अपन माय-बहीनक शरजत नीलाम क' दैत अछि—

आह—पूर्णा ठाढ़ छलीह कँपैत आंगुरसँ कप पकड़ने ।

पूर्णा, कालिह अहाँकेँ कोर्टमे बयान देब' पड़त ?

अहाँ हमरा ?—पूर्णाक पयर तर जेना विषधर पड़ि गेल होय ।

पूर्णा, कालिह एगारह बजे अहाँकेँ हम कचहरी नेने जायब ।

गूबा, हम की बाजब ओहिठाम ?—करुण स्वेदसँ तीतल पूर्णाक देहयष्टि—

जयभ सरकारी ओकिल पूछत सकर जबाब देबैक—



पता नहि केहेन केहेन दिन देखनाइ अछि— एकटा विकल निःश्वास ओकर—आत्म मंथन कर' लागलैक । आह ! स्त्रीकेँ कतेक निरुपाय बना देल गेल अछि । बलात्कार स्त्री पर होइत अछि आतातायी पुरुषक द्वारा आ घृणाक पात्र बनैत अछि नारी । स्त्री जाधरि एहि सभकेँ स्वीकारैत रहत, एहिना घृणाक पात्र बनल रहतीह । नारीकेँ अपन वैयक्तिकता छैक, मर्यादा छैक । ओ स्वतंत्र रूपसँ पाप-पुण्य, नीक-बेजाय, स्वर्ग-नरकक विश्लेषण क' सकैत अछि । मानव-मूल्यक वैज्ञानिकताकेँ परखि सकैत अछि । मुदा, पुरुष वर्ग नारीक ई क्षमताकेँ जानितो नहि जानवाक एहसासमे रहैत अछि । पुरुषक स्वामित्व भाव, उच्छृंखलता एवं स्वच्छन्दता बढ़ले जा रहल अछि । ओ दावा करैत अछि नारीकेँ सिंहासन पर बैसा देने छी, मुदा—

आइ कचहरीमे बड़ भीड़ छल ! सौँसे शहरमे एहि केसक चरचा छल । पूर्णाक दम घुटि रहल छलैक । ई कोन परीक्षाक घड़ी भगवान ओकरा द' देलखिन ? ई नय तँ अग्नि परीक्षा छी नहि कोनो निराकरण, नहि निवृत्ति, तखन ई की भ' रहल अछि—?

अहाँ बाजू, अहाँ संग कोना कोना की भेल ?—

—ओकील साहब जिरह कर' लागलाह—पूर्णा चौंकि उठलीह । कचहरीक कल्पनो हुनका नहि छल । उमड़ल जन-समुद्र देखि ओ घबड़ा गेलीह । पन्द्रह बरीसक बेटाक माय पूर्णा कातरदृष्टिसँ सोन सन केश मंडित जज साहब दिसि तकलनि—की हमरा कह' पड़ैत ?

—हँ, अदालतक नियम थीक । खुसुर-फुसुरक वातावरण गर्म छल । बलिक बकरा जकाँ निरीह, निस्पृह कतेको काल धरि मूढ़ी नुषरौने टाड़ि रहलीह पूर्णा आ जेना एकटा अदम्य आत्मविश्वासक विन्ध्याचल पूर्णाक अन्तर मे आस्ते-आस्ते उग' लागल । अपूर्व आभासँ हुनक चेहरा दीप्त भ' उठल.....

—एहि कचहरीमे जज साहब, ओकील साहब सभ, समस्त जनसागर एहि लेल उमड़ल अछि जे ओ सुनथि हुनका माय, बेटी, बहिनक बलात्कार कीना कोना भेल । ई बखान सुनबा लेल सभ व्यग्र छथि, सभ आतुर छथि । सीता, सावित्रीक एहि देशमे भगवानक बदला आइ इन्सानक कठघरामे स्त्री केँ ठाढ़ होम' पड़ैत छैक । अपना संग भेल अनाचारिक बयान देम' पड़ैत छैक, सबूत देम' पड़ैत छैक । की ई न्याय थीक ? इएह इन्साफ थीक ? कोनो स्त्री यदि एकबेर अपना संग भेल

अत्याचारकेँ स्वयं अपन मुँहसँ स्वीकार क' लैत अछि, तँ की ई पर्याप्त नहि भेल ? ताहि नारीक गर्भसँ अहाँ जन्म लेने छी ओकरेसँ भरल समाजक सामने ई पुछवाक साहस कोना होइत अछि ?

समस्त कचहरीमे दमशानक स्तब्धता पसरि गेल । कतेको माथ झुकि गेल । कतेको पानि वाला व्यक्ति चुपचाप पाछाँ सँ ससर' लागल ।

मैडम,—ओकील साहबक धीर-गंभीर स्वर गूँजल—जँ पूछल नहि जाय तँ न्याय कोना होयत ?

कोन कानून एकर न्याय द' सकैत अछि ओकील साहब ?—पूर्णाक स्वरमे गीम छल—कोन कानून सतीत्वक पवित्रताकेँ घुरा सकैत अछि ? एकटा प्रश्न हम स्वयं भरल अदालतसँ पुछैत छी—की शरीर पर विजय प्राप्तक' लेनाइ सतीत्वपर विजय प्राप्ति अछि ? घाट घाटक पानि पीब' वाला पुरुषक सतीत्व जखन अवलोक रहैत अछितँ जबरदस्तीक शिकार स्त्रीए किएक घृणित भ' जायत अछि ?

सभक माथ झुकल अछि ।

—हम जनैत छी, अहाँ सभ लग एकर कोनो उत्तर नहि अछि । इन्द्रधनुष समस्त आकाशमे चमकैत रहैत अछि । मेघमालाक एक खंड आवि ओकर कोनो निष्ठा पर अधिकार क' लैत अछि । एकर अर्थ की इन्द्रधनुष खंड-खंड भ' गेल ? तेजोग्ग सूर्य पर मेघक क्षणिक अंधकार सँ की सूर्य कलंकित भ' जाइत अछि ? आइ कतेको घरमे बलात्कार भ' रहल अछि । स्त्रीक दुर्भाग्य जे ओकरा पतिता भूषि ओकर परिवारक लोक ओकरा छोड़ि दैत अछि । की दुनियाक कोनो इन्साफ, कोनो कानून ओकर सतीत्व केँ वापस घुरा सकैत अछि ? कोनो न्याय ओकर कर्तव्य भी सकैत अछि ? एकर निवृत्ति कानूनमे नहि पुरुषक मोनमे अछि । ओ अपनाने ताकि क' देखय जे एकर जड़ि कत' छैक । पुरुषक द्वारा अत्याचार नै पीछित नारी स्वयं पुरुषक घृणाक पात्र बनि जाइत अछि । कोर्ट स्तब्ध छल—एकटा समग्र मांस लय, अपन तेजोमय व्यक्तित्व सँ उद्भासित पूर्णा गतिशील छलीह—एकटा एकटा आर रूप पापी पेट लेल देह बेचि रहल अछि । तखन कुलीन घरक स्त्री—ककरो माय, ककरो पत्नी पर ओ अपन नृपाश्रविकताक खेल खेलाइत अछि । एक तँ ओकरा संग बलात्कार होइत अछि, ताहि पर ओकर बखान करबा लेल, ओकरा कचहरीमे भकेलल जाइत अछि । पढ़ल-लिखल सभ्य समाज की इएह थीक ? एहि समाज पर की देशक गौरवमय अतीत टिकल रहत ? आइ अहाँ



सभ्य छी, जज भ' गेलहुँ, अहाँ सभ्य छी ओकील भ' गेलौं। माय-बहीन केँ कठघरा मे ठाढ़ करैत छी। सभ दिनसँ एहि देशमे स्त्रीकेँ शुल्मे पिताक अधीन, पुनः पतिक अधीन आ बादमे पुत्रक अधीन रह्य पड़लैक—ताहि ठाम अहाँक की कर्तव्य अछि ? अहाँ कत' चुकलहुँ जे अहाँक परिवारक इज्जतक संग ई दुर्व्यवहार भ' रहल अछि ? अहाँ ओकरा सँ सफाई मांगि रहल छी ?—पूर्णाक चेहरा तम-तमायल छल—आदरणीय जज साहब ! हम आइ अदालतमे एतेक बाजि रहल छी कारण हम भाग्यशालिनी छी जे हमरा पतिक पूर्ण विश्वास आ प्रेम प्राप्त अछि, ताहि कारणे हम एतेक आत्मशक्तिसँ भरल छी—जज साहब अहाँक कानून जे ईश्वरोसँ पैघ हेवाक दम्भ भरैत अछितेँ हम किछु नहि कहब। मुदा, जे कानून, जे न्याय मात्र सबूतक आधार पर साँच वा झूठक फैसला करैत अछि ओ कोन तरहक न्याय, कोन तरहक निर्णय दय सकैत अछि ? हँ, यदि एहि तरहक केसमे बयानक आवश्यकता होय तँ अहाँ सभ केँ कानूनक विरुद्ध स्वयं आवाज उठवाक चाही जे भरल अदालतमे स्त्रीसँ किछु नहि पुछवाक चाही। स्त्रीक घर जा क' पूछताछ कयल जाय। की एकरो लेल स्त्रीएक स्वर ऊँच उठबय पड़त ? अहाँक घरमे इज्जतक प्रश्न नहि अछि ? आइ हमरा संग भेल—काल्हि अहाँक, परसू'।

एकटा मर्मभेदी चीत्कार सदनक वातावरणकेँ स्तब्ध क' देने छल। सरकारी ओकील गाउन उतारि कखन बैसि गेल छलाह—से केओ नहि बुझलक। वृद्ध जज साहबक माथ झुकल छल। केओ नहि बुझि सकला हुनक आँखिक सीपीमे कखनसँ दूटा मोती झिलमिलाय रहल छल.....।

□

## सपनाक लहास

### संसृति :

अँय यँ, घर तँ कोहुना बनि गेल। देवाल ठाढ़ क' लेलहुँ मुदा ढलैया कोना श्रौयत—? चिन्तासँ माथ कुड़ियावैत बाजल ऋत्विक्।

संसृतिक अन्तरमे दरदक एकटा लहरि पसरि गेलैक—अपन स्थितिसँ हताश भ' ओ स्वामीक मुँह दिसि तकलनि एकटा गारल वस्त्र जकाँ। आब कतेक रुपयाक काज अछि—स्वादहीन पंक्ति नीरस भावसँ फेकलनि।

। रुपैया ? कम सँ कम दू हजार टाका आर चाही।

दू हजार—संसृतिक विस्मित स्वरक खंड ऋत्विक्क कानमे पड़ल। ओकर अंग-अंग मे पीड़ाक अवचेतना आवि गेलैक। ओ चुपचाप स्कूल चलि गेल।

आ संसृतिक कानमे, मस्तिष्कमे, हृदय मे “दू हजार टाका” नृत्य क' रहल छल। सभ किछु लुटयवाक बादो दू हजार आर। चारू दिस देवाल ठाढ़ भ' गेल। ऊपर छत—घरक आकाश बनयवाँ लेल दू हजारक काज बाकि ए अछि। दू हजार—दू हजार घटि रहल अछि।

ओ पाथरक मुस्त भ' गेलीह। आब ओकरा संग की बाँचल। सभटा गहना बेचि लेलक। शुद्ध सोनक जेवर सभ।—दू हजार—हँ-हँ मनटीका—भारी मनटीका तँ बाँचले अछि। सोनक दाम ततेक बढ़ि गेल अछि जे आब ओकर दाम तीन हजारसँ कम थोड़े हेतैक—एकटा चमक ओकर चेहरा पर चकमकाकेँ शान्त भ' रहल छल। मुदा, मनटीका—नहि, ओहि सँ हमर सिन्दूरदान भेल अछि, सिन्दूर दान ? नहि नहि हम हरगिज ओकरा नहि बेचब। सिन्दूरदानक गहना आ बियौहती गूआ स्त्री लेल बड़ महत्व रखैत अछि। मुदा, नहि, सिन्दूरदानी गहना कोन ? जखन माथ भरि सिन्दूर स्वामीक प्रेमक सम्पत्ति अछि, तखन गहनाक की ? मास्टरीक कमाइ सँ बचाय-बचाय आ अपन समटा गहना बेचिओ अपन सपनाक नोड़ बना रहल छलीह—तखन ई ढलैया। मकानक खर्च तँ बड़कांयज्ञ थीक। जतवा देने जाब भीतबे बड़ल जाइत अछि। एखन तँ विघ्नी-निघ्नी दूनु नेने छल। खर्च कम छल।



भाइ भोरे ऋतु मानैत नहि छल मुदा सप्पत किरिया दय, क्षितिज सँ नुकाय कोहुना ओ टीका द' देने छलीह बेचवा लेल ! स्वामी रहताह तँ जेवर की ? स्वामीक सिनेहे नहि तँ जेवरे लय की करब ? जे होय संसृतिक मोन खिन्न छल । सिन्दुरदानी टीका बेचवा सँ ओकर दम टुटि रहल छलैक । ओ पाथर बनि बैसल छलीह ।

क्षितिज :

दीदी, तौ किएक एतेक चुप रहैत छे ? तोहर मोन की जे चुप रहनाइ बड़ दीब ?—क्षितिज आवि ओकर अस्तित्वकेँ शकसोरि देलक—

नदी-पहाड़, घरती, चान, सुरुज सभ तँ चुप अछि क्षितिज आ कतेक नीक लगैत अछि—खिड़की सँ अबैत आकाशक खंड दिसि निनिमेष तकैत संसृति बजलीह—

हम मानैत छी दीदी चुप रहनाइ सुन्दर अछि । मुदा, जकरा ईश्वर दिमाग देने छथीन, हृदय देने छथीन ओकर रचना एहि लेल नहि भेल अछि जे ओ चुप रहि जाय । तौ पहाड़क विशालता समेट लेबाक चेष्टा कर दीदी—नदीक चंचलता लेबाक खाली मानवे टाकेँ तँ भगवान हँसबा बाजबाक स्वीकृति देने छथीन । ईश्वर हृदय आ दिमाग एहि लेल देने छथीन जे हुनक रचनाकेँ अभिव्यक्ति भेटैक..... ।

आर किछु की क्षिति—? म्लान हँसी हँसैत संसृति बजलीह ।

कनिको अप्रतिम नहि होइत बाजल क्षितिज—हँ, हँ, आर किछु, बहुत किछु । हम खाली बाजवाक मूडमे छी । आ सुन, हम जनैत छी जे तोहर हृदय केँ पहाड़क विशालता भेटल छीक, घरतीक सहनशीलता, नदीक चंचलता, चान-ताराक आलोक, मुदा ई तोहर जबरदस्ती छीक जे एहि सभक संग-संग ओकर मोन सेहो तौ ओढ़ि लेने छे ।

क्षिति—संसृति किछु सहज भेलीह—हम छनैत छी क्षिति, संगे इहो जनैत छी जे पहाड़ो अपन घुटन नहि सहि पवैत अछि तँ ज्वालीमुखी बनि फूटि जाइत अछि । अपनेटा नहि चारु दिसि सड़ल वस्तुकेँ आर क' दैत अछि । आकाश के जखन अपन दर्द बेबदास्त भ' जाइत छैक, मेघक गर्जन बिजलीक तड़पक संगे अपन चीत्कार निःसृत करैत अछि । घरतीयो.....

तँ दीदी तौ की चाहैत छीही ?—बीचेमे बात कटैत क्षितिज बाजल—ठीक छैक, तौ मोन रह, चुप रह मुदा, अपन एहि घुटनसँ तौ टूट्य लगबे तँ तोहर चारु दिसि एहि टूटनक प्रक्रिया शुरु भ' जेतौक—आर केओ नहि तँ हम तँ अवश्य—एहि निरीह भाइ पर ममता कर जे जीवनक मात्र पचीसे बसन्त देखने अछि । जे अपन दीदीक आत्मा अछि, छाहरि अछि.....

आ संसृति फूटि पड़लीह । सहस्त्र सहस्त्र धार नोरक ओकर आँखि सँ ओकर अन्तर सँ, ओकर रोम रोम मेँ फूटि गेलैक ।

दीदी—एकटा विह्वलता क्षितिकेँ कँपा गेलैक—दीदी हम तँ अहाँक शलभ छी शलभ । तखन अहाँ हमरा अपनासँ दूर बुझैत छी ? हमरासँ अपन नोर नुकबैत छी—संसृति दूनू कान्हके अटकारैत बाजल—क्षितिज ?

एक क्षण लेल अपन आँखि उठाय संसृति क्षिति दिसि तकलनि मुदा, ओ दृष्टि जेना शून्यमे किछु हँसोथि रहल होय, भटकि रहल होय । ओकर आँखिक आगू अपन तरहत्थी हिलबैत क्षितिज बाजल—दीदी, हम छी जाहि ठाम अहाँक दृष्टि अछि ताहि ठाम हमर चेहरा अछि—शून्य नहि अछि, रिक्तता नहि अछि ओहि ठाम क्षितिज अछि क्षितिज !

हँ हँ क्षितिज । हँ, अही छी । हम बुझैत छी मुदा भटकि जायत छी—आ संसृतिक मोन-पाखी जेना स्नेहक बरखामे भीजि तीति गेल । क्षितिज ओकर छोट भाई शलभक दोस्त । कहियो साँसो नहि बुझलक ओ सहोदर नहि अछि ? शलभक उपेक्षा कखनहुँ काल देखि संसृति उदास भ' जाइत छलीह तँ क्षिति ओकर विक्षिप्तताकेँ चैन दैत छल—दीदी कतेक प्यार लेबही तौ, सहि नहि पयबे, झेलि नहि पयबे । क्षितिज बजबे टा नहि कयलक ओकरा पूरो कयलक ? अहाँ—तौ संबोधनक मध्य क्षितिक स्नेह पाखि संसृति उमगैत रहलीह आ शलभ कौतुकसँ भरल तमाशा देखैत छल । दुःख वा उदासीक कनिको देख संसृतिक चेहरा पर आबैक कि क्षितिज बाजि उठय—दीदी की भ' गेलौक । हमरा अछैत हमर दीदी अपन चेहरा पर कोन चेहरा फिट क' लैत अछि ?

अरे पागल, अहाँ नहि बुझैत छी । अहाँक रहैत हमरा दुःख ! अहाँ सन भाइ जे बहीन केँ भेटत ओकरा लग उदासीयो अबैत डेरायत ।

—दूनू भाइ बहीनमे गुपचुप की भ' रहल छैक—ऋतुक स्वर सुनिने दूनू चौकि उठल—



पाहुन, दीदी उदास रहैत अछितें हमरा मोन नहि लगैत अछि ।

—अहाँक अछैत अहाँक दीदी उदास ?

—पेट टूँजेडी,—एकिटग करैत बाजल क्षितिज—आ ओकर मुखमुद्रा देखि संसृति आ ऋत्तिक दूनू हँसि पड़ल ।

देखू अहाँ कतेक काल सँ अपस्याँत भेलहुँ मुदा अहाँक दीदी नहि हँसलीह । हम अयलौ आ अहाँक दीदी हँसि देलीह । ठीक कहैत छी ! ई कलियुग छी ने ? पहिने पति महोदय तखन बेचारा भाइ—मुदा फेरो कहब हमरा खाली डेकचीमे उधियावैत पानिक हँसी नहि चाही । हमरा चाही दीदीक उन्मुक्त हँसी, आत्माक हँसी.....

सुनू क्षिति—अहाँक दीदीक मोनमे घर बनयबाक हेतु सोचक धुन लागि गेल अछि—ऋत्तिक कनी गंभीर होइत बाजल । संसी, लिय' दू हजार टाका राखू । दू तीन दिनमे सभटा समानक जोगाड़ क' डलैया शुरू क' देबैक । घटी-बढ़ी भगवान पूरा करथीन ।

बात बदलैत क्षितिज बाजल—कोसीमे बड़ जोर बाढ़ि आबि गेल अछि पाहुन की ? अपन देह हाथ मोचाड़ैत बाजल क्षितिज !

तावत संसृति लूँगी आनि ऋत्तिककेँ थमा देलक ।

### ऋत्तिक

ऋत्तिकक माथ पर किछु रेखा गहिरागेल । क्षितिजक बात सुनि—बढ़ि—हँह घर की बनायब ? माटि पर जोड़ि जोड़ि कोहुना घर बनाय रहल छी, मुदा, एहि बेरक बाढ़ि पता नहि कोन ताण्डव करत ? जान-माल सभ दहा रहल अछि । अहाँक दीदी मकान लेल सोचि रहल छथि आ भगवानक लीला ? लूँगी बान्ह घोती चौपत' लगलाह । सभक आकृति गंभीर भ' गेल । बाढ़िक विभीषिका एखन धरि संसृति खिस्से कथा आदिमे पढ़ने छलीह जे बाढ़ि अजगर अछि, बाढ़ि नागिन छी, बाढ़ि डाइन छी, मुदा एहि बेर—ऋत्तिक चुपचाप संसृतिक चेहरा पढ़ि रहल छल । ओकर आगू अतीतक सड़ल लहास आबि पड़ि रहल—ओकर मोन काँपि गेलैक । ओह ई अतीतक सड़ल लहास नि-एक हमरा आगू पसरि जाइत अछि । एहि सड़ल लहासकेँ बरदास्त करबाक शक्ति आब नहि बाँचल । .....की सपना हम देखने छलौ ? की सपना हमर बाबूजी देखने छलाह ? की सपना हमर संसृति

हेतीह ? मुदा, समय केँ हम बेरबाद कयलहुँ, समय हमरा बेरबाद कयलक । बड़का-बड़का महत्वाकांक्षा लय हम कहना-कहुना बी० ए०क डिग्री लेलहुँ । पढ़बामे मोन नहि लगैत छल आ चोरीक भरोंसे कहियो ब्रेक नहि लागल मुदा जखन जिनगीक गाड़ी मे ब्रेक लागल तँ हम नय तँ जीविते छलहुँ आ नय तँ मुद्रा । आ तखन जे ऊँच आकाशक सपना देखने रही ओ कि ई मामूली मास्टर बनि चैन पाओत ? ताहि ठाम हमर जीवनमे अयलीह संसृति । समृद्ध घरक पढ़ल-लिखल असगर बेटी । केहेन अपमानजनक स्थिति छल हमर । नहि, अपमानजनक स्थिति कहियो हमरा संसृतिक कारण नहि रहल । ओ संसृति नहि हमर संसृति बनि अयलीह । हारि-थाकि जखन हम मास्टर बनलहुँ तँ आत्मग्लानिक शिकार हम छलहुँ । मुदा, बाह रे संसृति,—अहाँकेँ कथीक लाज होइत अछि ? कोनो काँज छोट वा पैघ नहि होइत अछि । काज करवा मे लाज की ? विदेशमे सुनेत छी जे एहि ठामक पैघ सँ पैघ आफिसरक बेटा प्लेट धोइत अछि, जूता-पालिश करैत अछि । ओएह आदमी अपन देश मे कतेक मिथ्या अहंकारकेँ अपना मोनमे पोसने अछि । आत्मग्लानि तखन हेवाक चाही जखन माय बापक रोटी तोड़ैत अछि । आइ अहाँ मास्टर भेलहुँ, हमर खुशीक सीमा नहि । आ तखन पहिल बेर आत्मगौरव हमरा मोनमे आयल छल । मुदा, संसृतिक मोनमे एकटा सपना भयंकर रूप सँ ओकरा ग्रसित करैत छल जे ओकर एकटा अपन घर होय । ओहि सपनाक पूर्ण करवा लेल पाइ-पाइ जोड़ैत छलीह, फाटल-चीटल नूआकेँ बेर-बेर सीबंत छलीह । गरदनि, नाक, कान सभ सून कय ओ टाका जमा करैत छलीह । कतेक बेर ऋत्तिक रोकलक, ई की करैत छी संसृति । गहना तँ स्त्रीक संपत्ति थीक, सुहाग थीक । एकटा भरल हास ओकर समस्त तन सँ निःसृत होइत छल—नहि यै, अहाँ गलत बुझैत छी । स्त्रीक सुहाग ओकर दूनू हाथ मे भरल, चूड़ी आ सीथमे सिन्दूर होइछ । आ सम्पत्ति ओकर पतिक प्रेम होइत अछि; ओकर स्वामीक प्रेम जकरा ओ अनमोल रतन जकाँ हृदयक कोषमे बंद कयने रहैछ ।

आ ऋत्तिकक गर पर अतीतक सड़ल लहासक हाथ कसल जाइत छल—ओ बीकि गेल—दीनू आ सोनी दूनू । ऋत्तिकक बड़ पैघ दोस्त । तीनू स्कूलसँ कालेज धरि संगे पढ़लक । दीनू एकटा आफिसमे क्लर्क भ' गेल आ सोनी एकटा किराना बीकान खोलि बैसि रहल । आ ऋत्तिक ? ओकर महत्वाकांक्षा, ओकर सपनाक काली अंत नहि छल । ओ डिप्टी कलक्टरसँ नीचाक सपने नहि देखैत छल । कर्म किछु नहि आ उड़ान आकाशक.....



.....दीनू कहैत छल—ऋतु, तो अपनाके बेरबाद क' रहल छह ! ई कर्म करबाक जमाना अछि । ओ जमाना चलि गेल जखन एक आदमी कमाइत छन आ दस आदमी खाइत छल बैसिके तों तीनू दोस्तमे तेज छह । एतेक धरि जे बुद्धिमानो । एहि बुद्धिक तों उपयोग नहिक' रहल छह, जीवनक एतेक कीमती वर्ष नष्ट क' रहल छह ।—ऋतुक अधर पर ओकर सभक प्रति एकटा उपहासक मुस्की रहैत छल—हुँह, करता किरानीगिरी ! हमर महात्वाकांक्षा तों की बुझबहक ? मुदा, सोनी मुँहफट छल बेसी—तोरा तँ केओ पुछैत छह नहि । अपन बोझो स्वयं उठयवा लेल तों तैयार नहि छह तँ दोसर केओ तोहर बोझ किएक उठयतह ? तों खाली काल्पनिक संसारमे रहैत छह ?

—हम समयक प्रतीक्षा क' रहल छी—निश्चित स्वर छल ऋतुक समयक प्रतीक्षा ? बेस, वाजु तँ अहाँक जीवनक लक्ष्य की थीक ? समय अयला पर कहब ।

—वाह-वाह, बड़ नीक-जखन अहाँ इहो नहि जनैत छी जे अहाँ की क' सकैत छी—तँ एहि सँ बेसी दुर्भाग्य की भ' सकैत अछि ? हम तँ बुझैत छी अहाँ बेकारीएके अपन जीविका बना नेने छी । दोस्त, माय-बाप कतेक दिन केकर गुजर चलाय सकैत अछि । तों कोनो नोकरीमे लागि जाह ।

ऋतुक कानमे ई सभ गप्प कोनो बरकैत लोहा सन लगैत छलैक ।

—इह, ई साधारण आदमी सभ हमरा की बुझत ?—

एहन नहि छल जे ऋतुक मोनमे कोनो छल-प्रपंच होय । ओ बड़ संवेदनशील आ भावुक प्रकृतिक युवक छल । अन्त मे, समय आ परिस्थितिक हाथे विवश भ' अपन गामेमे स्कूलमे मास्टर भ' गेल ! मुदा, ई मास्टरी, ई संसृति हूनू एके संग ओकर जीवनमे अयलैक 'संसृति ओकरा बनव' लगलीह । आत्महीनता, जे ऋतुके तोड़ि देने छल, तकरा संसृति आत्मगौरव सँ भरि देलक । आ फेर ओएह ऋत्तिक छल जीवनक प्रति उन्मुक्त मुदा परिवारक प्रति गंभीर—उत्तरदायित्व पूर्ण.....

—जलखे क' लिय' संसृतिक स्वर सुनितहि ऋतुक सोझा सँ अतीतक लहास हँटि गेल, मुदा, दुर्गन्ध एखन धरि घेरने छल ।

पाहुन, एट इज भ' जाउ आ जलखे कस—चूड़ा भूजल एक फक्का लैत क्षितिज बाजल—हमहु तीन चारि दिनमे जयवा लेल सोचि रहल छी

—एखन कोना तों जयवह कुटुम्ब ? घरक ढलैया होमय दहक, ई बाढ़िक संकट चलि जाय—ऋतु किछु सहज भ' गेल छल ।

ढलैया-? नहि यौ नौकरिहारा आदमी एक हफ्ताक बाद छुट्टिए नहि अछि । बीबीक एतेक आग्रहके हम नहि टारि सकलहुँ तँ—

× × ×

—मालकिनी बाढि तँ एहि बेर ककरो बाँच' नहि देत—सुगिया अपस्यांत ठाढ़ छल ।

—की भेलैक गय ?—ऋतु पुछलक

—मालिक, पानि तँ हमरा सभक घरे दिसि आबि रहल अछि । पता नहि साँझ धरि की होयत ?

—की करबहीक—ककरो हाथमे छैक ? सभटा ऊपरवालक हाथमे अछि । ओकरे नाम ले ।—ऋतु उदासीन बाजल

—दीदी, ई तँ ओएह सुगिया थीक ने—अर्थपूर्ण स्वरमे क्षिति बाजल ।

—हँ, हँ, ओएह सुगिया क्षिति । एकरा लोक चरित्रहीन, कुलटा की की नहि कहलक । मुदा, हम सभ एकर असली जिनगी जनैत छी क्षिति । एहि समाजमे युवती विधवाक जीयैक कोनो हक नहि अछि ।

नहि दीदी—पँध लोक हो वा कि छोट लोक—यदि ककरो चरित्रक विषय मे केओ बजैत अछि तँ निश्चय ओ बाजयवाला स्वयं चरित्र हीन अछि । मानवता तँ इएह थीक जे चरित्रहीनो अछि ओकरा चरित्रवान कहि ओकर नैतिक स्तरके आर उठेबाक प्रयास कर'क चाही जाहिसँ कहियो ओकरा जीवनमे ऊपर उठेबाक प्रकाश भेटि जाय । दीदी—संबंध बिगाड़नाइ तँ एक सेकेन्डक काज थीक मुदा, बिगड़ल संबंधके बनयबामे कतेक जीवनक आहुति भ' जाइत अछि—संबंध नहि बनैत अछि ।

—हँ क्षिति, नहि खसनाय कोनो बहादुरी नहि थीक मुदा, खसि के उठि गेनाय देवस्व थीक,

ऋतु एहि बीच चुप छल अपन सोचमे डूबल । ओकर मोनमे बाढ़िका भावक उद्वेग छल । अपन घर छल ढलैया लेल पड़ल, जकर बनयबामे अपन



जीवनक समस्त कमाई दाय पर लगा देलक ठीक मुगियाक घरके बगलमे यदि बाढ़ि ओहि ठाम पहुँचि जायत तखन.....तखन—

—ई प्रश्न ओकर मानसके बका देलक। एकर आगाँ ओकरा किछु नहि फुरैत छल।

चलु क्षिति कनि घुमि आवी, देखि आवी।—ऋतु बाजल।

आकाशमे कारी कारी मेघ अनगिन विषधर जकाँ फुफकार मारि रहल छल। प्रलयंकर पुरवाक बिहारि चलि रहल छल। चारु दिसि पानि-पानि-पानिक लहरि आकाशक मेघक फूत्कार सँ—घरती काँपि रहल छल। पानिसँ गरदन भरि डूबल, असहाय छोट छोट गाछ, लहरिक हेल मे कतेको छप्पर, कतेको खाट की नहि बहि रहल छल। चारु कात पानि बीचमे डूबल गामक गाम। छत पर बैसल मनुष्यक हेँज क्षण क्षण लग अबैत मृत्युक आतंकसँ आतंकित—नाह-नाह चिकरि रहल छल। मुदा, ओतेक नाह कत? एक एकटा नाह पर पचास-पचास आदमी कोसी मैयाक गुहारि करैत पार उतरि रहल छल। प्रकृतिक प्रकोपक समक्ष चल बुद्धि रहितो आदमी कतेक असहाय होइत अछि। चारु कात हाहाकार, कलरव, आर्तनाद—क्षिति काँपि गेल—पाहुन, दीदी कहियो बाढ़ि देखने अछि?

मुदा, ऋतुक ध्यानमे दीदी नहि दीदीक सपना छल। ई लहरि, ई डाइनि, यदि ओकर घरक चारु कात दूइयो घंटा रहि जायत तँ बालू माटि पर जोड़ल देवाल कतेक काल, कतेक काल—? आ ऋतु फक्क भ' जाइत छल—हे कोसी मैया हमरा पर दया करहक। आइ धरि लोक तोरा छागर पाठी चढ़बैत छल तँ हम हँसैत छलहुँ। आइ हम अपन संसृति लेल तोरा सँ मिनती करैत छी तों आगु नहि बढ़'—आगु नहि बढ़' ? ओ चुप छल, मुदा, ओकर रोम' रोम प्रार्थी छल।

छप-छप-छपाक.....बड़ जोर स्वर उठलैक। एकटा घर अरड़ाक खसि पड़ल। ओकर छप्पर पर बैसल कतेको लोक पानी पर कटकी जकाँ बह्य लागल—

क्षिति, देखु—बड़ी काल बाद ऋतुक स्वर फूटल—कतेक असहाय छी अपना सभ। सभ किछु देखि रहल छी, क' किछु नहि पबैत छी। स्कायलैब—स्कायलैब हल्ला अछि—मुदा की ई स्कायलैब नहि थीक ?

सर्वांग सिहरैत क्षिति बिनु किछु बजने ऋतुक हाथ पकड़ि घर दिसि मुड़ि गेल। ऋतु अस्पष्ट स्वरे किछु बुदबुदाइत छल आ क्षिति एतेक वीभत्स हृदय देखि अपन चेतना हेरा बैसल। दूनूक मस्तिष्कमे बाढ़िक भयंकरता साण्डव क' रहल

छल। क्षिति अपन प्रगल्भता बिसरि गेल। बिना थुडोक एहन नरसंहार भ' सकैत अछि—जी कल्पना नहि क' सकैत अछि।

भरि दिन बीति गेल। पती नहि लागल। एको क्षण लेल सुरज नहि उगल। भयभीत घरवा आ मेघक फूत्कार। चौकी पर करोट लैत क्षिति आ ऋतु। बाढ़िक प्रलयनरता दूनू केँ झकझोरि देने छल—हम कहैत छलहुँ संसृति केँ छत्ता पर घर नहि बनाय, पुराहित नहि अछि। ओ प्रकृति प्रेमिका बुझि नहि सकलीह। इहो सत्य अछि जे आदिम बाढ़िक कनिको आशंका नहि छल। मुदा, एहि बेरक बाढ़ि ? मनुष्य की नहि थीक ? आदमी जतेक भ्रष्ट भेल जाइत अछि प्रलय आओत—प्रलय आओत ! हमहुँ कोन सोचमे छी। कीड़ा-मकोड़ा जकाँ मनुष्य भरि अछि अछि, मनुष्य हम अपन घरक सोचमे छी। की एतेक जानसँ बेसी महत्वपूर्ण अछि ई ? मुदा, ई घर कहाँ छी ई तँ संसृतिक सपना अछि—आ ऋतुक आँखिक आभा किनू रानी गनटीका आवि जाय जकरा बेचि दूइ हजार टाका आइ अनने छल।

चलु, दूनू गोटे पहिने खा लिय'—दूनू नेनाकेँ सुताय संसृति बजलीह।

क्षिति भूष नहि अछि—अनमन ऋतु बाजल।

भीती, हमहुँ नहि खायब। साहस नहि रहल। कोर भीतर घँसवे नहि करत। पानुनिया ब' क्षिति पड़ल रहल।

भीजन बगले रहि गेल। तीनू गोटे चुपचाप पड़ल रहल। ककरो आँखिमे नम्रता नहि। संसृति केँ ध्यानो नहि छल जे ओकर घरकेँ कोनो हानि पहुँचि सकैत अछि। क्षिति केँ भूखल देखि ओकर मोनमे सोच होबय लगलैक। शहरक जगजग। ओ बाढ़ि की जान' गेलैक ? बेकार ई क्षितिकेँ बाढ़ि देखयवा लेल ल' गेलैक। पर ओ स्वयं मुस्कराय देलीह—हम-हम तँ गामोमे रहि बाढ़ि नहि देखने छी। तीन बरख गाममे भ' गेल—नहि तँ एहन बाढ़ि कहियो आयल आ क्षिति तँ एहि गाममे बाढ़ि कहियो आयल छल।

आदिमसँ आद्य कोस उत्तर, प्रकृतिक कोरामे संसृति अपन घर बनबैत छल। नहि कालि हम जाक' अपन सपना अवश्य देखब जे साकार भ' रहल अछि। आदिक युग सेहो देख्य। जहिना रौद प्रखर होयत, तुरत ठलैया क' देबैक। आ ओ बाढ़िक कल्पना, घरक सपनामे डुबि गेलीह।—



सोचक सागरमें राति अधियाय गेल । अचक्के गगनमें बड़ जोरसँ बिजली चमकल आ घोर गर्जन संगे कत्ती नजदीकमें खसि पड़ल । संसृति कांपि नेनाकें अपन छातीसँ सटा लेलक, ऋत्विक्क सवांग एक बेर कांपि शान्त भ' गेल आ क्षिति चेहायकें बैसि गेल—कारी-कारी भुतनी सन अन्हार गुज-गुज राति, हवा पानिक बौछार—कोनमें लालटेनक छाती सेहो कांपि रहल छल । विजली सत्ते लगेमें खसल छल ।

मालिक-मालिक, केवाड़ खोलू ।

—कतेको स्वर बाहरसँ केवाड़ पीटि रहल छल ।

क्षिति घड़फड़ाकें केवाड़ खोलि देलक । पाँच-छह गोटे भीतर पसि गेल । संसृति लकचका गेलीह । सुगिया सभसँ आगाँ—

मलकिनी-मलकिनी, बाढ़ि, ई उनियाही बाढ़ि हमरो सभक टोलमें घुसि गेल । साँझे राति गाममें पसल आ—आ... ।

—ककरो जानमालक क्षति तँ नाहें भेल—संसृति घड़फड़ाकें गेलीह ।

—नहि मलकिनी, लोक तँ चेतल छल पहिनहिसँ मुदा-मुदा..... ।

—मुदा की ? बाज ने जल्दी... ।

क्षिति आस्तेसँ संसृतिक कान्ह पर हाथ राखि देलक जेना ओ हाथ नहि एक दोसराकें साँत्वना देबाक ट्रांसमीटर हो ।

—मलकिनी ! एखन कनिक काल पहिने अहाँक घरक सभटा देवाल अरड़ा क' पानिमें खसि पड़ल—जेना जीवन भरिक कमाइ पर डकैती भ' गेल । मुदा ऋतु ओहिना संजाहीन पड़ल रहल जेना ओकरा पूर्वज्ञान भ' गेल छलैक ।

□

## हारल जुआरी

अभिसारिका रजनी चेहाय उठल । परसौती बेदना अपन ओछाबोन पर एम्हर ओम्हर करोट बदलैत छलीह । दस दिनक बच्चा ओकर पार्श्वमें शान्त सूतल छल । ओना तँ बेदनाकें नीन रातिमें देरसँ अबैत अछि मुदा, एक बेर जखन पुनि आदत छलीह तँ बिना भिनसरके ओकर नीन कहियो ओकरासँ रूत नहि छल ।

मुदा, आठ बेदना रातिक ओहि प्रहरमें जागि गेलीह जाहि बेरमें ओ एहिसँ जीता कहियो जागल नहि छलीह । जेना केओ अदृश्य शक्ति ओकरा उठाय देलक । जेना नहि विघनाक कोन होनी'क हाथ बेदनाके उठाय देलक । बेदना'क नीन टुटि गेल । ओ कतेक देर धरि विचारक आकाशमें टकटकी लगौने किछु खोजैत रहल । पुनः पुनः उपक्रम करय लेल ओ जहिना करोट घुरलीह कि चेहाय छलीह । ओछाबोन खाली छल । ओछाबोनपर आशीष, बेदनाक पति नहि छल । ओ बेहायल दोसर करोट घुरलीह । दोसर चौकी सेहो खाली छल, जाहिपर पुनि छलीह ओकर अन्यतम सँगिनी दीप्ति जे कि बेदनाके दुःखक समयमें सभ कस जाति संग दैत छलीह ।

आकाशमें जेना डेरक-डेर विचार ओकर मोनमें खसि पड़ल । ओ चौकिकेँ अन्त में पड़ल । अंगनाक केवाड़ीक दोगसँ कनि-कनि इजोरिया अबैत छल । ओ अन्त में जागि उठि केवाड़ लग गेलीह । ओम्हरसँ एकदम महीन आवाज अबैत छल ।

—जाहि बिग' हमरा । गोड़ लवैत छी ।

—कि किएक ।

—अबू नहि बुझैत छी बेदना जागि जायत ।

—तु' बताहि ई पहर बेदनाक जगबाक नहि छैक । डरैत छी किएक ?

—नीह.....जीब.....' जेना एकटा हलुक चिकरब सुनाय पड़ल । बेदनाक आँखें जेना केजी लमल भीषा राखि देने होय ।



‘हम अहाँसँ नुकेने रही । हमरा साहस नहि पड़ैत छल जे कहौ । कतेक दिनसँ एहि आगिमे जरि रहल छी ।’

वेदना के सगलैक जेना केओ दीपतिक मुँहपर कारी-कारी कोयलाक धारी बनाय रहल अछि । जेना दीपतिक ठोरमे ढेरक-ढेर खून लागि गेल हो, आ ओएह खून पसरिकेँ वेदनाक समस्त देहपर लागि गेल हो । वेदनाक दम घुटय लगलैक, ओकर दिमाग सुन्न भ’ गेलैक । ओ डगमगाइत पयरसँ घुरय लगलीह ओछाओन दिसि कि घड़ामसँ खसि पड़लीह ।

जखन वेदनाकेँ होश आयल तँ डाक्टर ओकरा आला लगाक’ देखैत छलैक । पयर लग दीपति छल आ माथ लग आशीष ।

—किछु नहि भेल । कपार कनिटा फूटि गेल । साँझ तक ठीक भ’ जेतीह । दस दिनक बच्चा अछि । एखन बड़ कमजोर छथि । खास ध्यानक जरूरत अछि । डाक्टर कहि चलि गेलैक ।

वेदना एक बेर खूनसँ भीजल तकियाकेँ देखलीह । दीपति काजसँ बाहर चलि गेलीह । आशीष वेदना लग बैसि ओकर माथपर हाथ फेरैत ‘नेहसँ बाजल—‘वेदना, एना किएक भेल ?’

वेदनाकेँ लागल जेना ओकरा माथपर आशीषक हाथ नहि मुदा, लाल-लाल घिपायल लोह राखल अछि । ओ हाथ अटक दरदसँ कुहरय लगलीह ।

‘बड़ दरद अछि वेद ?’—आशीष आस्ते-आस्ते ओकर मौसि देहकेँ दबवै लागल । आ वेदनाकेँ लागल जेना विषघर नाग ओकर सौंसि देहपर घूमि डँसबाक उपक्रममे अछि । घृणासँ ओकर देह जरकैत छल । वेदना मुँहसँ किछु नहि कहि एक विवश आँखिसँ आशीषकेँ देखि आँखि मुनि लेलीह ।

ओकरा पहिलुक बात जेना हृदयपर हथौड़ा मारय लगलैक । स्मृतिक झरोखासँ नाना प्रकारक किरण वेदनाक मस्तिष्कमे आवय लगलैक ।

ओ गर्भवती छलीह, आशीषक साथ शहरमे एकसरे रहैत छलीह । पहिलुक संतान । आशीष ओहि शहरमे एकटा कम्पनीक मैनेजर छल । परसौतक समयमे आशीषकेँ कहलनि घरमे तँ केओ नहि अछि । अहाँ भरि दिन आफिसे रहैत छी । नोकर चाकर पर घर छोड़नाय ठीक नहि तँ हम चाहैत छी जे अपन संगी दीपति के वजाय ली ।

आशीषकेँ एहिमे गौनी आपत्ति नहि छलनि । ओ बगलाह, ‘अहाँ घरक वाली छी, स्वाभिनी छी, जेना जे उत्तम बुद्धी से कहू ।’

वेदना मुँह दीपतिकेँ खबर दय बजाय लेलीह । दीपति अबितहि घरक सभटा काज-काजक नाक जकाँ बुझि लेलीह । कोना-कोना घरक की व्यवस्था अछि से सोचय बुझि लेलीह । तखन वेदना निश्चित भ’ बैसि रहलीह आ दीपति घरक स्वाभिनी जकाँ सभटा काज अपनापर लय लेलीह ।

कोनन वेदनाक मोनमे होय—ओह एतेक दिन हम एहन सुगमतासँ घरक राज चलायौ ततहुँ कोनो बुरि नहि रहय । कोनो चीज कहियो आशीषकेँ मांगय नहि कयल । सगल समयपर प्रस्तुत । आव कोना-कोना की करैत अछि दीपति से नहि कहल । पूरा जखन दीपति अपन गोरनार हाथसँ नारंगीक खोंइचा फेंकि उजर-उजर कियत राखैत छलीह वेदनाक दाना सभ निकालि-निकालि सजवैत छलीह । वेदनाकेँ प्रतीत होय जे हमहीं दीपतिमे चलि गेलहुँ । ओछाओनपर पड़ल-पड़ल हाथसँ काबाहन करैत छलीह—

‘दीपति कनिटा तकियाक खोल बदलि दिय’ ।.....

वेदना तँ जिनकर कमीजक बटनो कतहुँ टूटल अछि ।

‘माथी क कति दियोक जे गुलाबक डारि सभ छाँटि दय ।

‘तुम जेना गमलामे नीक जकाँ लागि गेल की नहि ?’

दीपति घरमातृपूर्वक ओकर सभटा काज करैत छलीह । घर-गृहस्थीक कर्म-काम सबसँ नीक साधना अछि से तँ बुझैत नहि छलीह । ओहि चिन्ताक सूत्र तँ वेदनाक हावें छल । तँ ओ उछलि-उछलि काज करैत छलीह । एहिमे यदि कोनो कुरा छल तकर ओकरा कोनों परवाह नहि छल । कखनो वेदना आशीषकेँ कहल छल कि विषय वजयिन तँ आशीष बातकेँ हँसीमे उड़ाय दैत छल । वेदनाक बचन । जिनवनामे आशीषकेँ आफिसमे मोन नहि लगैक । ओ बड़ सबेरे फुल्लि-फुल्लि गेलि आवथि ।

वेदनाक प्रणय भेनाय करीब दू दिन भेल । ओना तँ दीपति घरक काज-काज नहि छलीह । तद्बी ओ अपनाकेँ एहि घरमे राखि एक बड़का काम पुरि कयने छलीह । ई अभाव की छल से ठीक-ठीक नहि बुझि सकैत छी



मुदा, आशीष जखन घर अबैत छल तँ ओ खुशीक शूलापर झुलैत रहैत छल । छुट्टीक आनन्द खाली घरक सेवामे नहि मुदा एकटा एकर बड़ रसमय रूप अछि । वस्तुतः दीप्ति एहि घरमे आबि दिन रातिके चंचल बनाय देने छलीह । दीप्ती अपना व्यवहारसँ आशीषकेँ प्रभावित देखि आर चहकैत छलीह । हमरोसँ ककरो खुशी भेटतैक एही अनुभूतिसँ ओही हरदम नचैत रहैत छलीह ।

कहियो-कहियो जखन समयपर आशीषकेँ खेनाय नहि भेटनि तँ वेदनाक मोनमे बड़ दुख होय । ताहिपर आशीष बजैत छल—अहाँ छोट-छोट बातक किएक चिन्ता करैत छी । कनिटा अभ्यासमे हेर-फेर भेलासँ किछु नहि होइतछेक ।

वेदना क्षुब्ध भ' चुप भ' जाइत छलीह ।

कोनो दिन दुरहरियामे काजक समयमे जा क' दीप्ति आशीषकेँ तंग करय लागथि—अहाँ एना किएक करैत छी ? एखन काज छोड़ू । गप्प करू नहि तँ लियऽ ताश खेलाउ दुनू गोटे ।

आखिर लाचार भ' क' आशीष काज छोड़ि ताश खेलाय लगैत छलाह । ई बात वेदनाकेँ नहि पसिन्न । ओना तँ दीप्ति ओकरासँ दू बरखक छोट छल मुदा, ओ हुनका समझ बच्चे छल ।

तइओ वेदनाकेँ ई नहि पसिन्न जे कतबो ओ बच्चा रहय मुदा आफिस तँ बच्चाक खेलबाक जगह नहि छी । तँ ओ दीप्तिकेँ बजाय डाँटैत छलीह जे काजक समयमे हम आइ तक हुनका तंग नहि केने छी । अहाँ किएक जाइत छी हुनका तंग करबा लेल ?

वेदनाक क्रुद्ध बोली सुनि आशीष ओहि घरमे आबि जाइत छलाह । ओ चुपचाप आखिसँ इशारा कयकेँ दीप्तिकेँ बजाय लेथीन । दीप्ति गम्भीर मुँह बनीने घरसँ निकलि जाइत छलीह एवं बाहर आबि चहकै लगैत चलीह । कखनो वेदना आशीषकेँ बजायकेँ कहैत छलीह—अहाँ समय-असमय जे दीप्तिक सभ हठ बढाईत करैत छी से हमरा नहि पसिन्न ।

ताहिपर आशीष बजैत छल— 'किएक, अहाँकेँ शंका कथीक होइछ ?

—हमरा कथीक शंका, होयत ? हम काजक समयमे जंजाल नहि पसिन्न करैत छी ।

—की हेतैकआब तँ महीना १५ दिनमे चलिये जायत ।

एम्हर जहाँ कोनो आफिसक कागज आदि लयकें बैसैत छलाह आशीष कि चपु तय विज्ञानक किताब ल' पहुँचि जाथिन—'हमरा तापकेँ परिवहन रीति बता बिय' ।

आशीष टालि नहि सकथिन । ओ बता दैत छलथिन ।

वेदना पुनः आशीषकेँ बजायकेँ कहथिन—'हमरा नहि ई सभ पसिन्न अछि । अहाँ अपना काजसँ काज राखू ।'

—ईयू, अहाँकेँ हमरापर विश्वास नहि अछि ? एना जे अहाँ हरदम एके आब चलीत रहब तँ कहियो एना ठीक भ' जायत तँ कानय बैसब ।

वेदना चुप रहलीह । मोन विवश बैसल कनैत रहलीह ।

वेदना परसीत छलीह । ओ एखन एकदम पराधीन छलीह । आशीषमे एके ठीक एकटा विचित्र परिवर्तन भेल जाइत छलैक । जखन कोनो समय वेदनाक आश्रयक विरुद्ध शान्त स्वरे बजैत छलीह तँ आशीष जबाब सभक आश्रयक किताबकेँ देखय लागलथि । वेदना चुपचाप रहय लगलीह ।

एक दिन साँझ ओ देखलनि जे टेबिल क्रोममे जड़ल आशीषक फोटोकेँ दीप्ति आब चलीत रहब अछि आ खिड़कीक दोगसँ आशीष चुपचाप देखि-देखि बिहूसैत अछि ।

वेदनाकेँ भेलैक जे ओ महाप्रलयक गोदमे बैसल अछि । आब ज्वालामुखी आब चलीत रहब । ओ सोचैत-सोचैत वेदनाकेँ लागल जेना ओकर करेजा मे केओ मुर्दा भोकि रहल अछि । ओ उठिकेँ बैसि रहलीह । आस्तेसँ अपन आंगी आशीषकेँ देखय लगलीह कतौ सुइया नहि छल । तखन ओ दोसर आंगी बदलिकेँ देखि लेल । फेर लागल जेना केओ सुइया भोकि रहल अछि । ओकर अंग-अंग सभ मुर्दाक भाँति सँ भोयर होअय लागल । तखन भान भेल जे ई सुइया नहि अछि मुदा ई पूनू आंगी दीप्तिक हाथक-सीयल अछि । ओकर विश्वास सुइयाकेँ भोकि गेल अछि । तखन किछु आराम भेटलनि । दीप्ति पुछलीह—

वेदना, जाइ मैने जानी ?



—नहि...नहि, हम नहि पीयब, किछु नहि पीयब एखन। आहत-स्वरे बजलीह वेदना जेना ओकरा वीक्षित बजैमे एक अजीब भय लगैत छल। तखन स्मृतिक दुरूखाक दोसर खिड़की खुजल।

वेदना आ आशीष दुनू युनिवर्सिटीक छात्र रहथि। एक दिन कॉलेजसँ क्लास कयके वेदना रिक्शासँ घर जाइत छलीह आ आशीष साइकिलसँ घर दिसिसँ अर्बैत छलाह कि कनिक असावधानीक कारण दुनू साइकिल आ रिक्शाक मिड़त भ' गेलैक। आशीषके शायद पथरमे किछु चोट आवि गेलनि। रिक्शाके किछु नहि भेलैक। वेदना रिक्शापरसँ उतरि आशीष लग अयलीह।

आशीष लज्जित स्वरे बजलाह—'हमरासँ अपराध भ' गेल, क्षमा करब।

वेदना हँसिके बजलीह,—'एहिमे ककरो अपराध नहि अछि। ई तँ नियन्ताक एकटा खेल अछि। ओ शायद अपना सभसे परिचयक हेतु ई टक्कर लगौलनि।

आशीष एक सोन्दर्यमयी बालाके एना निःसंकोच बजैत देखि मोनमे सोचलथि 'देवी अहाँ असाधारण छी।'

आओर एहि दुर्घटनामे दूनों गोटेक मध्यक आवरण टूटि गेल। प्रकृति जेना दूनों गोटेमे देखा देखीक गिरह बाँधि देलक। आ, ई रास्ता दुनों गोटेक संबंध एकटा भावमय संबंध बनाय देलक। वेदनाक श्यामल शरीर विघाता जेना दोसर लोकक हेतु रचने छलाह। ओकर गोल-गोल मुँहपर पँध-पँध अलसायल आँखि एहि असार संसारक दृश्य देखबा लेल नहि बनल छल।

एक दिन इजोरियामे वेदना आ आशीष बैसल छलाह—

—वेदने! एकटा बात कही? विवाहक बेड़ीक सृष्टि जाहि मनुख लेल भल अछि, ताहिमे अहाँ नहि छी। हमरा लगैछ जेना नारी जातिक उन्मुक्त आवरणहीन प्रेम अहाँक हृदयमे हिलोर मारि रहल अछि। अहाँक हृदयक एहि दिव्य भावनाके हम आँकड़न कोना सम्हारि सकब? जीवनमे कहियो यदि हम अहाँके एकोरसी दुःख देब तकर पाश्चात्ताप हमरा जरूर कर' पड़त।

—ओह चुन... आशीषक ठोरपर आंगुर रखैत बजलीह वेदना—एहनो बात लोक बजैत अछि? भविष्य बड़ अनिश्चित होइत अछि।

एक दिन पटना कओलेजक वार्षिकोत्सव छल। छात्र-छात्राक पिकनिक प्रोग्राम छल। सभ छात्रा वेदनाके तंग कर' लागल।

—हमरा सभ मिलि पिकनिक प्रोग्राम बनौने छी।

—ई तँ बड़ उत्तम। के सभ जाइत अछि?

—प्रोफेसर सभ नहि जा रहल छथि, मुदा किछु छात्र डिपार्टमेंटक जा रहल छथि। अहाँके साथ करबा लेल आयल छी।

—हम...हम तँ नहि जा सकब।

—से किएक?

—हमरा ओहि दिन किछु काज अछि।

—महि, नहि ई बात नहि मानब, अहाँके चल' पड़त।

—नहि बहिन, एहि बेरि माफ क' दिय'। फेर कहियो जायब।

वेदनाक मनुहार लग सभ निराश भ' चलि गेलीह।

आशीष बेरि विचारक सागरमे उधियाइत वेदना बैसल छलीह कि आशीष जायब गेलाह। दूनों गोटेमे बहुत काल धरि गप्प चलैत रहल। अचानक वेदनाके बला सोल पड़लनि—

—अहाँ तँ परसू पिकनिकपर जाय रहल छी?

—महि तँ, अहाँके के कहलक?

—जेतना सभ बजैत छलीह।

—आब एहि प्रोग्रामके बदलि देने छी।

किएक?

—अहाँ नहि रहब तँ हम पिकनिकमे जा की करब?

वेदना लाल भ' गेलीह—एना नहि बाबु। हमरा लेल अहाँ नहि जायब, ओही तँ नहि।



—अहाँके नहि करवाक कारण ?

—ओहिना, ...ई हल्ला-गुल्ला नहि नीक लगैत अछि ।

—कहियो-कहियो लोगके दोसरोके प्रसन्नता देखवाक चाही ।

वेदना एक विचित्र दूषित आशीष दिसि तकलनि । ओहि एक क्षणमे वेदनाक आँखिमे एक सोरे सपना नाचि गेल जे देखि आशीष काँपि गेल ।

—हम जायब—आस्तेसँ वेदना वजलीह ।

आशीषक आँखिमे एकटा चमक आबि गेलैक ।

आइ पिकनिकमे बड़ रमन-चमन छल । आशीष अपन गिटार ल' क' आयल छलाह । रंग-बिरंगक ड्रेसमे छाल-छाता सभ तरेगन जकाँ चमकैत छल । गंगाक किनार । किनार पर बड़का-बड़का गाछ, चारू दिसि सीमेन्टसँ पिठायल एकटा छोट छीन चबूतरा । सभ केओ दल बाग्नि अपन हँसी ठट्टामे लागल । कत्ती स्टोव पर चाहक केटली चढ़ल छल । कत्तहुँ कोनो झुंड ताश खेलबामे व्यस्त ।

वेदना एहि भीड़ भाड़सँ फराक हटि एकटा पाथर पर बैसल नदीक प्रवाह देखि रहल छलीह । ओकर सोचक प्रवाह सेहो मतिमय छल ।

—मानव-जीवन ओहि मरीचिका सन सुन्दर अछि जकर प्रत्येक साँस पानि लहरिसँ उभरै अछि, मुदा, पिआस बुझबासँ पहिनहि मृत्यु पानिक एक-एक बून्नकेँ सोखि ओकरा बोल बनाय दैत छैक ।

लागल जेना ककरो गरम साँस ओकर पीठसँ स्पर्श क' रहल हो, वेदना चौंकि उठलीह—ओह, अहाँ—आशीषकेँ देखि आश्चर्य भेलीह ।

—हूँ हूँ एहिठाम अहाँ की सोचि रहल छी ?

कल्पनाक आँखि उठाय वेदना जेना स्वयंसँ बाज' लगलीह—

—जिनगी एकटा प्रवाहमान नदी अछि, मुदा, दूनु तटक मध्य बंद । ई गुलाब सन सुन्दर अछि मुदा मृत्युक काँटसँ घेरल । दीप जकाँ प्रज्वलित अछि, बिरडोक मध्य । ई पान अछि आशीष, जे अमावस्याक नारसँ सिकुड़ि जाइत अछि । जिनगी मृत्युक बुझवाक प्रयासक पर्याय थिक ।

—आइ अहाँ बड़ निराशामयी भ' गेल छी वेदना । जनैत छी, तट नदीकेँ रोकैत नहि अछि, ओकर रक्षा करैत अछि । नदीकेँ जखन बढ़वाक होइत अछि तँ ओ तटकेँ तोड़ि बढ़ैत अछि । काँट गुलाबक सुन्दरताकेँ अक्षुण्ण रखैत अछि जाहिसँ सभ केओ ओकर सुरभिसँ अपन साँसकेँ स्वर द' सकय । बिरडो ज्योतिक शत्रु नहि वरन् आर वेसी प्रज्वलित हेबाक प्रेरणा थिक । जिनगी एकटा आकर्षक कण अछि वेदना, जाहि ठाम आशा विश्वास बनैत अछि ।

वेदना एतेक सहानुभूतिक स्वर आइ धरि नहि सुनने छलीह । ओ हाथमे मुड़ी नुकाय फफकि उठलीह ।

—चुप भ' जाउ वेदना, अधीर नहि होउ ।

—वचनमे माय मरि गेल । थोड़ बहुत पढ़ा-लिखा बाबूजी चलि गेलथि । माय-बहिन केओ नहि आशीष, एहि संसारमे असगरे हम ।

—वेदना हम जे छी—

—अहाँ—कोना ?

—जीवनक लंगरमे बान्हल प्रत्येक मानवक, नौका ऊर्मिपर हिलोर मारैत कखन कोन नाहसँ टकरा जाय, से कोन ठीक ? अहाँ उदास नहि रहू—

—आशीष, हमर हृदयमे एकटा घाह बनि गेल अछि । नहि जानि कतेक परिवर्तन भेल, कतेक आँधी उठल आ शून्यमे विलीन भ' गेल । चित्र बनल आ मेटल, मेटल आ बनल । मुदा, इ घाह नहि भरल ।

वेदना—आशीष ओकर मुड़ी उठेलक दू बून्न ओकर हाथपर खसि पड़ल ।

—वेदना-वेदना—बचल चेतना चीकरैत अयलीह

—अहाँ सभ एहिठाम भावनामे डूबल छी आ ओहिठाम देखिओक जा कऽ सभ ताल लगौने अछि । चुलु-चुलु ।

वेदना आ आशीषकेँ पहुँचैत देरी, सभ केओ लोक' लगलनि ।

—अहाँ सभ चोरा-नुका असगर भागि गेलहुँ ?



—प्रकृति एतेक रसमोदे भरल अछि जे केओ हृदयसँ गप्प करवाक लेल व्यग्र भ' उठत ।—चुटकी लैत सीमा बजलीह ।

—एकर दण्ड भेटबाक चाही...दण्ड—कतेको स्वर हहा उठल ।

—हम दण्ड भोग' लेल तैयार छी—आशीष मुड़ी नुघरागत बाजन ।

—आशीषक गिटार आ वेदनाक गीत—इएह थीक दण्ड ।

—नहि-नहि, गीत नहि ! आइ एहि मजलिसमे कोनो शायरक गजल हेबाक चाही ।

—ठीक-ठीक जे रंग गजल आनत ओ गीत नहि ।

वेदना अप्रतिम भ' उठलीह—आइ हमरा मोन ठीक नहि अछि । आइ हमरा बदला सीमा गीत गओतीह ।

—वाह, वाह—खेत खाय मदहा, मारि खाय जोलहा—

सीमा हँसैत बजलीह—आइ अहाँक एको नहि सुनब । गाब' पड़त ।

वेदना संकोचसँ गड़ल जाइत छलीह आ आशीष परिहाससँ मुस्की मारैत छल ।

आशीषक हाथ गिटारपर पूर्ण संलग्नतासँ खेल' लागल आ वेदनाक स्वर-लहरि समस्त वातावरणकेँ वेदनामय बना देलक—

—“मुझे इसका गम नहीं कि बदल गया जमाना

मेरी जिन्दगी है तुमसे कहीं तुम बदल न जाना”...

आशीष चींकि वेदना दिसि ताकल, वेदनाक बोझिल आँखि आशीषे दिसि तकीत दर्द, पीड़ासँ भरल छल । आ आशीष कने हँसि मुड़ी झुकाय लेलक जेना वेदनाकेँ समझाय देलक—

“विश्वास राखु नहि बदलब ।”

आ गीत खतम भेलापर वाह-वाह स्वरसँ आकाश गुंज' लागल ।

भाव आशीषक पार थिक । गजलक उत्तर गजनमे हेबाक चाही । एहन

भाव जे आजुक दिन एकटा अमिट दिन जिनगीक भ' जाय—सभ दिसिसँ आपस होमय लागल ।

भाव पूर्ण नेत्रसँ देखैत आशीषक स्वर-लहरि जीवन्त भ' उठल

—“वो हमसे किनारा करते हैं”

हम उनके सहारे जीते हैं

... ..”

वेदना... वेदना, कतेक बेर भ' गेल अहाँ एखन घरि भूखल छी । उठु-उठु किछु खा लिय'—आह—वेदनाक स्मृतिक पट्ट खट द' बंद भ' गेल । सामने आशीष बैसल छल । आशीष ओकरा सहारा द' अपन छातीपर ओंगठा लेलनि कि वेदनाक स्मृति पट्टमे एकटा छेद देखा पड़लैक ।

वियाहक बाद आशीषक छातीमे एकबेर बड़जोर दर्द भेल छल । साँस लेबामे बड़ तकलीफ छल—एना किएक भेल ?

की बात छी ?—वेदना व्यग्र छलीह ।

आशीष बाजल किछु नहि, मुदा, वेदनाकेँ अपना लग बंसा ओकर माथ

अपन छातीसँ सटाय लेलक । एकटा ठंडा मलहम जेना ओकर छातीपर लागि गेल । छातीक दर्द जेना एकदम शांत भ' गेलैक ।

—वेदना—एखन हमरा बड़ जोर छातीमे दर्द छल ! जहिना अहाँक माथ छातीसँ सटाय लेलहुँ, सभटा दर्द चलि गेल—

वेदनाकेँ अपनामे सभेटने आशीष बाजल—अहाँ हमरा छोड़ि तँ नहि देब ?

जहिया हमरा छातीमे दर्द उठत अहाँ एहिना करब ने ? अहाँ हमरा छोड़वत नहि.....

वेदनाकेँ लागल छल जेना ओ अपनेटा नोर नहि वरन् आशीषक नोर तेहो पीबि रहल अछि ।

—दीप्ति जल्दी करू—पारी नेने आउ ।



एकाएक अन्हार भ' गेल आ पटक छेदसँ बहिराइत इजोत बिलीन भ' गेल । रोटीक एक-एक घास ओकरा विपक अंगोरल लगैत छल । दीप्तिक हाथक रोटी—घृणासँ वेदनाक नस-नस उत्तेजित भ' गेल ।

—आब नहि खाय सकब, आब नहि.....

वेदनाकेँ आशीष दिसि ताकि नहि होइत छल ओकर हृदय टुटि गेल छल । विश्वास एकटा तेहेन भौं पर बनल देवाल अछि जे जल्दी टुटैत नहि अछि । मुदा, टुटबाक उपरान्त जोड़बाक प्रयास अर्थ । हेँ जोड़'या होयत छैक, टुटबाक चिन्हक संगे । स्त्री दुविधाक भूखल नहि अछि ओ हृदयक भूखल अछि । ओ रूख-सूख खा अपन पतिक सब प्रेमक अधिकारिणी होम' चाहैत अछि ।

—वेदना, आब अहाँ आराम करू । बड़ कमजोर भ' गेल छी । अहाँकेँ किछु भ' जायत तँ हम कोना जीयब ?—अगाध सिनेह नेने आशीष बजलाह ।

वेदना पुरुषक एहि रूपकेँ देखि बड़ चकित छलीह । कतेक डोंगी जीव अछि ई ? नारी पुरुषक खेलौना थिक । जखन नव-नव अजैत अछि' खेला घुपा अघाइत अछि । संगे पैसा नहि रहल दोसर खेलौना खरीदबाक तँ अनको खेलौनासँ खेलि घुपि जी शान्त करैत अछि । रहि रहि वेदनाक माथ पर इ वाक्य छेनी मारैत छल—

—“मेरी जिन्दगी है तुमसे, कहीं तुम बदल न जाना”

“हम उन्हींकेँ सहारे जीते हैं ।”

ओकर कनपटीक नस जेना सोचैत-सोचैत टुटि गेलैक । आँखि अधमुनल सन, शान्त ओछाओन पर पड़ल छलीह । ओकरा लागल जेना केवो हुलकी मारि, ओकरा सुतल बुझि चलि गेल । दुपहरियाक निस्तब्ध बेला । नौकर चाकर सभ सुतल । निस्तब्धता एहन जे वेदना अपन घड़कब स्वयं सुनैत छलीह । ओकर मोनमे आसकाक लहरि उठल—

ओकरा देहमे उठबाक शक्ति नहि छल मुदा ओ एक अदृश्य शक्तिसँ घींचा-यल चलि गेलीह केबाड़ दिसि । डगमगाइत पयरे ओ जा क' देखैत छथि तँ विश्वासक रूण रूपेण खून । पलंग पर दीप्ति आ आशीष लटपटायल घोर निद्रामे.....

वेदनाकेँ ई आघात सहबाक ताकत नहि छल । ओ कोनो प्रेरणासँ पीड़ल गेलीह, थरथर कँपैत गात, कमजोर रमणी, दुनू हाथसँ शकशोरि देलीह आशीषकेँ । ओ कमजोरीक आगेसँ मूर्च्छित भ' खसि पड़लीह ।

पहिने तँ आशीष आ दीप्ति अकचका एक दोसरा दिसि तकलनि । पुनः परतुस्तिपतिक बोध हेबा पर आशीष डाक्टरकेँ बजौलक ।

—वेदना, वेदना होशमे आउ, होशमे आउ । हमरा माफ क' दिय' वेदना, हमर जान ल' लिय' वेदना... हमर जान—

आशीषक सुतल प्रेम जेना बहो बहो कानि रहल छल ।

कनपटीक नस फाटि गेल छनि । इ कमजोरीक अवस्थामे हिनका चलबा फिरबाक नहि चाही ।

वेदना, वेदना—वेदना जकाँ भोकारि पाड़ि रहल छलाह, आशीष—अहाँक हमर सप्पत छी, हमरा नहि छोड़ू... हमरा माफ क' दिय'

बेसुध वेदना निश्चेष्ट पड़ल छलीह । माथसँ शोणितक घार बहि क' ओकर साँसे जकाँ जमि गेल छल ।

—वेदना हम अपन एकमात्र नवजात बेटाक सप्पत खा कहैत छी आब कहियो अहाँक विश्वासक खून नहि करब । अहाँ छोड़ि केवो हमर जीवनमे नहि आओत.....एहि बेर मानि जाउ, वेदना—बेटाक सप्पत.....





## पराधीन सपनहुँ सुख नाही

—हेअय, अहाँ सभ तँ नारी-स्वतंत्रता लेल एतेक बात बजैत छी, मुदा हम बाजी ? हमर तेवर देखिते ड्राइंगरूममे बैसल तीनू गोटे चौंकि गेलाह । ई हमरा उत्साहित करैत बजलाह—हँ-हँ, बाबु, अहीके विचार हम सभ सुनी...

हमर मुँहपर तीन जोड़ी आँखि अपन पाँखि फड़फड़वय लागल । मुदा, हम निर्वन्ध छलहुँ—लोक कहैत अछि, स्त्रीकेँ परिवारमे बाहि-छानि क' बेड़ी पहिरा क' राखि देल गेल अछि, ओकर शोषण कयल गेल अछि ।.....हम एहि मतक एकदम विरुद्ध छी.....

—अयँ !—सुदेशबाबू चौंकि गेलाह, प्रवास अकचका गेल आ ई मन्द मुसकीक संग बजलाह—तखन आगु मेम साहेब ?

—विधाता, सृजन कयलनि स्त्री आ पुरुषक । दुनूक देहपट्टिक निर्माणमे भिन्न-भिन्न तत्त्वक योग अछि । दुनूक निर्माणक फार्मूला भिन्न-भिन्न अछि ।

“नारी तुम केवल अद्या हो  
विश्वास रजत नग पग तल में,  
पीयूष स्रोत-सी बहा करो,  
जीवन के सुन्दर समतल में ।”

ई बात कोनो फुसि नहि थिक.....

—भोजी, अहीके जाति तँ नारा उठौलक—ई सभ स्त्रीक दुर्बलताक लाभ उठाक' स्त्रीक बर्तारण कयल गेल अछि—आ अहीं बजैत छी.....

सुदेश विस्मित सन टेबुल पर अपन आंगुर ठक-ठक करैत बाजल ।—

—सुदेशबाबू, स्त्रीक निर्माण जाहि तत्त्वसँ कयल गेल अछि, ताहि लेल ओकर सभसँ उत्तम वा सहज स्वरमे कहल जाय यथोचित स्थान ओकर परिवार अछि । हम स्त्रीकेँ राजनीतिमे भाग लेनाइ नीक नहि बुझैत छी । अपन हिन्दू धर्ममे सभ दिनसँ संयुक्त परिवार चलि आबि रहल अछि, एकटा मयादाक संग,

परिवारक संग । कोनो संयुक्त परिवार बिना कोनो गृह-नीति वा राजनीतिक नीति चलि सकैत अछि । गृह-संचालनमे पॉलिटिक्स अछि । आ ओहि राजनीतिमे प्रधानमंत्री रहल स्त्री । कोनो संयुक्त परिवार रहबाक वा टुटबाक मुख्य अंग स्त्रीपर रहैछ । ओकरापर तँ एतेक भार छैक, समस्त परिवारक मुख दुख, नीक-बेजाय सभटाक भार जे अपन त्याग, सहिष्णुताक नीतिक कारण कोनो सीसरा सकैछ । ओकर प्रकृतिए ताहि प्रकारक अछि जे ओ सभ किछु सहि भरीक रीढ़, छाहरि, नोर-मुस्कान, हँसी-खन.....

—बीबी, यू आर ग्रेट—प्रवास बीचमे बाजि उठल ।

—ग्रेट, हम की रहव प्रवास ! मात्र हम जे अनुभूत कयलहुँ—ई स्त्री-संयुक्त परिवार अगिला वर्ष, ई सभ हाथीक दाँत थिक । पश्चिमसँ आयल हवा हमरा मुख्यक अकशॉरि देलक । स्त्री अपन परिवारक राजनीतिमे एतेक असफल भेलहुँ जे आठ शत-प्रतिशत परिवार टूटि रहल अछि, कोनो घरमे चैन नहि । कोनो घरमे संतोष नहि । एकर मुख्य कारण की थीक ? प्रधानमंत्रीक अयोग्यता.....

—नौजी, अयोग्यता तँ अहूँमे किछु अछि ।—बीचमे बात कटैत सुदेश बाबू बजल ।

आम अकचकयबाक बारी हमर छल ।

—एतेक कालसँ हमरा सभ प्रधानमंत्रीक भाषण सुनि रहल छी, मुदा एक वाक्यक व्यवस्था एहि स्पेशल सभा लेल नहि अछि ।

भायर, हीयर ! प्रभास थपड़ी पारि उठल । हम लजा गेलहुँ ।

—ई हँ भिबा, अहाँ हारि मानलहुँ ।—अपन सिगरेट जरबैत ई बाजि बजल ।

सभ तँ सते अपन सोहमे विसरि गेल छलहुँ जे एहि ठाम हमर राजनीतिविनि (हुनका सभक शब्दमे भाषण) क नहि, चाहक गरम-गरम कपड़ाक बाहरी भाग पहल, अनचाहल सभ घोंटा जाइत अछि ।

आजमे वाह बनबैत छलहुँ । कानमे ड्राइंगरूमक गुप्प आबि-आबि कोनो गीत आइत छल ।



हिनक स्वर छल—शिवा के हम लाख चाहियो क' पॉलिटिशियन नहि बनाव' चाहैत छी.....

हमरा मनमे हँसी छुटि आयल हिनक सरल कल्पना पर। खुदानें खास्ता कतहुँ हम कोनो मिनिस्टर बनि जाइ तँ पाछाँ-पाछाँ एकटा पुर्जी ल' हमरासँ भेंट करबाक लेल बेहाल रहताइ। पता नहि, तखन हमर मोन केहन रहत... हमरा तँ स्त्रीक नोकरीयो करब पसिन्न नहि पड़ैत अछि। जाहि घरमे पति-पत्नी दुनू नोकरी करथि, दुनू थाकि-हारि घर आवथि, संगे-संगे बाल-बच्चा सभ थाकल हारल घर आबय, सभ एक दोसरापर बिगड़ल, एक दोसरा पर खोंझायल, घरमे कोनो व्यवस्था नहि, कोनो सत्तीका नहि ओ घर की होयत? नौकरपर जे घर छोड़ल जाय तँ जेही घरमे अछि, सभ स्वाहा। बच्चा सभ स्नेहक अभावमे ममत्वक अभावमे सुखा जाइत अछि, ओकर प्रकृति रुच्छ भ' जाइत छैक..... कतेक घरमे देखलहुँ आ दुख होइछ जे दू पैसा यदि पति कमाइत अछि तँ ओ नोन-रोटी खाय किएक ने संतोष करैत अछि! आवश्यकता तँ जतेक चीजक चाहब, होयबे करत। जाबत संतोष नहि, ताबत आनन्द नहि। आ आफिसक थाकल-ठेढ़िआयल पति जखन घर अबैछ, बाल-बच्चा भूखल-पियासल घर घुरैत अछि, तखन स्त्री अपन घरके नन्दन कानन बनौने—एकटा स्वर्गिक मुस्कान अघरपर लेने पलक पीछि दरबज्जा पर बिछौने अछि। पत्नीक अघरक मुस्की देखैत पतिक सभ थकान दूर, माताक स्नेहिल बाँहि भेटैत देरी मुखमायल-मोलायल नेना हरिहर भ' जाइत अछि। एक स्त्रीक लेल एहिसेँ पैघ गरिमा की, एहिसेँ पैघ गौरव की.....

—भोजी! चाह बनबैत छी कि कविता क' रहल छी? सुदेश बाबूक स्वर हमरा चेतनामे आनि देलक। चारि कप चाह ल' थोड़ेक निमकी एकटा प्लेटमे राखि ड्राइंगरूम अबैत छी। ठहाकाक गरमीसेँ कोठली भरल छल।

—घी चीयसँ फार दीदी! निमकीक प्लेट देखैत प्रवास उछलि गेल।

—लागि लिव आवर प्रधानमंत्री। चाहक कप उठबैत सुदेश बाबू बजलाइ।

—ही, तोरा सभ हमर घरके रह' देवह की नहि? हिनक स्वर छल— दहक फुला-फुला हिनक दिमाग आकाश पर चढ़ा। हिनको दिस चाहक कप बढौलहुँ, आग्रह-मिश्रित कर्तव्यक संग।

—जे कह' विग्रह बाबू तो बड़ 'फारचुनेट' छह। जाहि ठाम सेक्रेटेरियटमे बाबूगिरी करैत-करैत लोक असमय बूढ़ा जाइत अछि, ओकर कोनो भविष्य नहि, कोनो अतीत नहि—समरस, समतल जीवन ताहि ठाम तोहर घर एतेक प्राणवंत, एतेक जीवंत रहैत छह। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण भोजी छयून, नो डाउट—सुदेश बाबूक बेहराक लकीर जेना गहरा गेल—भरि दिन खटि-मरि घर जाइत छी। जाइत देरी ओएह खटखट-हरहर, ई नहि अछि ओ नहि अछि। अरे भाग्यवान, पूर्णिमाक दिन तँ सभटा दरमाहा अहींके हाथमे राखि दैत छी, आब अहाँ सम्हाल.....हम ककर जेब काटब.....मुदा नहि, आइ फल्लां ओत' एतेक बढ़िया शरबत-सेट आयल छैक, फल्लां कनिजां एतेक नीक नुआ पहिरने अछि! एहि ठाम तँ शरबत रखबाक उपाइए नहि, शरबत-सेट। एकटा विद्रूपता भरल स्वर छल सुदेश बाबू के।

कोठलीमे एकटा गम्भीर उदासी पसरि गेल।

—ओह, सुदेश बाबू, ई कोन कानव ल' बैसलहुँ?

—प्रवास उदासीकेँ कटैत चहकि उठल—सभ केओ तँ एके बाटक बटोही थिकहुँ। आ हमरा सभ एहि विग्रह बाबू सभक बिना एहि देशक कोनो काज नहि चल सकैत अछि। एहि सरकारक इमारतक न्यो हमहीं सभ थिकहुँ। नि आगाँ किछु पयबाक उन्माद आ ने अतीतक विषाद। छोड़ू ई सभ...। प्रवासक शजाकांमे लोक जेना काँपि गेल।

—सुदेश बाबू! ई एकटा निसाँस लैत बजलाह हमतँ सरिपहुँ भागवत छी। मुदा, स्वयंकेँ शिवाक समक्ष एकदम अपराधी बुझैत छी। आइ एस वर्ष ज्वाहक भ' गेल, मुदा मोन नहि अछि, एक खण्ड नुआ कि आर कोनो परमाइश हमरा लग कयने होयतीह। तीन-तीन बच्चाक पढ़ाई आ पटनाक खर्चा। कहियो कोनो शिकायत हमरा लग नहि कयलनि। कतेक बेर मूड खराब रहैछ, आफिसक तामस हिनका पर उतारि दैत छी, मुदा...शिवा घरमे टेप-रिकार्डर बजा चलिते रहैत अछि। अहाँ देखिते छी, हिनक यैह गुणक कारण दोस्त सभ हमरा ओत' हँसि-बाजि मोन हल्लुक करबा लेल अबैत रहैत छथि। कखनो-कखनो हिनक एहि गुणसेँ हमरा ईर्ष्या भ' जाइछ।

—कनखिया क' हमरा दिस सकैत ई हमरा कचकचौलनि।



—बेस-बेस, बड़ गेल, बहुत सुन्दर भाषण प्रेसीडेन्टक रहल।—हम थपड़ी पारत बजलहुँ। ई खिसिया क' चुप भ' गेलाह। बातावरण पुनः हल्लुक भ' गेल।

—'दीदी, एकटा बातक उत्तर हमरा आर दैए दिअ' आठ बाजि रहल अछि, आव हमरा सभ चल जायब।' प्रवासक उत्सुक नयन दिस हम प्रश्नवाचक दृष्टि देलहुँ।—एक क्षण लेल मानि लिय' दीदी, अहाँ एहि देशक प्रधानमंत्री भ' जायब त' की करब ?

—हट्ट ! प्रवास जी, अहाँ तँ कोन मजाक कर' लगलहुँ। हम लजा गेलहुँ।

—नहि-नहि भीजी, आव तँ एहि प्रश्नक उत्तर अपन बुद्धिमती भोजीक भाषणमे सुनबे करब। प्लीज भीजी, प्लीज...

—अरे शिवा बाबु, जे जमौनाइ अछि, एहि चंडाल चौकड़ीमे जमा लिअ, केर ई मौका आयत नहि। इहो गप्पक गुदगुदी हमरा लगब' लगलाह।

हम कने संयत भेलहुँ... देखू जखन अहाँ सभ पुछैत छी तँ अपन आन्तरित विचार कहैत छी। भारत गाम प्रधान देश अछि। एहि देशक उन्नति तखने होयत जखन गामक उन्नति होयत। हम सबसँ पहिने कानून बनबितहुँ—कोनो मंत्री कोनो शहरमे आम सभा नहि क' सकैत अछि। ओ जखन कोनो सभा की मीटिंग करथि तँ एकदम देहातमे।

हिनक ठोरपर हँसी पसरि गेल। सुदेश आ प्रवास सरल शिशु जकाँ हमर कथन आत्मसात् क' रहल छलाह।

—से किएक भीजी ?

—एकर बहुत कारण अछि सुदेशबाबू। सभसँ पहिने अन्हारेमे पड़ल गामक लोक देखत जे के हमर देशक कर्णधार सभ छथि जनिका हम प्रतिनिधि चुनिक' पठौलहुँ। जनतामे उत्साह जागत। दोसर जे कोनो गाममे सड़कक व्यवस्था नहि छैक। यदि कोनो गाममे अपन सभा रखैत छथि तँ अधिकारीगण ओहि गामघरि पहुँचबा लेल सड़क बनबा देताह, सफाई करबा देताह। समस्त गामक सफाई भ' जायत। जाहि ढँगक दौरा मंत्रीगणक रहैत छनि, रोज कोनो न कोनो मंत्री कोनो न कोनो गामक दौर करताह आ तखन देखिते-देखिते समस्त

गामक कावा-पलट भ' जायत, समस्त देशक उद्धार भ' जायत। सुदेश बाबू, जा घरि गाम नहि उन्नत करत ता घरि देश नहि उन्नति करत।

—भीजी, एतेक बात अहाँ कत'सँ सिखलहुँ ?—सुदेश बाबू विकलित छलाह।

—ओहि दिन चुड़ावाली आयल छल, सुदेश बाबू। सौंसे देहमे हड्डी पर गामक खोल लटकल—मलिकिनी हमरा सभ तँ कोटा महक एक मुट्ठी चीनीयो नहि देखने छिएक—कोटामे की अबैत अछि की जाइत अछि ? हमरा सभ ले कोन बेवता आ कोन सरकार ? किओ नहि। हमरा छातीमे आगि घघकि गेल छल सुदेश बाबू 'हमर आँखि भरि आयल छल'।

—माँ-माँ साढ़े आठ बाजि गेल। निद्रा लागि रहल अछि। छोटका रिगु हमर बाँहि पर झूलि गेल।

'भीजी एतेक सुन्दर साँझ लेल बहुत धन्यवाद'।

—हँ दीदी' सरिपहुँ प्रवास आ सुदेश बाबू उठैत बजलाह।

'ही भीजी, सबकिछु आ जे भीजीकेँ अनलक से किछु नहि।'।

अहाँ दीदीसँ धन्यवाद ल' लेब ! प्रवासक उक्ति संग एकटा ठहाका जनकारणी विलीन भ' गेल।

एकटा साँझ कखन रातुक पियालीमे खसि पड़ल, किओ नहि बूझ सकल।

हमर जिनगी कोन घाटी, कोन पर्वतमाला, कोन जंगलमे गुजर रहल अछि, के बुझत ? डाइग्लूमक फिलास्फी आ जिनगी दुनूमे कतेक अंतर अछि। जिनगी, जिनगी अछि। जकर एकटा अपन सिद्धांत अछि, अपन कानून अछि, अपन नियम अछि, लोककेँ प्रताड़ित करवाक, लोककेँ रूदनक सरगम सुनयबाक, लोक के दुःख पहुँचैवाक.....ताहिमे हमर जिनगी ? जिनगीसँ फराक आर एकटा जिनगी होइल जाहिठाम आँखिक आकाशमे सपनाक इंद्रधनुष उगल रहैछ, सभक दुःखकेँ अपन दुःख बनाक' घंटो ओकरा लेल सोचैत रहैत छी, ककरा लग जाकी अपन दोहरी मोन छेल, हम भीतरे-भीतर कतेक जर्जर भेल जाइत छी।



एतेक कमजोरी, एतेक कुंठाक मध्य हम हँसिते रहैत छी, मात्र अपन परिवारक लेल। मुदा इहो मुस्कान, के एकर व्यथा बुझत? सुन आँगन, सुन दुपहरिया आ चाहुक एक कप लेल हमर मोन छटपटा उठल। माथ पर एकटा विचारक कंकड़ खदद लागल—हम एतेक चाह किएक पीबैत छी? भरिसक शराब बुझि। जहिना लोक शराबमे अपन दुःख बिसरि जाइछ तहिना हम चाहुक कपमे अपनाकेँ विस्मृत क' हँसीक एकटा टंकी एकत्र क' लैत छी। ओहि दिन ई कहने छलाह—शिवा अहाँ एतेक चाह नहि पीबु। ई स्लो प्वाजनिगक काज करैत अछि। आइ नहि.....

आ हम चाँकि गेल छलहुँ—'स्लोप्राजनिग'—ई तँ हम कहियो नहि सोचने छलहुँ—ठीके तँ अछि। तखन तेँ मृत्यु दिस हमर बड़वाक प्रयास शत-प्रतिशत सफल भ' जायत। आह! ई 'स्लोप्राजनिग'क काज क' सकत? हमर माथ भारी भ' गेल। अपनासँ दूर भागवाक प्रयास हम करैत छी—किएक? एकांत, जेना हमरा अपनामे लील लैत अछि।

—शिवा अहाँ कोनो कॉलेज ज्वाइन क' लिअ'।—हिनक मोन हमर मोनक संग संवेदनशील भ' उठैत अछि—भरि दिन असकर घरमे किछुसँ किछु सोचैत रहैत छी, आ दुनूगोटे मिलिकेँ समस्त आर्थिक समस्याकेँ हल क' लेब।

हम हुनक मुँह बंद क' देने छलहुँ—हमरा अपन घरमे खूब मोन लगैत अछि, आर्थिक समस्या हमरा किछु नहि अछि, कोनो आवश्यकता नहि।

—मुदा नहि, हम स्वयंकेँ बहटारैत छलहुँ। हमर परिवारमे ककरो कोनो चिन्ता नहि होइक आ अपनाकेँ कुशल सिद्ध करवा लेल, हम सबकेँ खुशी रखवाक प्रयत्नमे लगलहुँ। प्रतिफल, भीतरे भीतर हम टुटैत गेलहुँ। कतहुँ बड़ दुःखी रहय लगलहुँ' बड़ दुःखी। जनैत छी महीनी बड़ बढ़ि गेल अछि। जोड़ैत छी तँ आमदनीसँ बेसी खर्च भ' जाइत अछि। कहियो-कहियो लगैत अछि दुनियाक जतेक दुर्भाग्य अछि वा जतेक अपराध अछि सबक मूलमे हमही छी, सबटा अनर्थक जड़ि हमही छी, आ हमर मोन आठ बरख पहिलुक विस्मृत अतीतक अन्हार प्रकोष्ठ, जकरा हम एकदम बिसरि गेल छलहुँ, प्रायः अवचेतनक दुआर खोलि आस्तेसँ आवि गेल।

—जखन हम द्विरागमनमे सासुक पयर छूने छलहुँ तँ अनकारैत स्वर सासुक

सुनाय पड़ल—हुँ" "ह, दान-दहेज किछ नहि, कथीक पयर छुअब? अहाँ-सभक लक्षण तँ हम पहिनहि देखलहुँ। कोन डकैत सभक...फेरमे हम पड़ि गेल छी—हम कानय लागल छलहुँ। हम नहि बुझैत रही एतेक दुर्व्यवहार हमरा संग किएक कयल जा रहल अछि? ई तँ सत छल, हमर बाबूजी दस हजार टाका आ दान-दहेज किछु नहि द' सकलाह, मुदा तकर प्रतिफल की एतेक.....।

हम साहस कयलहुँ अपन घरकेँ अपन बनयबाक, अपन सासु-ससुर, दियादिनी सभक स्नेही बनवाक भरि-भरि दिन खटैत छलहुँ, मुदा हमर सासु टोल पड़ोसक संग हमर खिस्सा करैत छलीह। हम ककरोसँ घृणा नहिक' सकलहुँ, जनैत रही, घृणा, घृणाक जन्म दैत अछि। घृणा आइ धरि प्रेमक जन्म नहि द' सकत। भैया कहैत छलाह—सत्ते, पुतोहु ओएह थिक जे बेटी बनि अपन सासुरमे राज करय। मुदा, हमर अनुभव अछि जे अपन समाज कहियो पुतोहुकेँ बेटी नहि बुझि सकैत अछि। ओकरासँ खाली अपेक्षा रहैछ। हम बेटी बनय चाहैत छलहुँ मुदा सासु उपदेश दैत छलीह। एक दिन घरमे कोनो अग्रिय घटना भ' गेल जकर मूलमे हमरा राखल गेल। जखन कि हम जनितो नहि छलहुँ जे कि भ' रहल छैक, आ कि की भ' गेल। तइयो हम सासुक पयर पर खसि गेलहुँ—माए, हमरासँ जे गलती भ' गेल माफ क' दिहथि। हमर नैहरक लोक जे गलती कयने होथि, हम तँ आव हिनकर बेटी छियनि, आव तँ इएह हमर माए छथि। हिनक खुशी हमर खुशी थिक। ई अपन बेटी पर तमसायल नहि रहथु.....।

आ हम फफकि-फफकि कानय लागल छलहुँ। पयर घिचैत हमर सासु बमकि उठलीह—हे हमर पयर-तयर नहि छुबू। एतेक नकल पचीसी हमरा पसिन्न नहि। हमर बेटी सभक परतार करत? कोन बुत्ता पर? जतय गेलीह, रूप आ मनसँ घर भरि देलक। माय-बापकेँ हौसले नहि रहनि। हौसला रहितैक जखन ने? बेटी भारी लगलैक, हमरा घरमे फेकि देलक.....।

आ हम कहियो प्रतिवाद नहि कयलहुँ। एकटा दहेजक कुप्रथा समाजक कोइका कारण हमर ई गंजन होइत रहल। हुनका लेल तँ आर बेटा-बेटी छल, हमरा लेल तँ एकटा ओएह सासु-ससुर फेर हम किएक हुनक बातक दुःख मानी? हिनक प्रेमक मध्य हमरा माए-बाप, सासु-ससुर सभक प्रेम भेटल। आ एक दिन सभ ठीक भ' गेल।



ठक.....ठक.....ठक.....केओ केबाड़ खटखटोलक—सिनेमाक रील जकाँ आगूसँ सभटा अतीत निकलि गेल। केबाड़ खोलैत छी - मलिकिनी दूधक हिसाब क' देतियेक..... हमर चेहरापर म्लान-मुस्की आवि गेल।

आब-तँ साँझ पड़ि गेल। स्कूलसँ, आफिससँ सभ अबैत होयताह, काल्हि हिसाब क' देब।.....

दूधवाली प्रायः हमर म्लान चेहरा, नोरायल आँखि आ व्यथित अंग देखि मुस्की मारैत चल गेलीह।

ओह ! आइ मालिक अबोताह तँ.....टूटल चूड़ीक एकटा हास हमर अधर पर आवि गेल। आइनामे चेहरा देखैत छी। अपन चेहरा अपने अनचिन्हार लगैत अछि। पाइप लग जा' क' मुँह-हाथ धो अतीतकेँ अपनासँ दूर धकेलैत छी। सभ अबैत होइत, मुदा समस्त तन-मनकेँ अतीत अपन बाहुपाशमे कसने अछि.....नहि, नहि.....अहाँ जाऊ, अहाँ जाऊ। हमरा जीब' दिय' प्लीज ! कहियो कालकेँ अहाँकेँ की भ' जाइछ जे एकटा कठोर प्रेमी उखत प्रेमी जकाँ हमरा आलिंगनबद्ध कयने रहैत छी, एतेक हमरा नहि सताउ !.....हम अतीतक बाँहि अपन मोन परसँ, अपन तन परसँ हटबैत रहलहुँ.....

ठक..... ठक..... ठक.....

मेम साहब, ई तरकारीबलाक स्वर छल। मोन जेना फेर चंचल भ' पार्थिव जगतमे आवि गेल...

मेम साहब, पहिलुका टाका द' देतियेक।

पैसा...पैसा...पैसा...विग्रह बाबू, सभक राजमे तँ मासक पंद्रह-बीस तारिखक बादे अमावस शुरू भ' जाइत अछि। पेटीमे देखैत छी पन्द्रह टाका मात्र बाँचल अछि। पाँच टाका द' देबनि तँ बाँचल मात्र दस टाका आ मास दस दिन आर.....

आइ द' दिय' बाल-बच्चा लेल आँटा किनने जायब...हमर माथा पर स्रज द' ओकर स्वर लागल। उठा क' पाँच टाका द' देलहुँ। मोन पड़ि आयल

मचीस ताका ई माँगने छलाह भीर खन। मोनमे किछु ठहार भेल कोहुना मिला चुना क' अमावस्याक दिन काटिये लेब— हमर मोन पुनः हल्लुक भ' सिमरक तुर जकाँ मुक्त पवन-संग बिहरय लागल।

सभ बच्चा जलखइ क' खेलबाक लेल चलि गेल। डाइ'गुरुममे आइ ई असगरे रहबि। बातावरण सदैव छल, कोनो चौकड़ी नहि, कोनो फिलाँसफी नहि, कोनो बायलॉग नहि, मुदा हिनक चेहरा भावशून्य छल।

—की बात छैक ? आफिसमे किछु भेल की ? मोन बड़ उदास अछि।

—कोनो बात नहि शिवा। ओहिना थाकि गेल छी।

—बाहू बना दी की ?

—'बाहू' !...एकबेर हँसैत बजलाह।—अहाँ अपनाकेँ मारु शिवा ! हमरा कसि विष'।

—छी, की बजैत छी ? हम एक गिलास नेबो-पानि हुनका आगू राखि देत छी।

—'एकटा बात बाजी ?'—हम हँसिते-हँसिते कहलहुँ। हिनक दृष्टि हमर चेहरा पर गड़ि गेलनि—

'अहाँक संगे किछु टाका अछि ?

नहि अछि की बात थिक ? हिनक स्वर विचित्र छल। ओना एकटा 'माइनरजी' हिनको अछि जे दोस्त सभक समक्ष एक दम रोमान्टिक मूडमे, एक-दम सहज रहैत छलाह, असगर हमरा लग ? सँस संसारक 'टेंशन' हमहीं भ' जायत छलहुँ—दूधवालीकेँ टाका देबाक अछि। आब दस टाका.....

मुँहक बात मुँहे रहल।

—सभटा टाका खतम भ' गेल, बाप रे। दस दिन धार एहि मासक बाँकी अछि। ओना चलत ? कि भ' जाइत अछि टाका सभ ? हमरा संग किछु नहि अछि ? अहाँ जानू—आ ई अपन पयर पटकैत घरसँ विदा भ' गेलाह बड़बड़ाइत।



आ तखन हमरा मोनमे अपन सभटा फिलॉस्फी सभ डायलॉग सभ भाषण, सभ सिद्धान्त मुँह दूसैत नेना सन लागल । हम अपना लेल नहि, घरेमे खर्च करैत छी.....टाका हुनकर जेबमे ओहिना छल—एखन... हम अपन प्रतिवाद अपने भ' गेलहुँ । हमर हृदयक अन्तरतमसँ जेना प्रतिरोधक एकटा चीत्कार क्षण भरि लेल उठल—स्त्रीक आर्थिक स्वाधीनता अत्यावश्यक...जाहिसँ एक-एक पाइ लेल ओकरा मर्दक मुँह नहि ताक' पड़ैक । आर्थिक स्वाधीनता—ओह ! पराधीन सपनहुँ सुख नाही.....रोम-रोमसँ प्रतिरोध उठ' लागल ।

